विश्व के महान
वैज्ञानिक उपन्यास

विश्व के महान वैज्ञानिक उपन्यास

शक्ति कुमार त्रिवेदी

ज्ञान गंगा, दिल्ली

प्रकाशक ज्ञानगंगा २०५-सी, चावड़ी बाजार, दिल्ली ११०००६
संस्करण १९९० मूल्य पचास रुपये

VISHVA KE MAHAN VAIGYANIK UPANYAS
Ed Shakti Kumar Trivedi Rs 50.00

दो शब्द

आज विज्ञान का युग है। विज्ञान तो पहले भी था, पर आज मानव ने उसे एक निश्चित क्रियात्मक रूप दे दिया है। हम दैनिक कार्यकलापों में जन्म से मरण तक विज्ञान के अनेक पक्षों से गुजरते हैं। आज हमारे भाँति-भाँति के कौतूहलों को तृप्त करने में विज्ञान ही सक्षम हो रहा है। इसी के बल पर हम चन्द्रमा पर उतरे और मंगल व शुक्र ग्रह की खोज भी कर सके। इसके अद्भुत प्रयोगों से प्राप्त सफलताओं ने हमें नित नये संकल्प दिये। विज्ञान की इन्हीं चमत्कारिक गतिविधियों ने हमारे कवि, लेखक और उपन्यासकारों को कल्पना की नई-नई सचेतनाएँ दीं और उन्होंने अद्भुत रचनाओं का सृजन किया।

विश्व के महान वैज्ञानिक उपन्यासों के हिन्दी रूपान्तरण इस पुस्तक में प्रस्तुत हैं। सात विश्व विख्यात उपन्यासकारों की वैज्ञानिक कथाओं पर आधारित कृतियाँ—जो रहस्य, रोमांच, विज्ञान, भूगोल, भौतिक, रसायन-शास्त्र और अन्य अनेक विधाओं से जुड़ी हैं—इस संकलन में चुनी गई हैं। इस छोटे-से कलेवर में गागर में सागर भरने का प्रयत्न किया गया है।

१९वीं शताब्दी में यूरोप और अमेरिका के अनेक प्रतिभासम्पन्न वैज्ञानिकों, विद्वानों, लेखकों तथा गम्भीर विचारकों ने जीव विज्ञान, नौसेना-विज्ञान, शास्त्र-विज्ञान, रसायन विज्ञान और अन्तरिक्ष विज्ञान से सम्बन्धित खोजों की विकट समस्याओं पर आधारित अनेक रोचक, रोमांचक व कौतूहलपूर्ण उपन्यास लिखे। प्रकाशित होते ही ये उपन्यास प्रसिद्धि की

चोटी पर पहुँच गये। आज भी पाठकों के बीच इनकी छवि और महत्ता ज्यों-की-त्यों बनी है। फ्रांस के प्रसिद्ध लेखक जुले वर्न अपने समय के विख्यात अन्वेषी और वैज्ञानिक सूझ-बूझ के कथाकार थे। उनका उपन्यास 'फ्रॉम अथ टू द मून' की जितनी प्रतियाँ छपती, हाथों-हाथ बिक जाती। मानव जब चन्द्रमा पर पहुँचा तो जिन सिद्धान्तों और परिभाषाओं का इस उपन्यास में प्रतिपादन हुआ था, और जो कल्पनाएँ की गई थीं, ज्यों-की-त्यों सच हुईं। जुले वर्न के 'चाँद का चक्कर', 'पुच्छल तारे पर दो वर्ष', 'पृथ्वी के गर्भ में' तथा 'रहस्यमयी द्वीप' के सार को प्रस्तुत संस्करण में जोड़ दिया गया है।

जीव-विज्ञान विषय के ख्याति प्राप्त अंग्रेजी उपन्यासकार एच० जी० वेल्स का नाम वैज्ञानिक कथा साहित्य में अमर है। आज हर भाषा का कथा-पाठक उन्हें जानता है। उनके उपन्यास द वार ऑफ द वर्ल्डर्स', 'फुड ऑफ गॉड्स' तथा 'इनविजिवल मैन' लाखों की संख्या में बिके। विश्व की लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में इनका रूपान्तरण हुआ। वेल्स की ये कृतियाँ १६वीं शताब्दी के श्रेष्ठतम उपन्यासों में से हैं, जिन्हें पाठक एक बार शुरू करके खत्म किये बिना नहीं रह सकता।

अंग्रेजी के विख्यात कवि शली की पत्नी मेरी डब्ल्यू शैली ने भी रसायन-शास्त्र पर एक काल्पनिक उपन्यास लिखकर विज्ञान-साहित्य में खलबली मचा दी थी। फ्रेंकेन्स्टीन (पिशाच का प्रतिशोध) पिशाच की काम-वासना पर आधारित एक भयावह मगर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखा गया रोचक उपन्यास है।

गार्डनर एफ० फाक्स अमेरिका के प्रसिद्ध उपन्यासकार हुए हैं। उनके उपन्यास 'द क्वीन ऑफ शेवा' ने विश्वभर में धूम मचा दी थी। इसी उपन्यास में ईसा के कई शताब्दी पूर्व का इतिहास है, जिसमें वैज्ञानिक-धनुष के बल पर इजरायल के सम्राट सुलेमान ने शेवा की रानी से मिलकर विश्व विजय का सपना संजोया था। शस्त्र विज्ञान पर आधारित यह उपन्यास इतिहास, भूगोल और रोमांच से भरपूर है। कहानी धनुष की खोज से

आरम्भ होकर धनुष से लडे गए युद्ध के साथ समाप्त होती है। इसी दृष्टि से वैज्ञानिक तथ्यो पर आधारित इस महान् रोमांचक और भौगोलिक उपन्यास को 'वैज्ञानिक धनुष' के नाम से सकलित किया गया है।

यदि हम विश्व के पाँच श्रेष्ठ उपन्यासकारों का नाम सोचें तो उनमें १९वीं शताब्दी के महान् फ्रांसीसी उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो का नाम सहसा मस्तिष्क में आ जाता है। विक्टर ह्यूगो उस शताब्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार थे। उन्हें अपने मौलिक व क्रान्तिकारी विचारो के कारण गुर्नेसी टापू में वर्षों का निर्वासन भोगना पडा था। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'टायलर्स ऑफ द सी' में एक गरीब मछुआरे को भयकर समुद्र में खडी दो नृशस चट्टानो से सघर्ष करने मे सफल दिखाया गया है। लगभग आधा उपन्यास तो नौका अभियन्त्रण विज्ञान से ही भरा हुआ है। इसी दृष्टि से इस कृति को सग्रह में लिया गया है। वैज्ञानिक सघर्ष की कहानी अन्त में दुखान्त होकर समाप्त होती है और पाठको के हृदय पर गिलियात के अलौकिक त्याग और प्रेम की अमिट लकीर खीच देती है।

ब्रिटेन के लेखक सर आर्थर कॉनन डॉयल पेशे से स्वय डाक्टर थे और उपन्यास लेखन के भी शौकीन थे। उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'हौंडस ऑफ द वास्कर विल' का हिन्दी रूपान्तरण 'घाटी का रहस्य' नाम से सकलित है।

नेपोलियन बोनापार्ट के जमाने से प्रसिद्ध फ्रासीसी लेखक एलेक्जेंडर ड्यूमा के प्रसिद्ध उपन्यास 'काउन्ट ऑफ मांटे क्रिस्टो' को हमने यहाँ 'प्रतिशोध' नाम देकर जोडा है। अत्यन्त आस्तिक प्रवृत्ति पर आधारित यह उपन्यास रसायन व चिकित्सा-विज्ञान के दृष्टिकोण से लिखा गया है।

इस प्रकार प्रस्तुत सकलन में हम विभिन्न माटी से जुडे शीर्षस्थ लेखको के विख्यात उपन्यासो का कथासार प्रस्तुत कर रहे हैं। विश्वास है कि हिन्दी कथा-साहित्य के सुधी पाठकों को ये कृतियाँ आत्मविभोर करेंगी।

—शक्ति कुमार त्रिवेदी

क्रम

प्रतिभा के धनी विक्टर ह्यूगो ने १६ वर्ष की आयु में ही राष्ट्रीय कविता लिखकर ख्याति के अंकुर सजो लिए। २५ वर्ष के होते होते ह्यूगो युवा लेखक के रूप में फ्रांस भर में विख्यात हो गए। उनकी ख्याति उनकी आयु के साथ बढ़ती ही गई और १८८५ में जब उनकी मृत्यु हुई तो वे ८३ वर्ष के थे, मगर उनकी अर्थी के पीछे इतना जनसमूह था कि फ्रांस में उस शताब्दी में किसी की अर्थी के पीछे भी इतनी भीड़ न थी। यह था उनकी शताब्दियों तक चलनेवाली ख्याति का एक प्रमाण।

विश्व के महान लेखकों में श्री ह्यूगो आज भी जीवित हैं। अटपटी घटनाओं और भावनाओं के १९वीं सदी के लेखकों में उनका तीसरा स्थान है। वाल्टर स्कॉट लार्ड बायरन की भांति वे प्रसिद्ध रोमानी लेखक माने जाते हैं। कहानीकार, कवि, नाटककार और उपन्यासकार—वे क्या कुछ नहीं थे !

इस प्रतिभा का जन्म १८०२ में फ्रांस में हुआ। २० वर्ष की आयु में बचपन की प्रेमिका फॉसर से विवाह किया और १८२७ में 'क्रामवेल', नाटक पर भारी ख्याति अर्जित की। १८३१ में हचबैक आफर नात्रे दम' लिखकर उन्होंने विश्व के महान लेखकों में अपना स्थान बना लिया।

नेपोलियन तृतीय के तानाशाही व्यवहार के प्रति उपेक्षा प्रकट करने पर उन्होंने फ्रांस छोड़कर गुर्नसी टापू में १६ वर्ष बिताए और वहीं अपने जीवन की श्रेष्ठ और प्रिय रचनाएं रचीं। गरीब और शापितों के समाज के अन्याय के प्रति खाका खींचनेवाला उपन्यास 'ला मिज़रेबुलस' मानव के निर्दय व्यवहार की कहानी—'द मैन हू लाफ्स', तथा समुद्री संघर्ष की वज्ञानिक कहानी 'टायलस आफ द सी' इन्होंने इसी निर्वासन में लिखी। १८७० में नेपोलियन के पतन के साथ ही इनके सार्थक अनुयायियों ने इन्हें फ्रांस वापस बुला लिया। इस पुस्तक में इनके प्रसिद्ध उपन्यास 'टायलर्स आफ द सी' का रूपांतरित 'सार-संक्षेप' 'सागर मंथन' प्रस्तुत है।

सागर-मथन

१६वीं सदी मे यौवन के उफान के ससार के सबसे बड लेखकों म से विक्टर ह्यूगो एक हैं जिन्होंने अपने निर्वासन काल मे ब्रिटिश गुनसी टापू म रहकर मानव की भावनाओं को छूने वाले तीन महान उपयास लिखे। 'सागर मथन' उन्हींमे से एक समाजो वज्ञानिक उपयास है—जिसमे नायक गिलियातने अपनी प्रयसी को पाने के लिए समुद्र से सघष किया। इस उपयास म समुद्र विज्ञान और जलयान विज्ञान के बारे मे बडी बारीक जानकारी दी गई है। उपयास की जान इस क्लाइमक्स' मे है कि नायक अपनी वज्ञानिक और साहसिक सफलता के बाद अपनी घोषित मगतर 'डरूशी' को ग्रहण करने से इ कार कर समुद्र मे जल समाधि ले लेता है और उस बेवफा प्रमिका को उसी यनित से विवाह करने क लिए स्वर्णिम अवसर छोड देता है जिसे वह चाहती थी। मानव पक्ष क साथ साथ विज्ञान क सभी पहलुओं का निर्वाह करते हुए लेखक ने मानवीय भावनाओं का रस उपयास मे जम कर छुआ है।

—सम्पादक

इग्लिश चैनल म गुनसी टापू स १७ मील दूर समदर म दो चट्टानें थी, जिनका नाम डोवस था। इन दोना चट्टानों के बीच म सकरा सा रास्ता भी था। इसम समुद्र की लहरें एक ओर से दूसरी ओर झपटती रहती थीं। बडी चट्टान का नाम मान था। इनके बीच कइ छोटे जहाज और नाव कम कर नष्ट हो चुके थे। सन् १८२० ई० की बात है। उस समय यूरोप म भाप से चलनेवाले जहाज और छोटी छोटी नावा का आविष्कार हुआ ही था।

फ्रास के सेंट् मार्लो और गुनसी द्वीप के बीच छोटे-छोटे जहाज चला करते थे। इन सभी जहाजों को हिदायत थी कि वे डोवस चट्टानो से बचकर जाए। कई बार ज्वार आते समय मुसाफिरो को ये चट्टानें समुद्र मे डूब जाने के कारण बिल्कुल भी नही दिखती थी और हर साल कोई न कोई दुर्घटना हो जाती थी।

क्रिसमस की रात थी। आधी रात से भोर तक गुनसी टापू पर खूब बरफ पडी। सुबह के नौ बज रहे थे। लेकिन सूर्य का आकाश मे कहीं पता न था। चारो ओर बर्फ ही बर्फ दिखती थी। झील के किनारे-किनारे रास्ते पर एक युवती और कुछ फासले पर एक आदमी चले जा रहे थे। बलूत के पडो के पास वह युवती रुक गई और जमीन से बर्फ के ढेले उठाने के बहाने पीछे मुडकर देखने लगी।

उसे झुकते हुए देखकर पीछे-पीछे आने वाला आदमी भी ठिठक गया। वह देखने लगा कि यह युवती अब क्या करती है। उस आदमी ने देखा यह युवती और कोई नही मिस्टर लैथायरी की भतीजी डेरूशी है। वह उठकर आगे चल दी। बर्फ पर उसके पैरो के निशान साफ थे। वह आदमी भी उसी रास्ते पीछे-पीछे हो लिया। जहा वह बलूत के पेडो के पास रुकी थी वहा उस आदमी ने बर्फ पर कुछ लिखा हुआ देखा। बर्फ पर 'गिलियात' लिखा देखकर वह चौंक पडा। आखिर उस लडकी ने मेरा नाम क्यो लिखा! वह वही खडा होकर बार-बार अपना नाम पढने लगा। इतनी देर मे डेरूशी बहुत दूर निकल गई और गिलियात उसीके ख्यालो मे खोया-खोया अपने घर की ओर लौट पडा।

गिलियात एक गरीब मछुआ था। वह समुद्र के बीच मे उठी हुई चट्टानो पर कुटिया बनाकर एक अर्से से रह रहा था। बचपन में ही उसकी मा मर चुकी थी और युवा होने पर भी अभी तक उसका विवाह नही हुआ था। वह अकेला ही समुद्र के किनारे मछलिया पकडकर गुजारा करता था।

समुद्र के बीच मे बनी चट्टान पर गिलियात का घर था। इसी चट्टान से थोडी दूर पर एक और चट्टान थी जो पानी के कटाव के कारण एक कुर्सी की शक्ल में छट गई थी। जब समुद्र मे ज्वार आता तो चट्टान की कुर्सी

पानी मे डूब जाती थी और ज्वार उतरते ही कुर्सी फिर उभरने लगती।

गुनसी मे लैंथायरी उस जमाने की भाप से चलनेवाली पुरानी नौका का मालिक था। इस नौका को स्टीमबोट कहते थे। लैंथायरी की स्टीम बोट (छोटा जहाज) फ्रास के सेंट मार्लो टापू से गुनसी टापू तक सवारिया और माल ढोया करता था। १९वी सदी मे भाप से चलने वाली इस नौका का पहला ही आविष्कार हुआ था। गुनसी टापू के लोग इस जहाज का दूर से देखकर 'राक्षसी नौका' कहकर चिल्लाते थे। इस नाव का आविष्कार फुल्टन ने किया था और लैंथायरी ने किसी तरह कर्जा लेकर इस नाव को खरीद लिया था। लैंथायरी ने अपनी भतीजी कुमारी डेरूशी डयूरड के नाम पर ही इस नौका का नाम रख दिया था। रैत भी इस नौका व्यवसाय मे लैंथायरी का साझीदार था। दोनो मे बडी दातकाटी रोटी थी।

गिलियात ने जब से डेरूशी को बफ पर उसका नाम लिखते देखा, उस उससे इतनी मोहब्बत हो गई कि वह चादनी रात मे घटा तक समुद्र के किनारे उसके ख्याला मे डूबा लहरा को गिनता रहता। कई बार वह खिडकी मे बठी डेरूशी की झलक लेने के लिए उसके घर के आसपास छुप छुपकर चक्कर लगाता। उसे एक ही गम था कि वह कितना गरीब है और डेरूशी कितनी धनी है। एक दिन वही इस छोटे जहाज—डयूरेंड की मालिक होगी। वह इसी सोच मे डूबा रहता और डेरूशी को अपना बनाने के ख्वाब देखता रहता।

चार साल बीत गए। अब वह इक्कीस साल की हो गई थी। उसके चाचा ने देखा खिडकी के बाहर गिलियात बैगपाइप पर 'बौनी डडी' नामक लोकगीत की धुन बजाकर डेरूशी को लुभाना चाहता है। मगर लथायरी समझा नही कि गिलियात क्या चाहता है।

एक दिन समुद्र मे ज्वार आ रहा था। गिलियात ने देखा एक आदमी चट्टानी कुर्सी पर बैठा ऊघ रहा है। वह दौडता हुआ वहा गया और उस उसकी मछली पकडने की छोटी नाव म पकडकर खीच लाया। इस तरह गिलियात ने उसकी जान बचा ली। थोडी ही देर म ज्वार आ गया और कुर्सी डूब गई।

"कौन हो तुम ? यहां क्या बठे थ ?" —गिलियात ने पूछा।

"मैं खैरेंड कोदरे हू। अभी इगलैंड से आ रहा हू। थककर सो गया। मुझे लैथायरी के घर जाना है। मैं उनका ही मेहमान हू। तुमने मेरी जान बचा ली।'—यह कहकर कोदरे ने गिलियात की ओर हाथ बढा दिया।

"कोई बात नही।" तुम लैथायरी के घर पहचो। मैं अब चलता हू।" यह कह गिलियात चल दिया।

इन दिनो क्लबिन नाम का युवक ड्यूरैंड का कप्तान था। उसने एक बार लैथायरी को सुझाया कि रैंते ठीक आदमी नही है। उसकी बात सच ही निकली और एक दिन रैंत लैथायरी के ५०,००० फ्रैंक लेकर भाग गया।

सेट मार्लो द्वीप मे क्लबिन ने ६ लुइस देकर एक पिस्तौल खरीद ली थी। इसे अमरीका से एक आदमी चोरी से ले आया था। दूसरे दिन दोपहर को फ्रासीसी समुद्र तट पर कुछ सिपाही पहरा दे रहे थे। क्लबिन उधर ही निकल गया। सिपाही ने देखा दूर चट्टान के पास एक जहाज छिपा खडा है और नाव तेजी से किनारे की ओर आ रही है। इतने मे ही एक आदमी हरा लबादा ओढे चुपके से आया और उसने सिपाही को दूरबीन समेत चट्टान से समुद्र मे धकेल दिया। अब हरे लबादेवाला आदमी तेजी से उल्टे पैर भागने लगा।

यह आदमी और कोई नही रैंते ही था। वह चोरी से चिली भाग रहा था और नाव उसीको लेने आ रही थी। सामने से आवाज आई—"ठहरो। तुम भाग नही सकते। तुमने अभी-अभी गार्डमैन का खून किया है।"

रैंते घबरा गया। वह क्लबिन पर झपटने ही वाला था कि क्लबिन ने पिस्तौल निकाल ली। "खबरदार। याद रखो, अगर मैंने गोली चला दी तो चौकी के सिपाही एक मिनट मे तुम्हे गिरफ्तार कर लेंगे और तुम भाग नही सकोगे।"

"आखिर तुम चाहते क्या हो ?" रैंते काफी घबरा गया था।

"सुनो, आज से दस साल पहले तुम लैथायरी के ५०,००० फ्रैंक चुराकर भागे थे। अब तुम्हारे लोहे के डिब्बे मे पूरे ३,००० पौंड हैं। ये मेरे हवाले करो और भाग जाओ। मैं तुमसे और कुछ नहीं चाहता।' क्लबिन बोला।

एक क्षण मे ३००० पौंडो वाला लोहे का डिब्बा क्लबिन के पैरो में आ गिरा और रंते बडबडाता हुआ भाग निकला—"यह सरासर डकती है। मैं लैथायरी को चिट्ठी लिखूगा कि मैंने सारा रुपया तुम्हे दे दिया है।" यह कहते-कहते वह नाव मे बैठकर चट्टान के पीछे छिप जहाज की ओर भाग गया।

उस जमाने मे डाक का कोई व्यवस्था न थी। एक टापू से दूसरे टापू म आने जानेवाले जहाज ही चिट्ठिया ले जाते थे। क्लबिन ने सोचा कि वहा मेरा मालिक लैथायरी मुझे चोर या दगावाज न समझे। उसने पहले गुनसी टापू चलने की ही ठानी और अपनी स्टीमबोट मे गुनसी के लिए सवारिया भर ली।—' सेलर टैंगोइल, कल सुबह होते ही गुनसी चलना है।"

'मगर कल तो भयानक कोहरा छाया रहेगा। हम वहा तक कस पहुचेंगे ?" सेलर ने कहा।

'कुछ भी हो। हमे चलना ही होगा।"—क्लबिन ने हुक्म दिया। दोना ने ब्राडी पी और सो गए।

सुबह छ सवारिया और कुछ मवेशी लेकर ड्यूरेंड नोका गुनसी की ओर चल पडी। आधी दूर पहुचने पर आकाश मे घटाए उमडती दिखने लगी। क्लबिन चिल्लाया—'जहाज को पूव की ओर मोड दो। सेलर शराब पिए हुए था। वह बराबर पश्चिम की ओर बढे जा रहा था। कुछ ही क्षणो मे ड्यूरेंड कुहरे के बादलो के पास पहुचने लगा। तेज स्टीम (भाप) देने पर भी जहाज पश्चिम की ओर बढ रहा था। सवारिया और कप्तान क्लबिन को भारी चिन्ता होने लगी।

दिन डूब चुका था। अब जहाज हैनवे की चट्टाना के पास था। गुनसी यहाँ से काफी दूर था। कप्तान फिर चिल्लाया—'शराबी, तूने जहाज को धीमे चलाकर मुसीबत खडी कर दी। अगर दुघटना हो गई तो तुझे जेल मे जाना पडेगा।'—उसने झपटकर सेलर को हटा दिया और जहाज को खुद चलाने लगा।

इतने मे ही कुहरे के बीच एक सूय की किरण-सी चमकी और एक सवारी भागी हुई कप्तान के कमरे में आई—' कप्तान जहाज को मोड दो सामने भयकर चट्टान है।' कुहरा फिर घिर गया। कप्तान ने घबराकर

खतरे का भोंपू बजा दिया। ड्यूरेंड से रक्षा-नावें समुद्र में उतरने लगी। वास्तव में कुछ दूरी पर दो चट्टानें अडिग खड़ी थी।

कुछ ही क्षणों में जीवन रक्षक लम्बी नौका ड्यूरेंड से समुद्र में उतार दी गई। सभी सवारियों को उसमें बिठा दिया गया। चट्टान लगभग करीब आ रही थी। सभी लोग नौका में बैठकर चलने लगे। लेकिन क्लबिन ने ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ कप्तान के नाते ड्यूरेंड को छोड़ने से इनकार कर दिया और दुर्घटना में जान गवाने की ठान ली। नौका सभी यात्रियों को भरकर आगे चली गई।

क्लबिन ने इस समय बड़ी चालाकी की। वह सोच रहा था कि जहाज के नष्ट होने के बाद लोग समझेंगे कि क्लबिन मर गया और मैं यहां से रैंते की तीन हजार पौंड की राशि लेकर अमरीका भाग जाऊंगा। थोड़ी ही देर में ड्यूरेंड चट्टान से टकराने लगा। एक ही तूफान के झोंके ने ड्यूरेंड को दो चट्टानों के बीच में उठाकर फेंक दिया और जहाज टूटकर बिखर गया। क्लबिन पौंडों को कमर में चमड़े की पेटी में बांधकर समुद्र में कूद पड़ा और चट्टान पर चढ़ने लगा। ज्योंही वह चट्टान पर चढ़ रहा था, उसे लगा किसी चीज ने उसका पैर कसकर जकड़ लिया है। किंतु यह चट्टान वही डोवस थी जो गुनसी टापू से कुछ दूर समुद्र में खड़ी थी।

दूसरे दिन गुनसी में उदासी छा गई। ड्यूरेंड का मालिक लैथायरी बरबाद हो गया। नाव की सवारियां और सेलर ट्रैंगोइल ने आकर लैथायरी को खबर सुनाई। सेलर को जहाज को शराब पीकर चलाने के जुर्म में जेल भेज दिया गया। लैथायरी ने सोचा कि यदि ड्यूरेंड दो चट्टानों के बीच में अटका है तो कदाचित् उसका इंजन जरूर बच गया होगा और इंजन ही जहाज की जान है।

लैथायरी के सामने अब एक ही सवाल था कि छोटी नौका ले जाकर कोई बहादुर उसके जहाज के इंजन को डोवस चट्टानों के बीच से सही-सलामत निकाल लाए। उसने चारों ओर देखा—है कोई ऐसा बहादुर ?' डेरूशी रो पड़ी। उसने कहा—"जो भी बहादुर मेरे चचा के जहाज के इंजन को निकाल लाएगा—मैं उसीसे शादी कर लूंगी।" यह कहकर वह सिसक पड़ी।

गिलियात भीड को चीरता हुआ सामने आया। "क्या तुम सचमुच उसी आदमी से शादी कर लोगी ?"

"हा, मैं वादा करता हू कि डरूशी की शादी उसी आदमी से होगी।" —यह कहकर लथायरी ने अपनी टोपी हवा मे उछाल दी।

इतने मे ही कोदरे भी लथायरी को सहानुभूति दिखाने आया। लथायरी चुप था। कोदरे डेरूशी को प्यार करता था। उसने अलग हटकर डरूशी की ओर देखा। दोनो ने एक दूसरे की आखो मे आखें डाली और अलग अलग हो गए। लथायरी के दुख को कोई न बाट सका।

उसी रात कुछ औजार और अपनी नौका लेकर गिलियात डोवर्स चट्टानो की ओर चल दिया, जहा लैथायरी का टूटा हुआ जहाज डयूरेंड फसा हुआ था। गिलियात ने अपनी नौका चट्टान के चारो ओर घुमाई। उसने देखा डयूरेंड समुद्र के पानी से २० फुट की ऊचाई पर दो चट्टानो के बीच म फसा है। इजन ज्यो का त्यो ह। बाकी जहाज का डेक, उसका फर्नीचर कमरे, पाल और बॉडी टूट फूट चुकी है। चिमनी से लेकर प्रोजक्शन तक और इजन भी जहाज के बीच मे एक दम ठीक है।

डोवर्स से ४० ५० फुट की दूरी पर इसी चट्टान का एक भाग मान चट्टान कहलाता था। गिलियात ने अपनी नाव वही बाध दी। ज्वार उतरने पर डोवस स मान चट्टान तक पैदल पहुचा जा सकता था। ज्वार उतरते ही गिलियात ने औजार निकालकर इजन को तख्ता के बीच म से काटकर सही सलामत निकालने का काम शुरू कर दिया।

इस समय वहा दूर दूर तक कोई न था। समुद्र की छाती पर गिलियात सूरज की रोशनी म दिनभर काम करता और शाम को थककर कभी मान और कभी डोवस चट्टान पर सो रहता। पहली रात उसे बडी ठड महसूस हुई और वह सोने के लिए कोई ठीक-सी जगह खोजने लगा। उसने डयूरेंड की छोटी चट्टान स बडी चट्टान पर नावो की मोटी रस्सी फेंककर बडी चट्टान तक पहुचने का रोजाना का रास्ता बना लिया था। बडी दौडधूप के बाद किसी तरह गिलियात डोवस की बडी चट्टान पर पहुच गया। चट्टान पर एक गुफा जैसा गहरा गड्ढा भी था। इसको साफ करके गिलियात ने रहने के लिए जगह बना ली। इसी गुफा के पास एक छोटा

मा झरना चट्टान को फोडकर बहता रहता था। इसका पानी पीकर उसे ताजगी आ गई। बड़ा मीठा पानी था। खारे समुद्र की छाती पर खडी



समुद्र से संघर्ष करते हुए गिलियात

चट्टानो मे मीठा पानी निकल रहा था। भगवान की कुदरत को उसने बार बार सराहा।

कुछ समुद्री चिड़ियाए अपने पख फडफडा रही थी। गिलियात ने देखा सवेरा हो चुका है। उसकी खाने की टोकरी गायब थी और चिड़ियाए उसके खाने को छीनने के लिए एक-दूसरे मे लड़ रही थीं। वह कई दिन तक बिना खाए ही रहता रहा। अन्त में चट्टान पर चढनेवाली मछलिया और समुद्री केंकडो को उसने अपनी खुराक बना लिया। अब चट्टान की यह गुफा ही उसका घर था और ड्यूरेंड उसका कारखाना। यहा वह दिनभर काम करता रहता था।

उसने ड्यूरेंड की पट्टिया निकालकर चट्टान के बीच में आडी फिट कर दीं। इनमे रस्सी के साथ घूमनेवाले पहिये लगा दिए, ताकि चार पट्टिया मे रस्सिया बाधकर ड्यूरेंड की भारी मशीन को बाधकर नाव तक लटकाया जा सके। इस काम को करने मे उसे करीब एक महीना लग गया। मौसम की मार और तकलीफें सहते-सहते उसका शरीर काला पड गया। इसी बीच कितनी ही समुद्री आधिया चलीं, भयकर वर्षा हुई, तूफान आए, चट्टान से टकराकर लौटनेवाले ज्वारभाटे तो अक्सर आते ही रहते थे। मगर उसने यह साबित करके दिखा दिया— हिम्मते मरदा मददे खुदा। जब आदमी हिम्मत करता है तभी खुदा भी उसकी मदद करता है।'

एक दिन गिलियात ने देखा कि मीठे पानी का चट्टान का सोता सूख चुका है। वह घटो प्यासा तडफता रहा। आखिर उसने देखा चट्टान के एक कोने पर नीले पखावाली एक चिड़िया पानी पी रही है। एक छोटे से गडढे मे बरसाती पानी था। चिड़िया के हटते ही चुल्लू भर-भर कर गिलियात ने पानी पिया और थोडे-से पानी से प्यास बुझा ली। दूसरे दिन तेज बरसात हुई और चट्टान के मीठे सोते फिर खुल गए। महीनों बीत गए। गिलियात के कपडे फट गए। दाढी बढ गई और शरीर थककर चकनाचूर हो चुका था। फिर भी गिलियात डेरूशी की कल्पना मे अपने पूरे साहस और शक्ति से काम कर रहा था उसका मन बार-बार कहता— मैं प्रकृति के झझावातों के आगे हरगिज नही झुकूगा और एक दिन अपनी जवानी के ख्वाब को पूरा करके ही रहूगा।'

अप्रैल का आखिरी दिन था। अब थोडा-सा काम और बाकी था। इजन जहाज की बॉडी से काफी अलग हो चुका था। उसे मजबूत तारो से कस कर बाधना था और ऊपर की पट्टियो मे लगी घिर्रियो मे कसना था। उसने यह काम खत्म करके मान चट्टान पर खडे होकर देखा। अब केवल इजन को अलग करके नाव मे उतारने भर की देरी थी।

ज्वार उतर चुका था। उसने नाव को ड्यूरेंड के नीचे लगा दिया। अब गिलियात ने पैडलो को धीरे-धीरे घुमाया और घिर्रियो मे इजन नीचे लटकने लगा। धीरे-धीरे इजन नाव की सतह पर आकर ठहर गया और उसकी मेहनत सफल हो गई। अब इजन को आसानी से नाव मे रखने के बाद गिलियात ने जजीरो को रेती से काटना शुरू कर दिया ताकि इजन पूरी तरह नाव मे रह जाए और जजीरें अलग हो जाए। इजन को निकालने की अभियत्रण कला मे उसका प्रयोग पूरी तरह सफल रहा। इजन के हटते ही टूटे हुए जहाज के तख्ते इधर-उधर समुद्र मे गिरने लगे और अब जहाज (ड्यूरेंड) सिवाय ढाचे के और कुछ भी न था।

इस प्रयोग मे सबसे बडी कामयाबी तो यह थी कि ड्यूरेंड का इजन ही नही बल्कि चिमनी तक भी ज्यों की त्यो सीधी नाव मे इजन के साथ ही आ गई। वह स्वय इस सफलता को देखकर बडे अचरज में था। आखिर यह असभव सभव कैसे हो गया ! ज्वार फिर आया और नाव जहाज के इजन के बोझ से डगडमाकर ऊपर उठने लगी और चिमनी जहाज के ढाचे मे फटी हुई जगह मे फिर घुस गई। लेकिन अब गिलियात निश्चिन्त था। उसने थककर एक नीद लेने की सोची और नाव मे ही लेट गया।

जब वह जागा तो ज्वार उतर चुका था। नाव काफी भारी हो चुकी थी। उसने नाव को मान और डोवर्स चट्टानो के बीच मे लगाने से पहले तख्तो की एक बाड-सी बना दी जो पानी के तेज उफान को रोकती थी। इसी बाड के सहारे नाव खडी कर दी और वह मौसम देखने के लिए डोवर्स की दूसरी ऊची चोटी पर चढने लगा।

उसने देखा क्षितिज पर बादल घिर रहे हैं। सूरज छिपने वाला है। धीरे धीरे तेज वर्षा शुरू हो गई। तूफान आ गया। उसने मन मे सोचा— मैंने अच्छा किया जो पानी की रोक बना दी, वरना मेरी नाव और इजन

इस तूफान मे कही के कही पहुच जाते। पानी की ऊची ऊची दीवारें तूफान मे उठती और बनाई गई बाड से टकराती। बार-बार नाव इधर-उधर कापती और डूबते डूबते रह जाती। काफी रात ऐसे ही बीत गई। आखिर किसी तरह नाव डूबते-डूबते बच गई। लेकिन डोवस का बचा हुआ भाग तूफान म टुकडे टुकडे होकर नष्ट हो गया।

सुबह होने लगी। आकाश मे एक चमकते हुए छिलके की तरह सूरज चमका। उसे ऐसा लगा जैसे उसके जीवन की सारी आशाएँ एक साथ मुस्करा रही हो। तूफान उतर चुका था। भगवान ने कृपा की और उसे और उसकी महीनो की असाध्य मेहनत को बचा लिया। मेहनती आदमी की भगवान जरूर मदद करता है। यही विचार उसके मन मे घूम रहा था।

अब गिलियात को बडी तेज भूख लगी थी। वह हाथ मे शिकार का तेज छुरा लेकर मान चट्टान पर केकडे ढूढने के लिए निकल पडा। ज्वार फिर आया और मान चट्टान की गुफा और खदक पानी से भर गए। ज्वार उतरा तो एक खदक म केकडे की पूछ-सी उसे नजर आई। वह तेजी से दौडकर उसे पकडने लगा। जैसे ही उसने उसे पकडा, एक दूसरा लम्बा हाथ उसके हाथ से लिपट गया। अब गिलियात के एक हाथ को पूरी तरह किसी जीव का हाथ कस रहा था।

उसन ताकत लगाई तो गुफा से बाहर एक विशाल मछली जिसके अनेक हाथ थे, बाहर आने लगी। यह थी आक्टोपस।

गिलियात न तेज छुरे से मछली का अग काट दिया। खून बहकर समुद्र म गिरने लगा। उसने कई मिनट तक बराबर उस मासल ओक्टोपस मछली पर छुरे के वार किए और उसके फैलनेवाले हाथ और धड के टुकडे-टुकडे कर दिए। मछली कटकर समुद्र मे गिर गई। सघर्ष का अत हुआ और गिलियात ने चैन की सास ली।

उसने मुडकर उस खदक मे देखा। एक आदमी का अस्थिपजर पडा हुआ उसे साक्षात् मृत्यु का सन्देश दे रहा था। आदमी का पूरा ढाचा। उसने पास म देखा उसकी कमर की हड्डियो म एक चमडे की पेटी बधी थी। उसने उसे उतार लिया। उसम एक बटुआ बधा था। जिस पर लिखा था—

[illegible]। बटुआ खोलते ही उसमें ३००० पौंड निकले। वह समझ गया

यह इयूरेंड के कप्तान कलविन का ढांचा है। इसी ओक्टोपस ने उसका खून चूसकर उसे मार दिया होगा। उसने इसे रख लिया और समुद्र को शांत



भयानक समुद्री जन्तु ओक्टोपस

देखकर वह गुनसी टापू की ओर बढ चला।

इसी कशमकश मे पूरा अप्रैल बीत गया। मई का पहला दिन था।

उसने गुनसी के किनारे नौका रोकी और गाडी मे इजन को लदवाकर लैंथायरी के घर की ओर चल दिया। रात हो रही थी। चाद निकल आया था। लैंथायरी ने खिडकी से झाककर देखा तो उसे सहसा विश्वास नही हुआ। उसके ड्यूरेंड का इजन चिमनी सहित उसके आगन मे खडा था और बदहवाश गिलियात गदन झुकाए पास मे बैठा था। उसकी आखें कभी कभी उठती और अपनी प्रेमिका डेरूशी को खोजती। वह उसकी एक झलक भर पाना चाहता था।

उसने चारो ओर नज़र दौडाई। देखा चट्टान पर चादनी रात मे डेरूशी खडी है। वह उसकी ओर बढना ही चाहता था कि अचानक एक छाया उसे डेरूशी की ओर आते दिखाई दी। गिलियात ने आखें फाडकर देखा और कान लगाकर सुना। कुछ फुसफुसाहट थी।—"मरी मगेतर तुम ही मेरी जिन्दगी हो।

इतने मे ही जोर-जोर से घटिया बजने लगी। कोई आदमी जोर से चिल्लाकर गाव के लोगो को इकट्ठा कर रहा था।

यह और कोई नही डेरूशी का चाचा लैंथायरी था।

लैंथायरी ने कसकर गिलियात को खुशी से जकड लिया। उसने चीख चीख कर गाव को बता दिया कि गिलियात एक बहादुर और साहसी नौजवान है। उसकी तान म ही सम्मोहन नही उसके दिल और दिमाग मे भी एक ज़बदस्त शक्ति छिपी है। उसने मेरा और मेरे परिवार का जीवन बचा लिया।

गिलियात ने बटुए स ३००० पौड निकालकर लथायरी की मेज पर रख दिए। क्लबिन की बेल्ट से निकले ३००० पौंड। "गिलियात तुम सचमुच महान हो। मेरा खोया हुआ धन भी लौटा लाए।" गिलियात चुपचाप खडा खिडकी स बाहर की ओर देख रहा था। लथायरी खुशी से पागल था। वह जोर जोर से चिल्लाया—' गिलियात, डेरूशी तुम्हारी है। सिफ तुम्हारी। अब तुम उससे शादी करोगे।'

गिलियात दीवार की ओर मुडा—' नहीं डेरूशी मेरी नही है। मैं उससे प्यार नही करता।

बेवकूफ ! यह क्या कहते हो। तुम उसे प्यार नही करते तो तुमने यह सब कैसे किया, क्या किया ? मैं चाहता हू तुम उससे आज ही शादी करो

और ड्यूरेंड के कप्तान बनो।"—लथायरी गरज पडा।

लैथायरी का घर भीड से भरा था। सभी आश्चय मे थे। यह क्या हुआ। कही गिलियात पागल तो नही हो गया। धीरे धीरे तमाशबीन एक-एक करके खिसकने लगे। मन मे सभी गिलियात के महान साहस और त्याग की सराहना कर रहे थे। लैथायरी बहुत खुश था। वह घर मे अन्दर गया और डेरूशी को प्यार से चूम लिया। डेरूशी चट्टान की तरह मौन थी। उसे स्वय गिलियात के व्यक्तित्व और चरित्र पर आश्चय हो रहा था। उसने सपने मे भी न सोचा था कि प्यार की खातिर समुद्र से लडनेवाला गिलियात सब कुछ जीत लेने पर भी मुझे चुटकियो मे ठुकरा देगा। वह फूट फटकर रोने लगी। उसकी आखो मे कृतज्ञता के आसू थे। लैथायरी ने कोदरे को पुकारा—' सुनो, तुम किसी तरह इन दोनो की शादी करो। सारा इतजाम करो। मैं इस अहसान का बदला चुकाए बिना पाप की आग मे धधकता रहूगा।"

नौकरानी ने टेबल पर दो मोमबत्तिया जलाकर रख दी। लैथायरी आगे बढा। अभी भी आगन मे कुछ दशक खडे थे। वे जानना चाहते थे कि गिलियात डेरूशी से अभी भी शादी करने को तैयार हुआ है या नही। कोदरे पास खडा था। गिलयात रोशनी मे ऊपर से नीचे तक जगमगा रहा था। लथायरी आगे बढा। उसने जलती हुई मोमबत्ती की ओर हाथ करके कहा—"आज से गिलियात मेरा दामाद है। इसे भगवान ने अपूव शक्ति दी है। मुझे डेरूशी के लिए इससे अच्छा और योग्य पति और नही मिल सकता।'

गिलियात चुपचाप खडा था। फटे हुए कपडे। चेहरे पर सघष और उदासी की मूक रेखाए। डेरूशी उसे देखते ही बेहोश हो गई। कोदरे ने उस गिरते गिरते अपने हाथो मे थाम लिया। सभी उदास थे। कल कोदरे वापस जाने के लिए तैयार था।

कैशमे नामक स्टीमर भी तैयार था। गिलियात और डेरूशी सागर तट पर कोदरे को विदा देने आए थे। डेरूशी कोदरे को विदाई का अभिवादन करने लगी। गिलियात ने कहा—' विदाई तुम्हारी नही मेरी ओर से है। मैं चाहता हू तुम दोनो साथ-साथ रहो।"—यह ने

का हाथ पकड़कर कोदरे के हाथ मे थमा दिया। ये दोना मन-ही मन बहुत खुश थ। कैश्मे तक पहुचने के लिए नाव तैयार थी। गिलियात ने दोनो को इग्लैंड जाने के लिए विदाई दी। अब डेरूशी गिलियात की नही कोदरे की थी।

नाविक कोदरे और डेरूशी को कैश्मे तक छोडने के लिए नाव मे बिठा ले गया। गिलियात अपनी लाल टोपी हिलाकर उन्हे विदाई दे रहा था। नाव काफी दूर चली गई। कोदरे ने डेरूशी का कधा थपथपाया—"सुनती हो डेरूशी—गिलियात कितना महान है। यह आदमी नहीं देवता ह।" डेरूशी एकदम चुप थी।

'एक बार मैं चट्टान पर बनी पत्थर की कुर्सी पर सो रहा था। उधर ज्वार उठ रहा था। उस दिन अगर गिलियात ने मुझे न बचाया होता तो आज तुम मेरी नही उसीकी होती।

डेरूशी की आखो म उस महान व्यक्ति के अपूव त्याग के प्रति श्रद्धा के आसू छलक आए। उसके मन म गिलियात के प्रति एक अलौकिक प्यार जाग उठा। उसे वह दिन याद आने लगा जब गिलियात उसके पीछे-पीछे जाता था और वह उगली से बफ कुरेदकर उसका नाम लिखा करती थी। वह सिसकी भरकर कोदरे से लिपट कर रोने लगी।

अब ये लोग कैश्मे मे सवार इग्लैंड की ओर रवाना हो गए। गिलियात चट्टान के रास्ते चलकर उसी चट्टानी कुर्सी पर आकर उदास बठ गया। दूर से एक मछियारिन चीखन लगी।—"गिलियात हट जाओ ज्वार आ रहा है।" उसके कानो म कई बार उस मछियारिन की आवाजें आई। लेकिन वह अचल और अडिग चट्टान की कुर्सी पर ही बैठा रहा। ज्वार चढता आ रहा था। लहरें कुर्सी से टकराने लगी। अब गिलियात कधो तक डूब चुका था। उसने एक बार सिर उठाकर आकाश की ओर देखा—ऊपर समुद्री चिडियाए चिल्लपो मचा रही थी। मानो उससे कह रही हो, 'गिलियात हट जाओ—जान मत गवाओ। मगर वह अडिग था। उसने सिर नीचा करके आखें मूद ली और दो पल म लहरो के फुल्कार ने उसे आत्मसात कर लिया। समन्दर का सन्तरी हमेशा के लिए समुद्र की गोद मे सो गया। अब चारो ओर लहरें ही लहरें थी और कैश्मे नवदम्पति को लिए इग्लैंड की ओर तेजी से चला जा रहा था।

एच० जी० वेल्स

१६वी सदी के वैज्ञानिक उपन्यासकारो मे हरबट जार्ज वेल्स का नाम सबसे ऊपर आता है। केन्ट म १८६६ मे जन्मे श्री वेल्स गरीब परिवार मे पैदा होने पर भी विश्व की एक महान प्रतिभा बने। अनेक सघर्षों मे बचपन और किशोर जीवन बिताने के बाद परम्पराओ मे बधने के बजाय स्वतत्र लेखन और चिन्तन के हामी बन और अत मे विज्ञान के रॉयल कॉलिज से विज्ञान-स्नातक की उपाधि लेकर जीव विज्ञान मे विशेष रुचि ली।

युवावस्था मे ही क्षय रोग के कारण उन्होंने लेखन का धधा अपना लिया और रोमानी, विज्ञानी तथा पाठय पुस्तको के रूप मे सौ से अधिक पुस्तकें लिखी। 'टाइम मशीन', 'अदश्य आदमी', 'वार आफ द वल्ड' आदि इनकी विश्वप्रसिद्ध कृतियाँ है। उनके न चाहते हुए भी उनकी काल्पनिक वैज्ञानिक रचनाए ससार भर म प्रसिद्धि ने गइ।

उनकी दूसरी पत्नी केथरीन भी लेखिका थीं। उनके दो मे से एक पुत्र जाज ने जो वैज्ञानिक था, उसने अपने पिता व हक्सले के साथ 'जीवन का विज्ञान' नामक रचना की। ८० वष की आयु मे १६४६ म उनका निधन हुआ, मगर वैज्ञानिक उपन्यासकार के रूप म वे आज भी साहित्य ससार मे जीवित हैं।

इस सकलन मे उनकी तीन रचनाए—अदृश्य आदमी (द इनविजिबिल मन) 'द वार आफ वल्डस' (पृथ्वी पर लाल प्राणी), 'फूड आफ गॉड्स' (भीम भोजन) प्रस्तुत हैं। रचनाओ का चयन जीव विज्ञान के उपन्यास के आधारो पर ही किया गया है। उपन्यासो मे कथानको के *साथ-साथ समाजी-दृष्टिकोण* और गुत्थियो को भी सुलझाने की लेखक ने चेष्टा की है।

अदृश्य आदमी

खून के रग से ही आदमी का रग रूप बनता है। अगर खून का कोई रग न हो तो आदमी पारदर्शी होकर अदृश्य हो जाएगा, इस वैज्ञानिक कल्पना को लेखक ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'इनविजिबिल मैन' मे दिखाया है।

एक विज्ञान का छात्र सहसा एक रासायनिक द्रव तैयार करके उसे पी लेता है और अपने को अदृश्य बना लेता है। उसके अदृश्य बनते ही उसकी जीवन सबधी अनेक समस्याए खडी हो जाती हैं।

अत मे उसे कुठित होकर अनेक अमानवीय अपराध करने पडते हैं और अत मे एक डाक्टर की मदद से उसे पुलिस गिरफ्तार करने के लिए दौड़-धूप करती है। इस कहानी का बड़े रहस्यमय ढग से लेखक ने प्रस्तुत किया है।

जैसे ही अदृश्य आदमी मरता है द्रव का प्रभाव समाप्त होते ही उसके खून का रग बदल जाता है और उसका नगा शरीर सबको वालों को साफ साफ नजर आने लगता है। लेखक ने इस उपन्यास में जीव विज्ञान के सिद्धांत का सफलता से प्रस्तुत किया है।

—सम्पादक

नौ फरवरी का दिन था। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। तूफान के साथ बारिश होने लगी। बर्फ भी गिरने लगी। वह आदमी इगलैंड के ब्रैम्बिगान मे सराय की ओर भागने लगा। उसके हाथ मे एक बैग था और सिर व हाथ टोप और दस्तानो से ढके हुए थे। उसके शरीर का एक एक भाग कपड़ो से अच्छी तरह ढका हुआ था।

कोच एड हार्स सराय मे घुसकर उसने सराय की मालकिन श्रीमती

हाल से कहा—"मुझे एक कमरा चाहिए जिसमें थोड़ी आग भी रखवा दीजिए।"

हाल ने उसे एक कमरे में ले जाकर टिका दिया और उसके लबादे व हैट को बर्फ से ढका देखकर झाड़ने के लिए मांगा। लेकिन उसने मना कर दिया। थोड़ी देर में जब हाल खाना लेकर आई तब भी वह आदमी शीशे के सामने उनकी ओर पीठ किए ज्यों का त्यों खड़ा था।

"आपका खाना तैयार है।" हाल ने धीरे से कहा।

तब उस आदमी ने पीछे मुड़कर देखा। उसका सारा मुंह सफेद पट्टियों में बंधा था और आंखों पर चश्मा चढ़ा था। श्रीमती हाल उसे इस हालत में देखकर सकपका गईं। "क्या आपके साथ कोई दुर्घटना हुई है।" उन्होंने सहानुभूति के स्वर में पूछा।

"हां, मैं इपिंग गांव में शहर की हलचल से दूर इसीलिए आया हूं कि यहां रहकर शांति से अपने प्रयोग परीक्षण कर सकूं। मैं एक वैज्ञानिक हूं।" उस आदमी ने कहा।

दूसरे दिन गाड़ी में लदकर उस आदमी का सामान सराय के फाटक पर आया। उसने बाहर आकर सामान को रखवाने की व्यवस्था की। जैसे ही वह बाहर आया एक कुत्ता भूंककर उसपर झपटा और उसके पाजामे को फाड़कर उसकी बायीं टांग काट ली। वह तेजी से भागकर सराय में घुस गया। सामान उठाने वाले मजदूर ने देखा—फटे हुए पाजामे में उसका पैर ही नहीं था।

शाम हो गई। जब श्रीमती हाल खाना लेकर कमरे में आईं तो वह आदमी अपने यंत्रों के साथ कुछ रासायनिक परीक्षण कर रहा था। हाल ने देखा पट्टियों के नीचे उसकी नाक और नाक कुछ भी नहीं है। केवल गहरे गड्ढे बने हैं। हाल उसकी हुलिया देखकर मन में भयभीत हो गईं। उन्होंने खाना टेबुल पर रखा। प्लेटों के खड़कने की आवाज हुई। उस आदमी ने चौंककर कहा, "आह आप खाना ले आईं। लेकिन आयंदा/आप जब भी आएं दरवाजा खटखटाकर ही आएं। माफ कीजिएगा।"

"मैंने दरवाजा खटखटाया था। लेकिन आपने सुना नहीं।" हाल ने कहा।

"ओह आप नही जानती, मैं कुछ जरूरी खोजबीन कर रहा हू। जरा सा भी ध्यान हटने से मेरे जीवन और मृत्यु का प्रश्न बन जाता है।" उस आदमी ने कहा। हाल कमरे से चली गई।

कई महीने बीत गए। वह इपिंग गाव की सराय के इसी कमरे मे रात दिन अपनी धुनाधुनी म लगा रहता था। धीरे धीरे यह शौहरत गावभर म फल गई और एक दिन एक डाक्टर उस आदमी के कमरे म आ धमका।

"माफ करना, क्या आप कोई खोज कर रहे हैं ?"

"हा !" उस अजनबी ने डाक्टर को सदेह की दृष्टि से देखते हुए सकपकाकर कहा।

"मैं वसे ही पूछ रहा हू। माफ करना। कही यह खोज चिकित्सा सम्बन्धी तो नही है।" डाक्टर ने सकपकाते हुए कहा।

यह आप क्यो पूछ रहे हैं ? आखिर आप क्या जानना चाहते हैं।" यह कहते कहते उस अजनबी ने अपना हाथ जेब से बाहर निकाला।



अदृश्य आदमी के दो रूप

"हाय राम !" इस आदमी के तो हाथ ही नही है।" डाक्टर ने मन मे कहा। "क्यो महाशय ! आप बिना हाथ के कोट की बांह को हिला कैसे लेते हैं।"

"क्या आपने मेरे कोट की खोखली बाह देखी है।" यह कहते-कहते उस आदमी ने हाथ डाक्टर के हाथ की ओर बढाया। अब बाह डाक्टर की नाक से ६ इंच दूर थी। डाक्टर ने देखा उसमे कुछ भी नही था। वह एक दम खाली थी। इतने मे ही किसी अदृश्य अगूठे और उगली ने उसकी नाक कसकर नोच ली और वह चीखता हुआ सीढ़िया की ओर भाग गया।

कई दिन बाद की बात है। ऐसे ही एक रात को विकार और मैडम बटिंग के घर चोरी हो गई। चोर के पावो की आहट सुनकर बटिंग जाग गई। उसने विकार से कहा—"मुझे लगता है कोई आदमी हमारे कमरे मे चल रहा है।" विकार हडबडाकर जाग उठा और हाथ मे डडा लेकर कमरे की तलाशी लेने लगा। उसने देखा दूसरे कमरे मे कोई आदमी मोमबत्ती जला रहा है। लेकिन सिवाय मोमबत्ती के आदमी दिखाई नही दे रहा है। विकार डडा लेकर मोमबत्ती की ओर झपटा। लेकिन उसे कुछ न मिला। वह जीने के ऊपर आकर खडा हुआ। उसने देखा बडा दरवाजा खुला और धडाक से बद हो गया। वह भागकर नीचे गया और दरवाजे को अदर से बद कर आया। लौटकर दोनो ने सामान सभाला तो रुपयो से भरा बटुआ गायब था। मगर इस रहस्यमय चोरी का भेद किसी की भी समझ मे नही आया।

सराय की मालकिन बडे सवेरे उठ जाती थी। एक दिन उसने देखा सराय के बडे फाटक की कुडी खुली पडी है। वह अजनबी आदमी के कमरे मे गई। कमरा खुला था। वह मोमबत्ती जलाकर देखन लगी कमरे मे कोई नही था। उस आदमी के कपडे खूटी पर टगे थे। अचानक उसका हैट उछलकर हाल के मुह पर लगा। वह भागने लगी तो एक कुर्सी जमीन से उठकर उसे बाहर निकालने के लिए खुद-ब-खुद धकलने लगी। वह डरकर चीख पडी, "हे भगवान ! इस कमर मे तो भूत हैं।'

दूसरे दिन काफी देर तक हाल उस अजनबी आदमी के आने का इतजार करती रही। दोपहर को दो बजे आकर उसने कमरे से निकलकर

हाल से पूछा, "आज तुमने मुझे नाश्ता क्यो नही भेजा।"

"आप कमरे म नही थे। मैं दरवाजे पर बराबर आपकी राह देखती रही। लेकिन पता नही आप कमरे म किस दरवाजे से घुस आए।' हाल ने कहा।

"बस करो। तुम मुझे नही जानती मैं कौन हू।"—यह कहकर उसने गुस्से मे अपना टोप उतारा—टोप के नीचे सिर गायब था। फिर उसने चश्मा हटाकर एक के बाद एक अपने मुह पर बधी पटिटया खोल डाली। अब सिर्फ कोट और पैट वाला खाली धड हाल को दिखाई दिया। उसके अन्दर शरीर, हाथ, पैर कुछ भी नही था। यह देखकर श्रीमती हाल जोर से चिल्लाकर बाहर भागी।

उनकी घबराहट को देखकर सराय के और मुसाफिर भी उनके पीछे-पीछे बाहर चिल्लाते हुए भागे—"बचाओ, बचाओ। पुलिस पुलिस।"

'पुलिस पुलिस' की आवाज सुनकर सिपाही फौरन सराय मे आ गया। उसने कहा—चाहे उस आदमी का सिर हो या नही मैं उसे गिरफ्तार करके छोडूगा—यह कहकर वह इस अजनबी बिना सिर वाले आदमी की ओर झपटा। तपाक से उसके गाल पर एक चाटा पडा और वह पीछे हट गया—उसके कानो मे आवाज आई।— 'हट जाओ, तुम मुझे नही पकड सकते।"

कास्टेबल ने उस कोट और पैंट के ढाचे की ओर झपटकर उसे पकडना चाहा। इतने मे ही उसने देखा कि कोट के अदर कुछ भी नहीं है। उसे फिर जोर का धक्का लगा और कास्टेबल सभलते-सभलते जमीन पर गिर पडा। जब तक वह उठा तब तक कोट और पैंट जमीन पर नीचे खाली गिरे पडे थे। कास्टेबल ने देखा उनमे कुछ भी नही है। वह उस आदमी को खोजने लगा। इतने मे ही सराय के दरवाजे के पास से एक आवाज आई—"मूर्खो, मैं अदृश्य अजनबी हू। तुम मुझे नही पकड सकते।"

जैसे ही कास्टेबल दरवाजे की ओर दौडा तब तक खटाक की आवाज से दरवाजा बद हुआ और वह आदमी किसी को भी नही दिखाई दिया। सभी लोग 'पकडो-पकडो' की आवाज करते हुए बाहर की ओर दौड पडे।

उसी दिन के दोपहर की बात है। इपिग गाव से कुछ मील दूर एक पेड

के नीचे मार्वेल सुस्ता रहा था। इतने में ही उसे एक आवाज सुनाई पडी, "आह तो तुम यहा पडे हो।" मार्वेल ने मुडकर देखा कोई भी न था। उसकी नजर एकदम कोहनी पर आ गई। "घबराओ मत"—फिर आवाज आई। वह चौंककर खडा हो गया और अपने गाव की ओर भागने की तैयारी करने लगा—"मैं बिल्कुल ठीक तुम्हारे सामने खडा हू। लेकिन तुम मुझे देख नहीं सकते।"

"लगता है तुम कोई भूत या बुरी हवा हो।"

"नही मैं तुम जैसा ही आदमी हू, जिसे रोटी कपडा और मकान सभी कुछ चाहिए।"

"अच्छा अगर तुम सचमुच कोई आदमी हो तो मुझसे हाथ तो मिलाओ।"—यह कहकर मार्वेल ने हवा म अपना हाथ बढा दिया। उसका हाथ कसकर किसी न पकड लिया और उसे पीछे की ओर धक्का-सा लगा।

"मैं चाहता हू तुम मेरी सहायता करो। मुझे शरीर ढकने के लिए कपडे लाकर दो, मुझे खाना दो व मेरे रहने का इतजाम कर दो। याद रखो मैं अदृश्य और शक्तिशाली आदमी हू। तुम्हारी मदद करूगा और तुम्हे मालामाल कर दूगा। लेकिन याद रखो तुम मुझे धोखा मत देना"—यह कहकर उस अदृश्य आदमी ने मार्वेल का हाथ छोड दिया।

"मैं आपको धोखा नही दूगा"—मार्वेल ने कहा। "मैं अभी जाकर सब इन्तजाम करता हू।"—यह कहकर मार्वेल ने उसे घिस्सा दिया और वह उससे पीछा छुडा कर पोर्ट बडडोक गाव की ओर भागने लगा। उस अदृश्य आदमी ने देखा कि इसने तो मुझे धोखा द दिया। तो वह भी उसके पीछे-पीछे भागा। रास्ते मे एक आदमी व कुत्ते से उस अदृश्य आदमी की टक्कर भी हो गई। कुत्ता उछलकर हवा मे झूल गया और वह आदमी हक्का-बक्का-सा चारो तरफ देखने लगा। मार्वेल तेजी से भागकर हाफता हुआ एक सराय मे घुस गया। "भगवान के लिए मुझे कही छिपा लो। वह अदृश्य आदमी मेरे पीछे है। वह मुझे जान से मार देगा।"—मार्वेल बोला।

सराय के मालिक ने उसे एक तहखाने मे छुपा दिया और सराय के सारे दरवाजे बद करने का हुक्म दिया। अब वह अदृश्य आदमी सराय के चारो ओर चक्कर काट रहा था। अचानक उसे पीछे की ओर रसोई का

दरवाजा खुला दिख गया और वह अन्दर आ गया। रसोइये ने तेज छुरा लेकर रसोई मे एक एक इच हवा को छुरे से गोद दिया। लेकिन वह आदमी रसोई मे कही भी नही था। सराय के मालिक ने हाथ मे रिवाल्वर निकाल ली और पूरी सराय मे उस अदृश्य आदमी की खोज होने लगी। मार्वल डर के मारे चुप पडा अपनी जान की खैर मना रहा था। थोडी देर मे उस तह खाने मे धमाके की आवाज हुई और मार्वल को किसी ने पकडकर जमीन पर दे मारा। उसकी आवाज सुनते ही सभी लोग उसी ओर झपटे। सराय के मालिक के हाथ मे किसी आदमी की कलाई आ गई। उसने उसे मरोडना चाहा। इतने मे ही कसकर उसके मुह पर मुक्का पडा और कलाई पकडनेवाला मार्वल के ऊपर धम से गिर पडा।

अब सराय मे सभी आदमी इधर उधर दौडे और हवा मे हाथ-पर मारने लगे। अब ये लोग खाली हवा से लड रहे थे और खासी धमाचौकडी मच रहे थे। इतने म ही सराय का दरवाजा खुला और खटाक से किसी के निकलने के बाद बन्द हो गया। सराय का मालिक रिवाल्वर लेकर बाह की ओर झपटा। दरवाजे के बाहर काफी दूर तक सकरा-सा रास्ता था मालिक ने उसी ओर दस-बारह फायर कर दिये। लेकिन उस अदृश्य आदम का कही पता न चला।

रात के दो बज रहे थे। सराय के पास ही डा० कैम्प का मकान था वह देर तक प्रयोगशाला मे कुछ परीक्षण कर रहे थे। रिवाल्वर का धमाक सुनकर उनका ध्यान बटा। वे खिडकी से बाहर झाककर देखने लगे। इत मे ही बाहर से किसी ने घटी बजाई। डाक्टर के नौकर ने दरवाजा खोला बाहर कोई नही था। डाक्टर ने पूछा—"कौन है ?"

"बाहर तो कोई भी नही है।"—नौकर ने कहा।

डाक्टर काम करते-करते थक गया था। वह अपने सोने के कमरे क ओर चल दिया। उसने जसे ही बैडरूम का दरवाजा खोलने को हा बढाया तो हत्थे पर खून लगा हुआ था। डाक्टर उसे देखकर चौंक गया उसने कमरे मे आकर देखा तो उसके बिस्तरे की चादर का एक कोना फ हुआ था और वह भी खून से लथपथ था।

डाक्टर कैम्प बडे आश्चय मे था। उसने देखा कमरे म खाली हवा म

एक पट्टी का खोल हिल रहा है। जैसे ही डा० कम्प न उस ओर हाथ बढाया —एक कड़कती आवाज आई—"घबराओ मत कैम्प, मैं अदृश्य आदमी हू।"

"बको मत। यह कोई जादूगरी की चाल है। मुझे बेवकूफ मत बनाओ।'—डाक्टर ने जवाब दिया। डाक्टर ने फिर उस पट्टी की ओर हाथ बढाया तो उसके हाथ मे अदृश्य आदमी की उगलिया आ गइ। कैम्प उछलकर अपने पलग पर आ गिरा और वह जोर से चीखने ही वाला था कि वह पट्टी बधा हाथ उसके मुह की ओर बढा और उसने चद्दर का एक छोर डाक्टर के मुह मे घुसेडकर उसकी चिल्लाहट बद कर दी।

डाक्टर कम्प को फिर आवाज सुनाई पडी—"चुप रहो—मूख ! तुम मुझे जरूर जानत होगे। मेरा नाम ग्रिफिन है। मैं यूनिवर्सिटी कालेज मे पढा करता था।"

डाक्टर सोचने लगा— मुझे कुछ-कुछ याद-सा आता है कि मेरे साथ ग्रिफिन नाम का एक छात्र था जिसे कमिस्ट्री मे प्रथम आने पर गोल्डमैडल मिला था। डाक्टर को उसने छोड दिया और पहनने के लिए सोनेवाला लबादा (गाउन) लाने को कहा। बडी सर्दी थी। उसे ठड लग रही थी। वह लबादा पहनकर खडा था और डाक्टर को खाली लबादा दिखाई दे रहा था। डाक्टर उसे सोने के कमरे मे छोडकर कल सुबह मिलन के लिए कहकर चला गया। उसके जात ही दरवाजा बन्द हुआ आर चाबी घूमन की आवाज डाक्टर ने सुनी। इस घटना को देखकर उसका सिर चकराने लगा। वह सोच रहा था—क्या मैं स्वप्न देख रहा हू या कही मैं पागल तो नही हो गया हू।

दूसरे दिन सुबह उसी अदृश्य आदमी ने कैम्प के साथ नाश्ता किया और अपने अदृश्य होने की दास्तान सुनाना शुरू कर दिया—'मैंने कालेज छोडन के बाद भौतिकी की खोजबीन का काम शुरू कर दिया। मैंने प्रकाश और दृश्य के घनत्व विज्ञान की पढाई की। काफी शोध करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुचा कि मास, हड्डी, बाल, नाखून व चमडी का कोई भी रग नहीं होता। ये सभी चीजें बिना रग के पारदर्शी (आरपार दिखनेवाले) ऊत्तको से बनी हैं। केवल खून का ही लाल रग होता है, जिसके कारण ये

सभी चीजें देखने योग्य वन जाती है।"

डा० कैम्प बड़े ध्यान से ग्रिफिन की बात सुन रहा था। "एक दिन मैंने सोचा कि कोई ऐसा द्रव तैयार किया जाए जो खून के लाल रंग को सफेद कर दे। मैं तीन साल तक लन्दन में एक कमरा किराये पर लेकर ऐसे रसायन को खोजता रहा और एक दिन मैंने वह रसायन तयार कर ही लिया। एक रात को मैंने वह द्रव पिया और सो गया। जब मैं सुबह उठकर दर्पण के सामने खड़ा हुआ तो मैं पूरी तरह से गायब (अदृश्य) था। शीशे में मेरी कोई भी सूरत दिखाई नहीं दे रही थी। इस तरह मैं अदृश्य आदमी बन गया। —यह कहकर उस आदमी ने कैम्प के सामने बैठे-बैठे नाश्ता किया और अपनी कहानी जारी रखी।

'अब मैं अपने को दुनिया की नजरों से बिल्कुल खत्म करना चाहता था। मैंने कुछ कागज बटोरकर उस मकान मे आग लगा दी जहां मैं रहता था और मैं चुपके से निकल भागा। सबने समझा कि मैं उसी मकान में जलकर मर गया हूँ।'

'तब तो तुम बहुत तेज निकले'—कैम्प ने कहा।

अब मैं बिल्कुल नंगा था। मुझे सर्दी और भूख सता रही थी। मैं बाजार में कई आदमियों से टकराता हुआ और उन्हें हैरत में डालता हुआ तेजी से एक थियेटर का सामान बेचनेवाली दुकान मे घुस गया। यहां तरह तरह की पोशाकें और चेहरे लटके हुए थे। मैंने जैसे ही पोशाक उतारी दुकान का मालिक उधर को आ निकला और उसने रिवाल्वर निकालकर पुकारा—"कौन है दुकान मे?' उसे कुछ भी नहीं दीख पड़ा और मैंने पीछे जाकर उसके सिर मे ऐसा कसकर डंडा मारा और उसके मुंह में कपड़ा भरकर उसे वहीं कसकर बांध दिया। फिर मैंने कपड़े पहिने चेहरा चढ़ाया और उस दुकानदार का सारा रुपया उठाकर मैं वहां से निकलकर एक होटल मे घुस गया।

'शायद तुम्हें बहुत जोर की भूख लगी थी।"—डा० कैम्प ने कहा।

'हां। मैंने भरपट खाना खाया और फिर मैं इपिंग गांव की ओर चल पड़ा।

तो तुम्हें अदृश्य जीवन कैसा लगा। —कैम्प ने पूछा।

'मैं सचमुच बड़ा दुखी हूं। मैं घबरा गया हूं। इपिंग गांव में भी मैं ऐसा रसायन खोजना चाहता था, जिससे पुनः मैं अपने असली रूप में आ सकूं। लेकिन किसी ने मेरी बात नहीं समझी। सभी ने मुझे धोखा दिया और तंग किया। अब मैं उन सब आदमियों से बदला लेना चाहता हूं—आतंक का साम्राज्य बनाना चाहता हूं। बोलो,क्या तुम इस काम में मेरा साथ दोगे? मुझे ऐसे आदमी की जरूरत है जो विश्वास के साथ मुझे शरण दे सके और मुझे खाना, कपड़ा व रहने के लिए मकान दे।'

इधर डा० कैम्प सुबह होते ही पुलिस के कप्तान को विशेष आदमी के साथ पत्र भिजवाकर सूचना दे चुका था। वह अदृश्य आदमी (ग्रिफिन) अपनी दास्तान कैम्प को सुना ही रहा था कि अचानक दरवाजा खटका। ग्रिफिन चौंककर फौरन खड़ा हो गया। उसने डपटकर कैम्प से कहा—"तुमने मेरे साथ धोखा किया है। बताओ दरवाजे पर कौन दस्तक दे रहा है?"

कैम्प उठकर दरवाजे की तरफ झपटा और उसकी चटखनी कसकर बन्द कर दी। ग्रिफिन ने रिंच घुमाकर दरवाजा खोला और कैम्प को उल्टा धक्का मारकर वह दरवाजे से बाहर निकल गया।



अदृश्य आदमी पर झपटता हुआ डा० कैम्प

पुलिस का कप्तान कर्नल ऑडे सीढ़ियों पर चढ़ रहा था। वह अदृश्य

आदमी कर्नल से टकराकर भाग निकला। कर्नल ने देखा द्वार खुला और फौरन बन्द हो गया।

इतने में ही कम्प ने चिल्लाकर कहा—"खेल खत्म हो गया। वह भाग चुका है।" कैम्प ने सक्षेप में सारी दास्तान पुलिस के कप्तान ऑडे को सुना दी।

कैम्प ने कहा—"वह अदश्य आदमी पागल हो गया है वह कानून को भग करके अपनी सुरक्षा के लिए कई आदमियों की हत्या करने को तयार है। आप उसे फौरन गिरफ्तार करिए।"

"लेकिन उसे गिरफ्तार कैसे किया जाए ? वह तो भाग चुका है और फिर दिखाई भी नही देता।"—पुलिस के कप्तान ने कहा।

"हम एक काम कर सकते हैं। उसे खाना न दें। सारे इलाके मे ऐलान करा दें कि लोग अपने खाने व कपडो की हिफाजत से रखें। वह भूख से मरेगा और सर्दी से ठिठुरेगा। हम पूरे गाव म चारो ओर लोगो को बता दें कि वह अदृश्य आदमी जिस किसी से टकराए या बात करे वह उसे फौरन पकड ले। वह आदमी नही रूपोश होकर शैतान बन गया है। वह अपना आतक जमाना चाहता है।"—कैम्प ने चीखकर कहा।

"हम जहाज, सडकें, रेल व मोटरगाडियो पर भी चैकिंग करके उसे पकड सकते हैं।' पुलिस कप्तान ने कहा।

सारे गाव मे पुलिस ने ऐलान करवा दिया और सभी लोग उसी दिन खबरदार हो गए। इसी बीच शाम तक कैम्प को एक गुप्त धमकी भरा पत्र मिला। पत्र म लिखा था—

"आज से—साल के पहले दिन आतक राज्य का पहला दिन घोषित किया जाता है। आज अदश्य आदमी पहले नमूने के तौर पर एक व्यक्ति डॉ० कम्प का शिकार करेगा। आज रात तक हर हालत मे कम्प की रहस्य मय मृत्यु हो जाएगी।—अदृश्य-आदमी।"

कम्प ने फौरन चौकीदार व नौकरो को होशियार करके घर के खिडकी व दरवाजे बद करवा दिए और एक पत्र भेजकर पुलिस को खबर दे दी।

जब घटी बजी तो दरवाजा खोलते ही कप्तान ऑडे खडे थे। पुलिस कप्तान ने कहा कि तुम्हारे चिट्ठी देनेवाले के हाथ से उस अदश्य आदमी

ने पत्र छीन लिया। वह महिला थाने मे रोती हुई यह समाचार मुहजुबानी सुनाने लगी। इसीको सुनकर मैं फौरन आ गया।"

ये दोनो बात कर ही रह थे कि खिडकी का काच चटखने की आवाज सुनाई दी। कही वह आदमी ऊपर तो नही चढ आया है।" आडे ने कहा।

"नही, खिडकियो स तो बिल्ली तक के आने का रास्ता नही है।"

फिर कई शीशो के टूटने की आवाज आई। कैम्प ने कहा—"यह मूख है। सभी खिडकिया के अन्दर शटर लगे है, काचो को तोडकर वह कभी भी अन्दर नही आ सकता।"

"तुम यही ठहरो। मैं अभी थाने से खूनी कुत्ता को लाता हू। सूघकर पता लगा लेंगे कि वह आदमी आखिर कहा खडा है।"—कप्तान न कहा।

जसे ही ऑडे बाहर निकला, कैम्प ने दरवाजा बद कर लिया। वह खिडकी म खडा देखने लगा। सहसा पुलिस कप्तान रुका और हवा मे एक नीला-सा धुआ उडा। कप्तान मुह के बल जमीन पर आ गिरा। कैम्प समझ गया कि अदृश्य आदमी ने साइलेंसर लगी रिवाल्वर से कप्तान की हत्या कर दी। वह भागकर वापस आया और एक मजबूत लोहे की छडी लेकर अदृश्य आदमी का इतजार करने लगा। सभी दरवाजे बद थे।

एक खिडकी को तोडकर एक कुल्हाडी अन्दर आती दिखाई पडी। वह आदमी शटर को कुल्हाडी मार कर तोडे डाल रहा था। कैम्प भागकर रसोईघर मे गया और अन्दर से दरवाजा बद करके बैठ गया। घटी फिर बजी और कैम्प ने दरवाजा खोलकर दो पुलिसवालो को रक्षा के लिए अपने घर मे दाखिल कर लिया। उसने एक एक लोहे की छडी दोनो पुलिसमैंनो को दे दी ताकि वे दूर से ही छडी घुमाकर अदृश्य आदमी के वार को नाकाम कर सकें।

दरवाजा टूटा और कुल्हाडी पुलिसवालो की ओर बढी। पुलिसवाले ने लोहे की छडी को आडा करके कुल्हाडी का हमला रोक लिया।

"हट जाओ। बताओ कम्प कहा है। मैं उसे मारूगा।"—एक आवाज आई। पुलिसवाला चिल्लाया—"हम तुम्हे गिरफ्तार करेंगे। बताओ तुम कहा हो।" इतने म कुल्हाडी के एक ही वार ने एक सिपाही को धराशायी कर दिया। दूसरे सिपाही ने कुल्हाडी के पास ही कसकर लोहे की छडी

मारी और 'थप' की आवाज के साथ कुल्हाडी जमीन पर गिर गई।

कैम्प जान बचाने के लिए खिड़की से कूदकर गाव की ओर भागा। उसके पीछे अदृश्य आदमी के भागने की भी आवाज आ रही थी। जसे ही वह गाव के पास पहुचा, वहा कुछ लोग खडे बातें कर रह थे। कम्प झपट कर उनके झुड मे घुसकर चिल्लाया—'मुझे बचाओ, लाइन बनाकर उसे रोको। वह मेरी जान लेना चाहता हैं। कही वह भाग न जाए।"

लोगो म भगदड मच गई। कम्प को किसी न कसकर धक्का मारा। जसे ही कैम्प पीठ के बल गिरा, उसकी छाती पर कोई आदमी बठकर दोनो हाथो स गला दबाने लगा।

कम्प की जान निकलने ही वाली थी कि एक आदमी ने पास ही पडा बेलचा उठाकर कम्प के शरीर से जरा ऊपर हवा म दो तीन बार मारा। थप थप की कई आवाजें हुई और कम्प का गला छूट गया। कम्प तपाक से उल्टा हो गया। कैम्प न चिल्लाकर कहा—'वह आदमी मेरे नीचे है। जान न पाए। मैंन उसको पर कमकर पकड रखा है।"—जहा वह कुश्ती कर रहा था वहीं चार पाच आदमी उसे पकडने के लिए झपटे।

भयकर लडाई होने लगी। 'ठहरो, वह बुरी तरह घायल हो चुका है।' कैम्प न उठ कर कहा।

'उसे छोड मत देना। कहीं वह फिर उठ कर भाग न जाए।'—भीड म स एक व्यक्ति न कैम्प से कहा।

'नहीं वह अब नही भाग सकता। उसकी सास बद है दिल की धडकन शान्त है वह मर चुका है। —कम्प ने उसकी लाश के ऊपर पडे-पडे कहा।

इतने म एक बुढिया जोर से चिल्लाई—"वह देखो मुझे उसका पांव पर दिखाई दे रहा है।

सचमुच धीरे धीरे उसका सारा शरीर साफ साफ दिखाई देने लगा। वह एकदम नगा था। उसका शरीर चोटो म कट चुका था और लाल खून म लथपथ था। दो आदमियो न दौडकर उसके नगे बदन का चादर डालकर ढक दिया और मकान म ले गए।

पृथ्वी पर लाल प्राणी

अक्सर दूसरे ग्रहों की बातें पढ़कर हम लोग अपने आपको अच-रज मे डालते रहते हैं। बुध, मगल, शुक्र के जीवन और उनके पृथ्वी और सौर जगत स सम्ब ध की खोजबीन और अटकल आज भी चलती रहती हैं।

१६वीं शताब्दी मे श्री वेल्स ने भी यह प्रमाणित करने की चेष्टा इस उपन्यास मे की कि मगल ग्रह मे जीवन है और इस ग्रह के प्राणी पृथ्वी के प्राणियों से अधिक विज्ञानी और बुद्धिमान हैं। उन्होंने एक बार पृथ्वी पर हमला बाल दिया और लाल लाल रग के इन भयकर प्राणियों ने एक ही चपेट मे पृथ्वी के प्राणियों क विकास और सभ्यता को नष्ट करने की ठानी।

मगर जीव विज्ञान के आधार पर लिखे गए इस उपन्यास मे यह अदभुत परिणति है कि पथ्वी के जीवाणु और विषाणुओं ने उन्ह सहज ही मे नष्ट करक मनुष्य जाति को बचा लिया। प्रस्तुत उपन्यास बडा रोमांचक और भदपूण है।

—सम्पादक

१५वी शताब्दी खत्म हो रही थी। इ हीं दिना की बात ह। कुछ अख-बारो म एक ऐसी गस के बार म खबरें छपी जो मगल ग्रह से निकलकर जी से पथ्वी की आर चली आ रही थीं। इस खबर स आम लोगो पर ी कुछ असर नही पडा, लेकिन वज्ञानिकों म खलबली मच गई। व जानत थे कि मगल ग्रह की हाइड्रोजनीय लपटदार गैस पृथ्वी के लोगा के लिए कतनी हानिकारक हो सकती ह।

गणितज्ञ आगिरवी न प्रयोगशाला म जाकर मुझे इस समाचार के बार

मे बताया। रात होते ही मैंने अपनी दुरबीन मगल ग्रह की ओर घुमा दी। मैंने देखा मगल ग्रह के चारो ओर नीली-नीली छाया मडरा रही है। मगल ग्रह से तेज चमकीले धुए जैसी गैस निकलकर तेजी से पृथ्वी की ओर बढती आ रही है।

मैंने यह सब देखकर ज्यो का त्यो ओगिल्वी को बता दिया। उसने कहा—"इस लपट और धुए वाली गस को देखकर तुमने क्या अदाज लगाया है ?"

"जहा तक मेरा ख्याल है ये मगल ग्रह से टूटकर पृथ्वी की ओर गिरने वाले तारे हैं और कुछ नही। मगल ग्रह को लाल ग्रह भी कहते हैं। क्योंकि इसका रग लाल होता है।"

"कही ऐसा तो नही है कि लाल ग्रह के वनानिक पृथ्वी की ओर नकली गस बनाकर छोड रहे हो।"—ओगिल्वी ने कहा।

'मैं जहा तक समझता हू मगल ग्रह पर जीवन नही है। अत गस छोडने का सवाल ही नही पदा होता।"—मैंने कहा।

कई दिन बीत गए। एक दिन आकाश से टूटकर एक तारा गिरा। इसकी रोशनी आसमान मे दूर-दूर तक लम्बी लकीर की तरह फलती हुई लोगो ने देखी। दूसरे दिन सुबह होते ही ओगिल्वी उठ बैठा। वह टूटे हुए तारे के धातु पिण्ड को देखने के लिए जगल की ओर चल दिया।

लदन नगर मे अपने घर से कुछ दूर चलकर वह रुक गया। उसने देखा एक गड्ढे म धातुपिड पडा है। लेकिन उसकी शक्ल टूटे हुए तारे के पिंड जैसी नही है। जहा वह गिरा है उसके चारा ओर दूर तक गम हवा फली हुई है। तेज जलानेवाली गर्मी की परवाह किए बिना ओगिल्वी उस गड्ढे म नीचे उतरने लगा। उसने देखा बोतल जसा एक पोला सिलण्डर पडा है। उसने देखा सिलिण्डर का ऊपर का हिस्सा धीरे धीरे खुल रहा है। 'बाप रे बाप, आधा भुना हुआ लाल आदमी बठा है। अरे यह तो भागने की कोशिश कर रहा है।"—ओगिल्वी यह सब देखकर आश्चय मे डूब गया। उस आदमी ने तजो से कूदकर सिलिण्डर को मगल ग्रह से आनेवाली प्रकाशधारी तेज लपलपाती किरण से जोड दिया और वह एकदम गायब हो गया।

ओगिल्वी लोगो को बुलाने के लिए शहर की ओर दौड़ गया। उसे सबसे पहले लदन का पत्रकार हैंडरसन रास्ते मे मिल गया। वह चिल्लाया, "हैंडर, क्या तुमने रात को एक तारा टूटते हुए देखा था ?"

"हा-हा, क्यो क्या हुआ ? तारा टूटना तो कोई बड़ी बात नही है।"—हैंडरसन ने कहा। "तारे तो टूटते ही रहते हैं।"

'लेकिन वह तारा यहा से कुछ दूर पर पडा है, और सचमुच वह तारा नही है। वह कोई रहस्यमय सिलिण्डर है। चलो मैं तुम्हे दिखाता हू।"—ओगिल्वी हैंडरसन को उसी जगह पर ले आया। दोनो ने उसी हालत मे अधखुले बोतलनुमा विशाल सिलिण्डर को वहा ज्या का त्या पडा देखा। ओगिल्वी ने कहा—"हमे फौरन और लोगो को सहायता के लिए बुलाना चाहिए।"

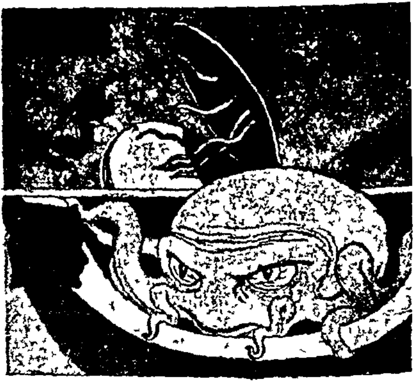
"और मैं अभी लदन के सभी अखबारो के लिए तार से खबर भेज देता हू।"—हैंडरसन ने कहा।

दूसरे दिन यह खबर कई अखबारो मे छप गई। जब ,मैं ओगिल्वी के साथ उस जगह पर पहुचा तो वहा सैकडो आदमियो की भीड लगी थी। वे टार्च और मशालें लेकर उस चीज को देखने के लिए एक-दूसरे से धक्कम-धक्का कर रहे थे।

सिलिण्डर का मुह धीरे-धीरे खुल रहा था। ओगिल्वी बोला—"अवश्य ही इसमे कोई प्राणी है। वह देखो सिलिण्डर का मुह खुलकर नीचे गिर गया है।"

कुछ ही देर मे साप की पूछ जैसी कोई मुलायम चीज हमारी ओर हवा मे बढने लगी। हम लोग कुछ पीछे हट गए। धीरे-धीरे कई लम्बी जीभें बाहर की ओर आती दिखाई दी। थोडी देर मे मास की कई लम्बी-लम्बी रस्सी जैसी जीभो वाला भूरा-सा फुटबाल जैसा गोल मास का लोथडा बडी मुश्किल से सिलिण्डर मे से निकलकर धप से गड्ढे मे कूद गया। कुछ देर बाद इसी प्रकार का दूसरा अदभुत प्राणी उस सिलिण्डर मे से निकलकर उसी गड्ढे मे कूदा। मैं उछलकर पेड की आड मे छिप गया।

थोडी ही देर मे दो काले-काले कीडे जैसी शक्ल के मुडे हुए पूछ जैसे अग मुझे उस गड्ढे के ऊपर उठते हुए दिखाई दिए। उस पार सूरज डूब



सिलिंडर से निकलता हुआ लम्बी जीभ वाला लाल प्राणी

रहा था। उसकी डूबती रोशनी में दो पूछ जैसी पेंचदार शक्लें उभरकर नीचे छिप गई। इसके बाद एक पतली-सी मोटी छडी जिसमें कई जोड थे, ऊपर उठी और हर जोड में से उतनी ही लम्बी छडिया निकली। कई छडियो के ऊपर एक गोल चक्का-सा भी लगा हुआ था।

जैसे ही मैंने दूसरी ओर देखा, सामने पत्रकार महाशय सफेद झडा दिखाते हुए भीड के आगे खडे थे। हम लोग समझ गए कि ये लाल ग्रह मगल के लाल प्राणी हैं। हम लोग सोचने लगे कि इनसे कुछ बातें करें। मगर इससे पहले ही उस गड्ढे में से आग की लपटें निकलने लगी। फिर



मंगल से आने वाले विध्वंसक सिलिण्डर की घातक किरणें

गड्ढे के ऊपर भैकड़ा जैसी कोई मोटी चीज उठी और उसमें से तेज रोशनी की किरणें फूट पड़ी।

ऐसी चकाचौंध करने वाली रोशनी हमने पहले कभी नहीं देखी थी। चारों ओर रोशनी और उसकी जलाने वाली किरणें फैल गईं। सूरज डूब चुका था। चारों ओर हल्का अंधेरा था। लेकिन रोशनी की किरणों ने अंधकार में अनोखी जगमगाहट फैला दी। सारे मैदान में धुआं और चिन-गारियां फूट रही थी। मेरी बगल से सुनसाने वाली किरणें तेजी से निकल गईं और मैं जान बचाकर घर की ओर भागने लगा।

रास्ते मे कई लाशो से टकराता हुआ मैं घबराकर घर की ओर भागा जा रहा था। तमाशा देखने वाले बहुत से लोग प्राणघाती किरणो के शिकार हुए जमीन पर मरे पड़े थे। कुछ दूर भागने के बाद मुझे हवा म घुटन-सी लगने लगी और मैं पास ही रेलवे स्टेशन की रेलिंग के सहारे मुह के बल गिर पडा।

जब मैं उठा तो रेल की सीटी मेरे कानो मे पडी। म उठकर स्टेशन पहुचा। बहुत से लोग जमा थे। मैंने पागल की तरह कुछ मुसाफिरो को रोककर पूछा—"उस गड्ढे की क्या खबर है सब ठीक तो है न ?"

एक औरत ने कहा—'आपका दिमाग तो ठीक है ? कौन-सा गडढा ? कसी खबर ?"

"क्या आपको नही मालूम, यहा से कुछ दूर मगल ग्रह के लाल प्राणी जमीन पर उतर हैं—वे—वे—वे—' मैंने हकबकाते हुए कहा।

"लगता है इस आदमी का दिमाग फिर गया है"—यह कहकर सभी लोग चल दिए। मैं खुद पछताने लगा कि इनको यह सब मैंने क्यो बताया। क्या वे इस बात पर भरोसा कर लेंगे कि लदन मे मगल लोक के प्राणी भी आ सकते हैं।

मैंने घर आकर अपनी बीवी को सारी बात सुना दी। वह भी अचरज मे डूब गई। मैंने कहा—"कुछ भी हो, वे लाल प्राणी गड्ढे मे ही रहेंगे। पृथ्वी की सतह पर वे नही आ सकते।"

'ऐसा क्यो ?"

"इसलिए कि मगल के मुकाबले पृथ्वी पर खिचाव की शक्ति (गुरुत्वाकर्षण) तीन गुना ज्यादा है। पृथ्वी पर आकर लाल प्राणियो का भार तीन गुना बढ जाएगा। यहा तक कि वे आसानी से चल फिर भी नही सकेंगे।'—मैंने अपनी बीवी को सारा रहस्य साफ-साफ समझा दिया।

मैंने खाना तो खा लिया। मगर मैं फिर सोचने लगा। अगर हम उस गड्ढे मे एक बम छोड दें तो क्या वे तहस-नहस नही हो जाएगे। लेकिन उनके पास तो इस्पात की इतनी मजबूत मशीनें हैं कि उनपर बम का कुछ भी असर नहीं होगा। मैं समझता हू कि वे पृथ्वी पर भी उन्ही मशीनो की सहायता से काम कर सकेंगे। फिर गुरुत्वाकर्षण क्या करेगा। बस मैं खाना-

खाते-खाते यही बातें सोचता रहा।

रात हो गई। ११ बजते-बजते अखबारो मे छपी मरने वालो की खबरो के कारण फौज की कई टुकडिया गड्ढे के चारो ओर मोर्चा लगाकर बैठ गईं। कुछ घुडसवार, कुछ टैंक, तोपो और सैकडो सिपाहियो ने उस गड्ढे को घेर लिया। रात के बारह बजे थे। मुझे बडी बेचैनी थी। जैसे ही मैं बाहर निकला, एक और तारा भी टूटा। आकाश से धरती तक एक रोशनी की लकीर फैल गई। यह मगल के लाल प्राणियो का दूसरा सिलिण्डर था जो पृथ्वी पर उतरने लगा।

रात बडी बेचैनी से कटी। सुबह हुई। दूध लाने वाला भी फौज की चर्चा करने लगा। मैंने कहा यह फौज मगल के लाल प्राणियो को मारने के लिए जमी हुई है।

उसने कहा—"हम लाल प्राणियो को मारने की बजाय उन्हे जीवित ही क्यो न पकड लें। फिर देखें कि एक लोक के वासी दूसरे ग्रह पर कैसे रहते हैं।"

उस आदमी की बातो मे बडा हल्कापन था। मैं नाश्ता करके फिर उसी गड्ढे की ओर निकल गया।

सेना की टुकडिया जमी हुई थीं। पता चला कि मगल लोक से तीसरा सिलिडर भी आ पहुचा है। सेना के लोगो ने मुझे गड्ढे तक नही जाने दिया। मैं लौट आया। मेरे दिमाग मे बडी-बडी बातें उठ रही थी।

शाम होते ही तोपो की गडगडाहट गूजने लगी। आकाश मे धुआ छा गया। धरती भी जैसे काप गई। मैंने खिडकी खोलकर देखा—दूर तक लाल धुआ उठ रहा है। जैसे दिवाली के दिन बच्चो ने हजारो आतिशबाजिया चलाई हो। चारो ओर पेडो से लाल-लाल लपटें निकल रही थी। मैं इस भयानक दृश्य को देखकर अपनी पत्नी को कमरे से बाहर लॉन मे घसीट लाया। कुछ देर बाद भयानक धमाका हुआ और मेरी रसोई की पक्की चिमनी टुकडे-टुकडे हो गई।

मेरी बीवी चीखकर रोने लगी, "आखिर यह सब क्या हो रहा है।" मैंने उसे पकडकर छाती से लगा लिया। "घबराओ मत मगल के लाल प्राणियो से हमारा युद्ध छिड गया है। अब बचना मुश्किल है। चलो यहां

भाग चलें।"

सामने सेना के घुड़सवारों की टुकड़ी घातक तेज लपटों और किरणों से बचती हुई शहर की ओर भागी आ रही थी। मेरी बीवी बिलखकर रो उठी—"अब कहा चलोगे।"

"लैदरलैण्ड, तुम्हारे भाइयों के पास। जल्दी करो। मैंने एक घोड़ा गाड़ी तय कर ली है।" अब अपनी पत्नी को लेकर आग, धुआ और गैस के बादलों को चीरते हुए हम दूसरे शहर की ओर दौड़े जा रहे थे। पीछे मुड़ कर देखा—सारा आकाश लाल था। धरती लाल थी और सारा गाव आग की लाल लपटों में झुलस रहा था। मैंने डरकर दोनों आखें मूद लीं और घोड़े को चाबुक मारकर और तेज कर दिया।

मेरा मन, आत्मा और शरीर बड़े बेचैन थे। किसी तरह हम लदरलैण्ड पहुच गए। पत्नी को वहा छोड़कर मैं घोड़ागाड़ी को वापस करने के बहाने फिर उसी धधकते गाव की ओर लौट पड़ा। अधेरी रात थी। काले अधेरे में कभी-कभी हरी रोशनी चमकती। सभी कुछ वीरान हो चुका था।

मैं गाव के पास पहुच ही रहा था कि अचानक मेरे खुले मुह पर अजीब सी फुहारें पड़ने लगीं। मैंने मुह पोछकर सामने की ओर देखा तो एक भीम काय चमकदार धातु का इजिन बबूल के पेड़ों को उखाड़ता हुआ एक अजीब सी आवाज के साथ घड़घड़ाता चला आ रहा था। वह नजदीक आकर मुझे चपेट मे लेने ही वाला था कि मैं घोड़ागाड़ी से उछलकर पास के एक तालाब म कूद पड़ा और घोड़ागाड़ी वहीं टूटकर बिखर गई।

काफी देर बाद जब मैंने छिछले तालाब से उठकर झाका तो सब कुछ शात था। आधी मील दूर दोनो मशीनें रुककर खड़ी थीं। यही वह जगह थी जहा रात को तीसरा सिलिंडर उतरा था। मैं उठकर उन भीमकाय यत्रों की नजरों से बचता हुआ अपने टूटे फूटे घर की ओर दौड़ पड़ा।

घर आकर मैंने रसोई से कुछ निकालकर खाया और चैन की सास ली। फिर खिड़की के पास आकर दूर खड़ी उन मशीनों को देखने लगा। ऐसे सहारक विशाल यत्र मैंने जीवन मे कभी नहीं देखे थे। ये लड़ाकू मशीनें थीं। इनमे बैठकर मगलवासी उन्हें टैंक की तरह चला रहे थे। मेरी हालत ठीक ऐसी थी जैसे कोई कुत्ता या लोमड़ी किसी रेलगाड़ी को देखे और



मानव सभ्यता का विनाश करने वाले मंगलवासी

अचरज करे। मुझे लगा कि निश्चय ही मंगल के लाल प्राणी विज्ञान में हमसे बहुत आगे हैं।

खिड़की के किवाड़ के सहारे किसी के सिर टकराने की आवाज से मैं चौंका। सामने एक फटेहाल और घायल सिपाही खड़ा था। मैंने उसे फौरन अंदर बुला लिया। उसने बताया कि उस दिन शाम को सात बजे जैसे ही हम लोग अपने हथियारों से लैस उस गड्ढे पर धावा बोलने लगे, अचानक इस भीमकाय मशीन ने ऐसी किरणें छोड़ी जिनसे तुरत हमारे गोला-बारूद और सारे हथियार व सेना नष्ट हो गई। चारों ओर आग और धुआं के सिवाय कुछ न था। बहुत से सिपाही मर गए और मैं जान बचाए कई दिन तक तुम्हारे टूटे मकान में छिपा रहा।

अब मुझे खिड़की से तीनों भीमकाय मशीनें तैयार खड़ी दिख रही थीं। चारों ओर संहार करने के बाद अब वे लंदन की ओर बढ़ने वाली थीं।

तीन लम्बे पैरों पर चलने वाली मशीनों में दो हनुमान जी जसी लम्बी पूँछें लगी थीं। ये बडी-बड़ी इमारतें, पेड़-पशु और किसी भी चीज को अपनी जकड़ में लेकर नष्ट कर देती थीं। ऊपर के गोल सिरनुमा हिस्से में मंगल के वैज्ञानिक बैठे हुए इन मशीनों को चला रहे थे। क्षणभर के लिए मेरे दिमाग में लंदन की बरबादी का सारा नजारा घूम गया।

मेरे भाई ने अनेक यात्रियों को साथ लेकर एक स्टीमर (पानी का एक छोटा जहाज) लिया। वह जान बचाने के लिए फ्रांस की ओर भागने लगा। किन्तु एक मशीन उन्हें भागता देखकर समुद्र में उतर गयी और तेजी से स्टीमर का पीछा करने लगी। उसके पानी में उतरते ही समुद्र में हिलोरें उठने लगीं। स्टीमर डावाडोल होने लगा। फिर भी स्टीमर की रफ्तार बहुत तेज थी। थोडी देर में स्टीमर को बचाने के लिए एक विशाल पनडुब्बी वेधक जहाज आता दीख पडा। जहाज बहुत बडा था। उसने पास आते ही उस विशाल मशीन की ओर गोला दाग दिया। दूसरे ही क्षण मंगल की मशीन से तेज किरणें निकली और विशाल जहाज चूर-चूर होकर समुद्र की लहरों पर बिखर गया।

स्टीमर बचकर दूसरी ओर निकल गया। चलते-चलते मेरे भाई ने स्टीमर से पीछे झांक कर देखा तो वह विशाल मशीन समुद्र में बिखरे जहाज के टूटे हुए हिस्सों को उठा कर देख रही थी। वह तीन पैरों से समुद्र की छाती पर आराम से खडी थी। थोडी देर में फिर तेज रोशनी हुई। हमने देखा आकाश से अब चौथा सिलंडर उतर रहा है।

मेरा साथी वह सिपाही अपनी खोई हुई सेना की टुकडी की खोज में चला गया। मैं भी वापस लैदरलैंड अपनी पत्नी से मिलने चल दिया। मैं पैदल ही चलता जा रहा था। रास्ते में एक बस्ती के पास मुझे एक पुरानी चीजों की खोज करने वाला (पुरातत्त्वशोधी) मिला। उसने कहा— 'मैं बहुत भूखा और प्यासा हू। क्या आप मेरी कुछ सहायता करेंगे ?"

मैंने कहा— आइये इन टूटे मकानों की रसोइयों में देखते हैं। शायद कुछ खाना मिले। मैं खुद भी बहुत भूखा हूँ।

हम दोनों एक टूटी इमारत में घुस गए। सचमुच रसोईघर खाने की चीजों से भरा था। जैसे ही हम दोनों खा-पी रहे थे, अचानक भयकर हरी

रोशनी ने हमे चकाचौंध कर दिया। फिर भूकप और धडधडाहट की आवाजें हुई। ऐसी आवाजे मैंने पहले नही सुनी थी। मैं और मेरा साथी दोनो भूमि पर एक ओर लुडक कर बेहोश हो गए।

जब हम उठे तो मकान गिर चुका था। उसके खभो और शहतीरो के बीच मे मैं बचा हुआ था। भूमि पर लुढ़का हुआ मेरा साथी मलबे मे दब गया था। मैंने गदन उठाकर झाका तो वह धातु की पूछ सामने खडी विशाल मशीन से निकल कर इस टूटे हुए मकान की तलाशी ले रही थी। मैं उठकर टूटी हुई रसोई के कोने मे बनी कोयले की कोठरी की ओर जान बचाने के लिए भागा। वह धातु की लम्बी पूछ मेरा पीछा करने लगी। उसने अपने रास्ते से मलवे को हटाया और तेजी से कोयले की कोठरी मे घुसने लगी। मैं डर कर कोयलो के ढेर पर उल्टा गिर पडा। लम्बी पूछ मेरे जूते की एडी से टकराई। मैंने सोचा अब जान गइ। मेरी चीख निकलने ही वाली थी कि मैंने कस कर अपने हाथ को दातो से काट लिया। पूछ ने कोयले के ढेर को अपनी जकड मे लपेटा और बाहर निकलने लगी।

मैं कई दिनो तक भूखा-प्यासा डर के मारे उसी मलवे मे छिपा रहा। जब मैं उठा तो सूरज निकल चुका था। आकाश साफ था। मैं इसी मकान के मलवे के ढीबो पर चढ कर देखने लगा। चारो ओर एक अजीब मनहूस शाति थी। कुछ लोग गिरे हुए मकानो के मलबे को हटा कर लोगा की लाशें बीन रहे थे। एक खरगोश अपनी माद से निकल कर उन आदमिया की ओर देख रहा था। जसे वह कह रहा हो—'हे बुद्धिमान मानव ! तेरी बुद्धि कहा गई। अब तू मगल ग्रह के प्राणियो के आगे बुद्धिमान क्यों नही रहा !' मैं सचमुच उसी कल्पना मे वह गया।

मुझे लगा सचमुच बुद्धि के बल पर ही हम जीव-जन्तु या अन्य पशु—पक्षियो से अलग हुए हैं। अन्यथा मनुष्य और पशु मे अन्तर ही क्या है। लकिन मगल के प्राणिया ने हमे विज्ञान की ताकत से पछाड दिया है। हम उनका कुछ भी न कर सके और हमारी मारी बुद्धि और विज्ञान पिटारी मे बद होकर रह गया। मुझे लगा कि मैं भी अब एक बौद्धिक प्राणी नही—केवल पशु हू।

केवल एक पशु जिसके पास सामान्य चेतना और बुद्धि होती है, ज्ञान-

विज्ञान नहीं।

मैं यहां थका-मादा टूटे-फूटे रास्ते से चलते-चलते घास के पास आ गया। यहां पानी बह रहा था। मैं वहीं बैठ गया। सर्दी बढ़ने लगी और मैं उठकर एक सूनी सराय मे चला गया। रात यूं ही गुजार दी। सुबह फिर रगता-रेंगता और उस महाप्रलय के दृश्य को देखता हुआ, मैं लदरलैंड की ओर बढ रहा था। ठीक ऐसे ही जसे कोई चूहा अपनी जान बचा कर घर की ओर भाग रहा हो। सड़क के दोना ओर नरसहार और विध्वस के दृश्य थे। मुझे लग रहा था जसे दूर-दूर तक मैं अकेला प्राणी ही जीवित बचा हू। बाकी सब कुछ युद्ध मे नष्ट हो गया है।

सहसा एक झाडी मे कुछ खरखराहट-सी हुई। लगा जैसे कोई अन्य जन्तु भी जीवित हैं। फटेहाल सिपाही मेरी ओर देखकर मुस्करा रहा था। मुझे एक नई जिन्दगी के दर्शन हुए। "तुम कहा से आ रहे हो ?" उसने पूछा।

"मेरा गाव वही था, जहा मगलग्रह का पहला राकेट आकर गिरा। मैं चौथे राकेट के गिरने से एक मकान मे दब गया और अब किसी तरह जान बचाकर अपनी बिछडी हुई पत्नी से मिलने लैंदरलैंड की ओर जा रहा हूं।" —मैंने उसे सारी कहानी सुना दी।

अरे तुम तो वही आदमी हो, जिसके घर मैं एक रात ठहरा था।"—सिपाही ने हक्बकाकर कहा।

'हा, हा, मुझे याद आ गया। लेकिन अब मगलवासी कहा हैं।'—मैंने पूछा।

'वे अब लदन से काफी दूर चले गए हैं। कई दिनों से उन्हें नहीं देखा।"

'मेरी समझ मे नही आता कि मगल के प्राणी आखिर हम लोगों से क्या चाहते हैं ? मैंने उस घायल सनिक से पूछा।

"कुछ भी हो, मुझे लगता है कि वे पृथ्वी पर अपना साम्राज्य बनाना चाहते हैं। वे धीरे धीरे सारी पृथ्वी को जीत कर मानव जाति को अपना दास बना लेगे एसा लगता है।" इसीलिए वे भयानक युद्ध कर रहे हैं। उस सनिक ने अपनी बुद्धि जसी ही बात कही।

ओहो, यह भी कोई युद्ध है। यही चींटी और दानवों के बीच युद्ध

होता है। कहा हम और कहा मगल ग्रह की दैत्याकार संहारक मशीनें। हम लोग चाहें कितनी ऊची ऊची इमारतें बना लें, विज्ञान के बल पर आकाश और समुद्र पर पहुच जाए, लेकिन हमारे सभी करतब चींटियो की तरह ही रहेंगे। मगल के प्राणी कभी भी आकर हमारे मसूबो को तहस-नहस कर सकते हैं। यह हमारी कसरी हार है।"—मैं चुप हो गया और वह सिपाही मेरी ओर आखें फाडे देख रहा था।

"आप ठीक ही कह रहे हैं। पहले वे हमारे विमान, जहाज और रेलवे को नष्ट करेंगे। हमारी सैनिक शक्ति को भस्म कर देंगे। फिर वे हमे कीडे-मकोडो की तरह पकड कर अपने अजायबघर मे कद कर लेंगे। हम लोग गुफाओ मे छिप जायेंगे। सारी सभ्यता नष्ट हो जायगी और फिर नये सिरे से मानव का आदिम जीवन शुरू होगा। वे खोज-खोज कर हमारा शिकार करेंगे। और हम से दासो और पालतू जानवरो की तरह काम लेंगे।"—उस सिपाही ने मानव जाति का भविष्य स्पष्ट घोषित कर दिया।

"यह असभव है। ऐसा हरगिज नही होगा।"—मैं चीख उठा और वह सिपाही गर्दन झुकाए खडा रहा। उस सिपाही की बातो ने मेरा मन फेर दिया।

मैंने एकदम लौट कर लैंदरलैंड की बजाय लदन जाना तय किया। मैंने सोचा वहा पहुच कर मैं लैंदरलैंड के बारे में पता करूगा। अपनी पत्नी की खोज करूगा और मैं उल्टे पैर लदन की ओर चल पडा।

मैं लदन की सडको पर आ गया। अब मैं लदन की ध्वस्त सडको पर आवारा की तरह घूम रहा था। सारा नगर सुनसान था। कुछ भयानक आवाजें उत्तर की ओर से आ रहीं थी। मैं दौडता हुआ उसी ओर चलने लगा। बडी भयानक आवाजें थी। धीरे धीरे आवाज कम होती जा रही थी।

मैंने पहुच कर जो दृश्य देखा उसे मैं जीवन मे कभी नही भूल सकता। लाल प्राणियो की दैत्याकार मशीनें उल्टी पडी थी। उन मशीनो के अदर और बाहर मगल के प्राणी मरे पडे थे। मैं आश्चर्य मे डूब गया। सहसा यह सब कैसे हो गया। अब मैं शेर की तरह उन मशीनो की ओर झपटा। पास पडा एक डडा उठा कर मैंने मास के उन लोथ जैसे प्राणियो को कुरेदा वे सचमुच मर चुके थे।

उन्हें मारा था पृथ्वी के अदृश्य प्राणी—विषाणु और रोगाणुओं ने। क्योंकि मंगलवासी मानव युद्ध के लिए तैयार होकर आए थे। किन्तु इन सूक्ष्म और अदृश्य जीवाणुओं से लड़ने के लिए उनके पास कोई भी विज्ञान या अस्त्र-शस्त्र नहीं थे।

कुदरत के इस खेल को देखकर मैं दांतों तले अंगुली दबा गया। मैं मन ही मन प्रकृति को धन्यवाद देने लगा। ईश्वर ने इन जीवाणुओं से लड़ने की और इनके आक्रमण को सहने की शक्ति केवल आदमी को ही दी है और किसी लोक के प्राणी को नहीं। धन्य है ईश्वर की महिमा।

कुछ ही घंटों में तार और बेतारों से सारे संसार में मानव विजय का समाचार फैल गया। मंगलवासी वापस लौट गए और कुछ मारे गए। अब शरणार्थी लोग वापस लौट रहे थे। हजारों की भीड़ मेरे सामने से गुजर रही थी। बड़ा करुण दृश्य था।

मैं खड़ा-खड़ा प्रकृति की इस विजय पर खुशी के आंसू छलका रहा था। मन ही मन भगवान से दुआएं कर रहा था। इतने में ही शरणार्थियों के समूह से निकल कर भागती हुई मेरी पत्नी मेरे पास आ गई। वह मुझसे लिपट कर रोने लगी। हम एक दूसरे से कई क्षणों तक ऐसे लिपटे रहे जैसे हम एक दूसरे में हमेशा के लिए खो गए हों।

भीम भोजन

कभी-कभी आप अखबारों मे 'सुपर बेबी' की खबर अवश्य पढते होगे। कोई बच्चा वैज्ञानिक भीम भोजन से पचासों फुट तक लम्बा चौडा और बलिष्ठ हो सकता है इसकी कल्पना एच० जी० वेल्स ने अपने प्रसिद्ध वैज्ञानिक उपन्यास 'फूड ऑफ गाड्स' मे की।

दो वैज्ञानिकों ने मिलकर भीम भोजन का नुस्खा बनाया और पहले उसे मुर्गियों को खिलाकर देखा। सफलता मिलने पर जिन जिन बच्चों ने, मक्खियों ने और चूहों ने इस भोजन पर हाथ साफ किया, वही भीमकाय हो गया और सामान्य कद और आकार से अधिक भीम होना समाज मे एक समस्या बन गया।

इन्हीं भीम बालकों और भीम राजकुमारी के बौने लोगों के सघर्ष की कहानी को लेखक ने रोचक ढग से इस उपन्यास मे बाधा है।

—सम्पादक

बैंसिगटन और रैडवुड ने एक नयी खोज की। उन्होंने एक ऐसा भोजन तैयार किया जिसके खाने से पेड-पौधे और पशु-पक्षी ही नही बल्कि आदमी के बच्चे भी तेज रफ्तार से बढते थे। इस खुराक को खिलाकर किसी भी प्राणी को पाच से दस गुना तक बढाया जा सकता था। इसलिए इस खुराक का नाम इन्होंने 'भीम भोजन' रख दिया। अब सवाल यह था कि खुराक पहले किसको खिलाई जाए।

अचानक बैंसिगटन के दिमाग मे एक विचार आया। क्यों न हम मुर्गे-मुर्गियों को खिलाकर इस भोजन की करामात देखें। स्किनर दम्पति को यह काम सौंपा गया कि वे मुर्गे-मुर्गियों को रोज भीम भोजन खिलाए और

उनकी बढवार को रोजाना देखते रहें।

इनके मुर्गीखाने मे दो तरह की मुर्गिया थी। एक वे जिन्हें यह खुराक दी जाती थी, दूसरी वे जिन्हें यह खुराक नहीं खिलाई जाती थी। सात दिन बाद जब बैंसिगटन ने खुराक दिए जाने वाली मुर्गियो के चूजो को देखा तो वे अन्य चूजो से वजन में चार गुना भारी और आकार मे छ-सात गुने बड़े देखे गए। उसने तुरन्त अपने साथी रेडवुड को तार दे दिया कि हमारा परीक्षण सफल हो गया है और चूजे तेज रफ्तार से बढ़ रहे हैं।

एक दिन अखबार मे खबर छपी—'केन्ट मे कबूतर के बराबर की मक्खिया देखी गइ।' रैडवुड और बैंसिगटन फौरन समझ गए कि स्किनर ने भीम भोजन बनाते समय बतनो को खुला छोड दिया है। इसलिए जिन जिन मक्खियो ने यह भोजन खा लिया वे सभी कबूतर के बराबर हो गइ। उनके उडने पर मोटर जैसी भरभराहट की आवाजें होती हैं। दोनो वैज्ञानिक केन्ट आए और एक मक्खी को गोली मारकर गिरा दिया। यह लगभग उल्लू के बराबर थी। यह कई हलवाइयो की दुकानो पर उनके बर्तनो को भी तोड फोड चुकी थी।

वैज्ञानिक रैंडवुड ने अपने बच्चो को इस भोजन का थोडा-सा भाग दूध म मिलाकर खिला दिया। बैंसिगटन ने कहा—"अब तुम्हारा बच्चा बहुत जल्दी बडा हो जाएगा और तुम्हारे लिए एक मुसीबत पदा कर देगा।"

तुम ठीक कहते हो। लेकिन हमारी आने वाली पीढी बडी मजबूत और ताकतवर हो तो क्या हज है ? रैंडवुड ने पूछा।

'तुम नही जानते इस खुराक को मच्छर, चूहे, मक्खी या मुर्गिया जिसने भी खाया, वे ही बेहिसाब बढ गए। अगर इस बात का किसी को पता चल गया तो हम लोग फौरन पकड लिए जाएगे।" बसिगटन बोला।

"ठीक है। लेकिन श्रीमती स्किनर कह रही थी कि अगूर और पान की बेलें भी इस खुराक से अधाधुध बढने लगी हैं।'

श्रीमती स्किनर इस खुराक की करामात से बडी खुश हुई। वह सोचने लगी कि वैज्ञानिक भी कितने बेवकूफ हैं कि इतने कीमती भोजन को मुर्गियों को खिलाकर बरबाद कर रहे हैं। यह सोचकर उसने भोजन के कई टिन भरे और आइब्राइट मे अपनी लडकी के पास भागने की तैयारी करने

लगी।

जैसे ही वह चलने लगी। उसने देखा बडी-बडी मुर्गिया प्यासी और भूखी हैं। उन्होंने सोचा अगर यह भूखी-प्यासी मर गई तो इनकी हत्या का पाप उसके सिर लगेगा। उसने दरवाजा खोलकर इन मुर्गियो को आजाद कर दिया, और वह तेजी से कदम बढाती हुई अपनी लडकी के गाव की ओर चल दी।



भीम भोजन से पली विशालमुर्गी ने बच्चे को पकड़ लिया

आजाद मुर्गिया कस्बे की ओर निकल गईं। एक मुर्गी ने स्कूल जाते हुए बच्चे को अपनी चोच मे उठा लिया। खिडकी से श्रीमती डकन ने देखा वह डाक का थैला पटककर बच्चे को बचाने दौडी। लेकिन मुर्गी उल्टे उन पर झपट पडी। इतने मे ही उनके पति दौड और कसकर चार-पाच लाठिया मुर्गी की पीठ पर जमाईं। तब कही उसने बच्चे को छोडा और एक खपरल पर जा बैठी। सारे कस्बे मे तलहका मच गया।

इतने मे ही कुछ सरकस वाले आए और इन मुर्गियो को पकडकर ले गए। दूसरे दिन मुर्गियो की खबरें बहुत से अखबारो मे छपी। अखबारों की खबरों को देखकर दोनो वैज्ञानिक बडे अचरज मे पड गए।

एक दिन रैंडवुड से वैंसिगटन ने पूछा—"अब तुम्हारा बच्चा कैसा है ?"

"छ महीने का हो गया। उसका वजन ५० पौंड है। छ साल के बच्चे के बराबर लगता है। उसके पास कोई नर्स या आया नही टिकती। जिसे भी रखता हू वही उसके लात-घूसो की मार से घबराकर भाग जाती है। नर्सें कहती हैं—"यह बच्चा नही कोई दैत्य है।"

"तब आप एक काम करिए। उसकी खुराक तुरन्त कम कर दीजिए।"

"मैंने कम करके देखा, लेकिन वह खाने के लिए बुरी तरह रोता चिल्लाता है।"—रैंडवुड बोला

"अगर उसे यही खुराक मिलती रही तो जल्दी ही वह ४० फुट का हो जाएगा। फिर उसके खाने-कपडे की व्यवस्था करना तुम्हारे लिए एक समस्या हो जाएगी।"—वैंसिगटन ने कहा।

रैंडवुड ने देखा सडक पर एक अखबार की गाडी जा रही थी। उस पर उस दिन की सबसे भयानक खबर लिखी थी—'दैत्यकार चूहो ने डाक्टर पर हमला बोला।' वह दौडकर गया और एक अखबार खरीद लिया। खबर थी—घोडे पर जाने वाले डॉक्टर पर कुछ बडे चूहो ने हमला बोल दिया। डॉक्टर तो जान बचाकर भाग गया लेकिन उसके घोडे को चूहो ने मार डाला। दोनो वैज्ञानिको ने बडे रहस्यमय ढग से एक दूसरे की आखों मे देखा और वहा से उठकर चल दिए।

उधर कोसर दम्पति ने अपने तीनो बच्चो को भीम भोजन खिलाना शुरू कर दिया। रैंडवुड के बच्चो की देखभाल करने वाले डॉक्टर ने अपने

और कई मरीजो को यह भोजन दे दिया। इन मरीजों में एक विदेशी राजकुमारी भी थी।

अचानक लदन में एक नये राजनीतिक नेता केटरहम को भीम भोजन का पता चल गया। उसने खुलेआम इसका विरोध करना शुरू कर दिया। धीरे धीरे भीम बच्चों और भीम भोजन के खिलाफ जनता भडकने लगी। इसके विरोध मे तरह-तरह के आदोलन चलने लगे।

रैडवुड का बच्चा जैसे ही ६ महीने का हुआ, उसने अपनी गाडी तोड डाली और नर्स पर झपट पड़ा। जब वह एक साल का हुआ तो उसकी ऊचाई पाच फुट थी। लदन मे ये बच्चे 'बूम फूड बेबी' (भीम बालक) के नाम से मशहूर हो गए। अब इनके खेलने का कमरा, बालबाडी आदि सभी कुछ बडी बनाने की समस्या सामने आई। ये रोजाना कमरे की मेज-कुर्सी व हर चीज को तोड डालते। आया, नर्स और इनके मा-बाप सभी इनसे परेशान थे। उन दिनो अखबारो मे तरह-तरह की अजीबोगरीब खबरें छपने लगी और अफवाहें फैलने लगी। जैसे नदी के किनारे पानी के साप ने भेड को पकडकर मार दिया। बडी मक्खी व पतगो ने कई आदमियो को घेरकर परेशान किया।

शहर के बहुत से लोग भीम भोजन व बैंसिगटन के खिलाफ हो गए। एक दिन कुछ लोगों की भीड ने बैंसिगटन का घर घेर लिया। वह जान बचाने के लिए इधर-उधर छुपने की जगह तलाश करने लगा। बैंसिगटन के टाइपिस्ट ने दूसरे कमरे में ले जाकर उसे चारपाई के नीचे छुपा दिया और बाहर से ताला लगा दिया। बैंसिगटन का दिल जोर जोर से धडक रहा था। उसे बाहर के लोगो का चिल्लाना और गालिया साफ सुनाई पड रही थी। तभी अचानक किसी ने ताला खोला बैंसिगटन घबरा गया। किसी ने चारपाई के नीचे हाथ डालकर उसकी टाग पकड ली। वह चीखने ही वाला था कि आवाज आई "डरो मत, मैं कोसर हू। जल्दी भाग चलो। भीड ने मकान मे आग लगा दी है।"

"लेकिन हम भागेंगे कैसे ? बाहर की भीड तो हमे भेडियों की तरह नोच डालेगी।"—बैंसिगटन ने कहा।

"मैं तुम्हें पहनाने के लिए आया की पोशाक लाया हू। यह लो तुम्हारे

मजे सिर को ढकने के लिए मेरे पास टोप भी है। जल्दी करो।" कौसर ने उसे आया की पोशाक पहना दी और दोनो भीड़ की भगदड़ में जान बचाकर किसी तरह निकल भागे।

इन वैज्ञानिको के यहा काम करने वाली महिला श्रीमती स्किनर भी भीम भोजन के दो बड़े टिन लेकर कुछ दिन हुए भाग गई थी। उसके पुत्र केडलस के लडका हुआ और उसने उसे भीम भोजन खिलाना शुरू कर दिया। बच्चा इतनी जल्दी लम्बा-चौडा और वजनी हो गया कि चारों ओर इसका शोर मच गया।

जब यह बच्चा कुछ और बडा हो गया तो इसे गिरजाघर, स्कूल तथा वालबाड़ी आदि जगहा मे जाने की मनाही थी। लेडी वडरशूट भी परेशान थी क्योंकि यह रोज कही न कही खुराफात करता रहता था, उसने इसे किसी काम मे लगाने का इरादा किया। उसने उसे सारे दिन नदी के किनारो पर पत्थर जमाने का काम बता दिया। खेल का खेल और काम का काम। वह सिर पर टोप की तरह बेंत की कुर्सी को उल्टी रखे पत्थरो को नदी के किनारे-किनारे जमाता रहता। जब प्यास लगती तो वह किनारे पर लेटकर नदी मे मुह लगाकर पानी पी लेता।

इधर कौसर के तीनो लड़के भी बड़े हो गए। एक एक लड़का चालीस चालीस फुट ऊचा था। एक भाई ने तख्ते काटकर अपने लिए भारी और विशालकाय साइकिल बना डाली। सड़कें, मकान और आदमी इन्हें अपनी तुलना मे बहुत छोटे छोटे दिखने लगे। एक दिन तीनो भाई मिलकर अपने घूमने फिरने के लिए वड़ी चौड़ी सडक बना रहे थे। इतने मे ही सड़क के ओवरसियर ने इन्हें रोक दिया। ओवरसियर ने ऐतराज करते हुए कहा— 'सुनो भाई सडक बनाना फौरन बन्द कर दो। तुमने रेलवे, गैस-कम्पनी और कई कौंसिलरो की जमीन मे सडक खोद दी है। यह सरासर कानून के खिलाफ बात है।'

तीनो भाई बड़े परेशान थे। क्या हम अपने चलने लायक सडक भी नही बना सकते। कैसे अजीब कानून हैं। इन्हें पता चला कि इनका एक भाई रैडवुड भी है। ये चाहते थे कि हम साथ-साथ मिलकर रहे। और इन बौनो और हर बात मे कानून निकालने वाले छोटी तबियत के छोटे-

छोटे आदमियो से दूर जगल मे अपना बडा मकान बनाए और वही मिलकर दुनिया की भलाई के लिए कोई काम करें। अत मे ये लोग शहर छोडकर जगल मे रहन के लिए चले गए।

जिन जगली खरपतवारो को भीम भोजन मिल गया वे भी कुछ ही दिना मे विशाल पड बन गए। उधर सरकार की आज्ञा से बडे-बडे शिकारी, खिलाडी, नेता और पुलिस के लोग इन बच्चो को खोजने लगे। एक दिन उनमे से किमी ने देखा कि जगल म एक पठार पर तीन फुट लम्बा पैर का निशान बना है। अवश्य ही कोई भीम बालक यहा से निकला होगा।

रैंडवुड यहा से गुजरा था। वह जगल मे घूम रहा था। उसने देखा—उसी के बराबर की एक लडकी जिसकी ऊचाई आम के पेडो से भी ऊची ह, रडवुड को देखकर अपने पास बुला रही है।

रैंडवुड ने उसे सलाम किया, "शायद तुम भी हमारी तरह की भीम बालिका हो।"

'हा, मैं दुनिया मे इतनी बडी पैदा होकर तग आ गई हू। दुनिया हमे रखने के लिए तयार नही है।" राजकुमारी ने कहा—यह वही विदेशी राजकुमारी थी जिसे डॉक्टर ने खुराक खिलाकर तगडा बना दिया था। रडवुड और राजकुमारी मे बडा प्यार हो गया। उसी जगह दोनो रोजाना मिलते और एक दूसरे से प्यार की बातें करते रहते। एक दिन राजकुमारी ने कहा—"रैंडवुड, तुम नही जानते हम दोनो कितना बडा अपराध कर रहे हैं।"

"कैसा अपराध ? हम तो किसी से कुछ भी नही कहते।"—रडवुड ने चौंककर कहा।

"नही, मुझे तुम से प्यार नही करना चाहिए, मेरी शादी तो एक बौने राजकुमार से तय हो चुकी है।"—वह बोली।

"नही यह सब मैं कुछ नही जानता, मैं तुमसे ही प्यार करूंगा। चलो कल हम अपने और भीम भाइया के पास चलेंगे। उन्हाने हम सब के रहने के लिए जगल म बहुत बडा महल बना लिया होगा।"—यह कहकर रैंडवुड चला गया।

दूसर दिन भीमकाय राजकुमारी पहाडी पर खडी-खडी रैंडवुड का इतजार करने लगी। बहुत देर बाद उसने देखा रैंडवुड लगडाता हुआ चला

आ रहा है। पता चला कि कुछ जमीदारो ने उसे घेर लिया और घोडो पर चढकर उसका पीछा करते हुए गोलिया चलाईं और एक गोली उसके पैर मे लगी। शिकारी और जमीदार घोडे दौडाते हुए पेडो के झुरमुट से निकले और इन दोनो का पीछा करने लगे। इतने मे ही वह दोनो लम्बे लम्बे कदम बढ़ाते हुए कोसर भाइयो के बडे मकान की ओर दौड गए। इस तरह वे गोली चलाने वालो की आखो से ओझल हो गए।

भीमकाय कैडलस् काम करते-करते थक गया था। उसे लगा कि लेडी वडर शूट उसे बेवकूफ बना रही है। उसने गुस्से मे आकर दो चलते हुए ट्रको को लात मारकर एक-दूसरे से टकरा दिया और वह गाव छोडकर लदन शहर की ओर चल पडा।

चुनाव मे कैटरहम जीत गया। उसने भीम बालको को रोकने का कानून पास करा दिया। इन सभी भीमो को जगली बताया गया। जसे ही कैडलस् लदन की सडको पर दिखाई दिया, पुलिस ने उसे चारों ओर से घेरकर लदन के बाहर निकल जाने को कहा। उसने कहा ऐसा क्यों ? तो पुलिस अधिकारी ने बताया कि आपके सडक पर खडे होने से गाडियो का आना-जाना रुक गया है। हजारो गाडिया और राहगीर खडे हो गए और आपका तमाशा देखने लगे। अत आपको फौरन लदन से बाहर जाना होगा।

कैडलस इन सबकी परवाह किए बिना आगे बढता गया। वह सारी रात लदन की सडको पर इधर से उधर ऊधम मचाता हुआ घूमता रहा। सुबह होते ही उसे भूख लगी। उसने डबल रोटियो से लदी एक गाडी को रोककर खूब नाश्ता किया। इतने में ही पुलिस ने उसे आ घेरा। 'कैडलस् वापस गाव लौट जाओ। वरना हम गोली चला देंगे—" एक पुलिस अधिकारी ने चेतावनी दी। कैडलस् ने बिजली का एक लट्ठा उखाड लिया और वह पुलिस पर झपटने ही वाला था कि धाय से एक गोली चली और वह घायल हो गया।

कैटरहम ने देखा अब अच्छा मौका है। सारी जनता इन वैज्ञानिकों और भीम भोजन से पले भीम बच्चो के खिलाफ हो गई है। अत उसने रैडवुड को गिरफ्तार करने के आदेश दे दिए। बीमार रैडवुड अपने मकान मे नजरबद हो गया। उसने खिडकी खोलकर बाहर देखा, चारो ओर पुलिस



का कड़ा पहरा है। सामने दूरी पर लाल चमक दिखाई दे रही है। गोलिया चलने की आवाज आ रही है। उसे लगा कि उसका भीम बालक रडवुड राजकुमारी को साथ लिए पुलिस से जूझ रहा है। उधर अखबारो मे खबरें छप रही थी कि दुनिया के कोने-कोने म भीम बालक-बालिकाओ को खोज खोजकर मारा जा रहा है। रैंडवुड सड़क पर रो पड़ा। 'यह अन्याय क्या नया समाज म इन बच्चो को सुख शाति से जीने का अधिकार नही है।'

इतने मे ही एक आदमी बूढे रैंडवुड को कैटरहम के पास ले जाने के लिए बुलाने आया। रडवुड भडक उठा—' क्या कटरहम को इन बच्चो की हत्या करने से शाति नही मिली। वह मुझसे और क्या चाहता है।

'नही वह गलतफहमी दूर करने के लिए आपसे बातें करना चाहते हैं।" वह व्यक्ति बोला।

"क्या वह अभी भी मेरे बच्चो से लड रहा है।" रडवुड बोला।

'नही, युद्ध बन्द है। वे समझौता करना चाहते हैं। भीम बालक चाहते हैं कि मध्यस्थ के रूप मे उनकी ओर से आप सरकार से बात करें।"—उस व्यक्ति ने कहा।

रैंडवुड कटरहम से मिला। उसने एक उपाय सुझाया कि इन सभी भीम बालको को उत्तरी अमरीका या अफीका के जगलो म भेज दिया जाए। "जहा वे आजादी से जी सकें।' उसने कहा अगर इस शर्त पर वे राजी नही होते तो हमे मजबूरन पुलिस की कारवाई करनी पडेगी।

रैंडवुड ने कहा—' मैं अपने बच्चो से मिलकर बात करना चाहता हू।

ठीक है तुम जाकर उन्हे ठीक-ठाक कर दो।" कैटरहम ने रैंडवुड को एक मोटरगाडी से उन बच्चो के पास भिजवाने का इतजाम कर दिया।

ऊबड़खाबड रास्ते पर चलती हुई मोटर पर तेज रोशनी चमकी। गाडी रुक गई। कोसर यही था। उसने रडवुड को उतारा और कहा— 'सभी बच्चे नीचे गुफा मे घर बनाकर रह रहे हैं। तुम इनसे बात कर लो।"

रैंडवुड ने सभी बच्चो को इकट्ठा करके कटरहम की शर्तें सुना दी।

रैंडवुड ने कहा कि कैटरहम चाहता है कि—सभी भीम बच्चे दूसरे महाद्वीप मे रहे और शादी करके आगे सतान पैदा न करें। वे स्वय जब तक जिए अवश्य जिए।

"क्या तुम्हें यह शर्त मजूर है।" रैंडवुड ने पूछा।

वृद्ध रैंडवुड का लडका जिसके हाथ पर पट्टी बधी थी लगडाता हुआ आया और उसने सबको सबोधित करते हुए कहा कि हमे यह शर्तें हरगिज मजूर नही हैं। हम जानते हैं कि दुनिया मे बौने और भीम बच्चे साथ-साथ नही जी सकते। हम आखिरी दम तक वृद्धि और विकास को लक्ष्य बनाकर लडेंगे और कल सारे लदन पर भीम भोजन का बमबाडमेंट कर देंगे, ताकि सारे बौने उसे खाकर भीमकाय बन जायें।

उत्तर मे कोसर के तीनो पुत्र एक साथ बोले—"बिल्कुल ठीक है, हम आखिरी दम तक कैंटरहम से लडेंगे। अगर हम मिट भी गए तो भीम भोजन तो शेष बचेगा और उसे खाने वाली नई पीढी बडी होकर छोटे और बौने लोगो की दुनिया से हमेशा लडती रहेगी।"

"बिलकुल ठीक है। हमारी लडाई निरतर विकास की लडाई है। वृद्धि हमारा नही प्रकृति का नियम है। इस सघर्ष को कोई नहीं रोक सकता।"—यह कहकर भीमकुमारी रैंडवुड के पास आ गई। बुड्ढा रैंडवुड और कोसर चुप थे। वे लगभग बुझ चुके थे। उनमे भीमकाय नई पीढ़ी से जूझकर तक करने का साहस नही था। दोनो मौन होकर लौट पडे। क्षितिज पर भोर के धुधलके मे भुजा उठाए भीम बालक की आकृति धीरे धीरे उभर रही थी। वह कह रहा था—"हम लडेंगे आखिरी दम तक लडेंगे, बडप्पन और विकास को लाने के लिए।"

जुलेवर्न

फ्रांस में नांटे के पास फीडू द्वीप में २ फरवरी १८२८ को पीयर वर्न के यहा जुले का जन्म हुआ। उसके बचपन के दिन भी फीडू द्वीप मे बीते। समुद्र के किनारे आते-जाते जहाजो को देखकर उसका मन सागर के सौन्दर्य मे रम गया। वह कल्पनाशील बन गया। उसका पिता उसे अपनी तरह ही वकील बनाना चाहता था। किन्तु वह कल्पना में खोया रहता। अन्त म उसके पिता ने उसे पैरिस मे आगे पढाई करने के लिए भेज दिया। किन्तु उसका सारा समय तरह-तरह की पुस्तकें पढने और सोचने मे ही बीतता।

जुलेवर्न क्रांतिकारी विचारो के वैज्ञानिक लेखक बने। १९वी सदी मे फ्रास भर मे उनका नाम फैल गया और उनकी रोचिल कल्पनाओ ने लोगो को झकझोर दिया। १८५७ में २९ वर्ष की आयु मे उन्होंने समाज-सुधार मे क्रांति की और विधवा से विवाह कर लिया। मकाना की दलाली क साथ-साथ ही वे लेखन का धन्धा करने लगे।

जुलेवर्न बचे हुए समय मे नाटक और साहसिक कथाए लिखता रहता। १८६३ मे उसने पहला उपन्यास 'गुब्बारे मे पाच दिन' लिखा। बडी कठिनाई के बाद वह इस उपन्यास को एम० हेजेल नामक प्रकाशक से छपवा पाया। किन्तु यह उपन्यास इतना बिका कि जुले को उस प्रकाशक ने अपना प्रिय लेखक बना लिया। जुले की सबस प्रसिद्ध रचना 'समुद्र म २० हजार जन्तु' और फ्राम द अथ टू द मून' है। ये इनकी साहसिक और रोमाचक कृति मानी जाती हैं।

चांद का चक्कर

'चांद का चक्कर' (फ्राम अर्थ टू द मून) श्री जुलेवन की १६वीं शताब्दी की सबसे महान और स्वाभाविक वज्ञानिक कल्पना था, जो २०वीं सदी मे अमरीका के विज्ञान ने सत्य कर दिखाई। जिस दिन पहला मानव चाद पर पहुचा, अमरीका में बाल्टीमोर क्लब क लोगों ने खुशिया मनाई और जुलेवन पर टलिविजन में फिल्मे दिखाकर उनकी इस कल्पना के साकार होने पर आश्चय प्रकट किया गया।

इस उपन्यास मे बाल्टीमोर क्लब क कुछ वज्ञानिकों ने फ्लोरिडा के पास एक विशप तोप ढलवा कर चाद पर गोला भजा जिसमें आदमी व पशुओं तक को चान्द तक पहुचाने की कल्पना १६वीं शताब्दी में की गई। यह गोला चाद का चक्कर लगाकर वापस महासागर में गिर गया और सभी चन्द्रयात्री सुरक्षित चाद से लोट आए। इसी यथाथ की दृष्टि से आज भी इस वैज्ञानिक और ऐतिहासिक उपन्यास का बड़ा महत्त्व है। प्रस्तुत सकलन मे जुलेवन के अनक प्रसिद्ध उपन्यासों में से इसे चुनकर यहां प्रस्तुत किया गया है।

—सम्पादक

•

आकाश मे लालटेन की तरह लटकने वाले चाद को देखकर बाल्टीमोर गन क्लब के मालिक बारबीकेन नामक वैज्ञानिक के मन मे चांद पर पहुचने की लालसा जगी। यह १६वीं शताब्दी की शुरूआत थी। तब तक लोग चांद पर पहुचना अचरज और बड़े साहस की बात समझते थे। उस जमाने मे लोग जानना चाहते थे कि चन्द्रमा पर जीवन, वनस्पति और जलवायु कैसी है चन्द्रमा की बनावट कसी है। इसी जानकारी के लिए बारबीकन ने चन्द्रमा पर जान का पहले-पहल इरादा किया। उसने बाल्टीमोर गन

क्लब मे एक आम सभा बुलाकर कहा कि मैं बारूद की शक्ति से चन्द्रमा तक एक गोला भेजूगा। उसमे कई आदमी होंगे जो चाद तक पहुचेगे और वहा की पूरी खबर लाएगे। दूसरे दिन क्लब मे लाखों की तादाद मे लोग जमा हो गए और बारबीकेन की योजना का लोगो ने खूब स्वागत किया। १६वी शताब्दी मे अमरीका के लोग चाद को 'रात की रानी' कहा करते थे। दूसरे दिन फिर सभा बुलाई गई। इसमे बारबीकेन ने अपनी योजना को लोगो को अच्छी तरह बताया।—उसने कहा—धरती से चाद २,१८,६५७ मील दूर है। चाद पृथ्वी का उपग्रह है। यह खिचाव की शक्ति के सहारे आकाश मे लटकता रहता है। बडे-बडे ग्रहो के साथ चाद जैसे कई उपग्रह लटके हुए हैं। शनि के साथ ८ चन्द्रमा हैं। बृहस्पति के चार और बुध ग्रह के तीन चन्द्रमा हैं। चाद सूय की किरणो को और तेज चमकाता है। मेरा अनुमान है कि ६०० फुट लम्बी तोप से ४ लाख पौंड की विस्फोटक शक्ति वाला अल्मूनियम का गोला फेंककर चाद तक पहुचा जा सकता है। इस गोले का वजन १६,२५० पौंड होना चाहिए। सभी सुनने वाले लोग इस काम के लिए तैयार हो गए और चाद पर जाने की तैयारिया शुरू हो गई। अमरीका की जनता से पैसा इकट्ठा करने के लिए अखबारो मे विज्ञापन भी छपने लगे।

वरजीनिया मे सेना का कप्तान निकोल रहता था। यह भी वैज्ञानिक था। जैसे ही इसने बारबीकेन का विज्ञापन पढा, वह जल उठा और 'रिचमोड इन्क्वायर' के सम्पादक के पास पहुचा। "देखिये आप यह खबर छाप दीजिए कि बारबीकेन पागल हो गया है। चाद तक गोला फेंकने वाली तोप आज तक कोई नही बना सका और न बना सकेगा।"

'लेकिन आप क्या छपवाना चाहते हैं? क्या आप बारबीकेन को चुनौती देते हैं? —सम्पादक ने पूछा।

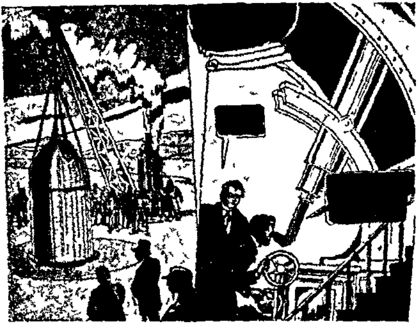
'जी हां, मैं दावे के साथ कह सकता हू कि बारबीकेन का यह इरादा फेल होगा। आप यह छाप दीजिए कि अगर पूरा रुपया इकट्ठा हो गया तो मैं उसे १००० डालर इनाम दूंगा। अगर ६०० फुट लम्बी तोप बन सकी तो मैं २००० डालर इनाम दूंगा। अगर वह तोप बारूद मे चल सकी तो मैं ३००० डालर दूंगा। अगर फायरमैन तोप दाग सका"

४००० डालर इनाम दूगा। अगर गोला छूट भी गया तो वह ६ मील से ऊपर नही जा सकेगा और जमीन पर गिरकर टुकडे-टुकडे हो जाएगा। अगर ऐसा नही हुआ तो मैं बारबीकेन को पूरे ५००० डालर इनाम दूँगा और शत हार जाऊगा"—निकोल ने सम्पादक को यह खबर लिखकर दे दी।

दूसरे दिन अखबार मे एक वैज्ञानिक के नाम दूसरे वैज्ञानिक की चुनौती छप गई। बारबीकेन ने भी उसका उत्तर छपवाने के बजाय निकोल को तार देकर उसकी चुनौती स्वीकार कर ली। बारबीकेन जानता था कि निकोल बडा हठी और ढीठ है। बारबीकेन अनेक वर्षों से सरकारी तोपखाने के डायरेक्टर थे। वे नये-नये गोलों को ईजाद करते थे। उधर कप्तान निकोल ऐसी प्लेट तैयार करता था जिस पर तोप के गोले का कोई असर न हो। किन्तु हर बार निकोल को हार माननी पडती थी। इस तरह दोनो म कई वर्षों से खीचतान चल रही थी। दोनो का पेशा एक-दूसरे के लिए स्पर्धा बन गया था।

अखबारो मे विज्ञापन छपते ही दस लाख की बजाय ५० लाख डालर का चन्दा इकट्ठा हो गया। अब बारबीकेन के सामने एक ही समस्या थी। उसे उस समय का इतजार करना था जब चाद धरती से सबसे अधिक करीब होता है। यह १८ साल की अवधि मे केवल एक बार ही होता है। अब १५ महीने बाद—दिसम्बर को सुबह दस बज कर ४० मिनट २० सेकिन्ड पर चाद को धरती के करीब होना था। तब तक तोप और गोला दोनो तैयार करना भी जरूरी था। इसके लिए ऊचा और अच्छा स्थान भी छाटना था। दक्षिण फ्लोरिडा के पास दो स्थान चुने गए। फ्लोरिडा के लोगो ने एक ही स्थान चुनने का आग्रह किया, जबकि टेक्सास मे ग्यारह स्थानो के लोगो ने पत्र लिख अपने-अपने स्थानो को इस काम के लिए उपयोग म लाने को कहा। बारबीकेन ने कहा—"अच्छा हो कि हम फ्लोरिडा के टैम्पा नामक स्थान पर ही अपना काम शुरू करें। क्योंकि फ्लोरिडा वालो ने केवल एक ही स्थान बताया है और टेक्सास के ११ जगहा के आदमी आपस म झगड रहे हैं कि ये काम उनके यहा शुरू किया जाये।

टैम्पा के पास एक मजबूत चट्टानी जगह को चुन लिया गया और वही तोपखाने की फक्टरी शुरू हो गई। कच्चा माल आने लगा। डेढ़ हजार लोग



चाद पर पहुचने की तैयारिया जोरो से चलने लगीं

काम पर लग गए। यहा बाल्टीमोर गन क्लब का बोड लगा दिया गया। अब चट्टान के नीचे ६०० फुट की जगह खोदकर तैयार करनी थी जहा तोप की नली ढाली जा सके। इस नली का व्यास ६० फुट और मोटाई ६ फुट रखी गई क्योकि इसमे ४ लाख पौंड का विस्फोटक पदार्थ भरना था और नली को फटने से बचाना भी जरूरी था। खुदाई यत्र, क्रेनें और अनेक मशीनें रात दिन काम करने लगी और कुछ ही महीनो मे ६०० फुट लम्बी नली ढालने के लिए खाचा तयार हो गया। चारो ओर गडढे मे पक्की चिनाई कराकर बीच मे चिकनी मिट्टी भर दी गई ताकि चारो ओर पोली नली ढल सके। अब लोहे की सलाखें लगाई जाने लगी। चारो ओर इस्पात की भट्टिया धधकने लगी और लोहा गल-गल कर उस खाचे में भरा जाने लगा।

२२ सितम्बर को ६०० फुट लम्बी तोप तैयार हो गई और निकोल २००० डालर की दूसरी शर्त भी हार गया। बाल्टीमोर के सदस्यो ने बार बीकेन, मेस्टन व कनल ब्लाम्सबेरी के साथ नली के पैदे मे भूमि के ६०० फुट नीचे बैठकर शानदार पार्टी की और खुशिया मनाई गई।

यह बाल्टीमोर क्लब और बारबीकेन की दूसरी जीत थी। नली के पास भाप से चलने वाली क्रेन लगा दी गई। यह क्रेन पाच-पाच डालर लेकर तमाशबीन लोगो को ६०० फुट नीचे ले जाकर सैर कराती थी। इन सफलताओ का समाचार ससार के अनेक अखबारो मे छपा और एक दिन पेरिस के माइकेल आडन का तार मिला—बारबीकेन के नाम। वह गोले मे बठ कर चाद पर जाने के लिए अपनी सीट रिजर्व कराना चाहता था। वह अटलाटा स्टीमर से फौरन ही फ्लोरिडा पहुच रहा था। तीनो लोग हसने लगे, 'अजीब पागल है। चाद पर जाने को कितना लालायित है।'

ज्योतिषियो ने घोषणा कर रखी थी कि चाद पर अनेक ठडे ज्वालामुखी, सागर और एवरेस्ट जैसे ऊचे पहाड है। वहा कोई वनस्पति या प्राणी नहीं है। २० अक्टूबर आते ही फ्रास से आडन का स्टीमर फ्लोरिडा पहुच गया। हजारो लोगो की भीड उसे देखने के लिए दौड पडी। वह देखना चाहती थी आखिर चाद पर जाने वाला यह आदमी है कौन ?

बाल्टीमोर क्लब के अध्यक्ष बारबीकेन ने आडन का स्वागत किया और चाद पर जाने के बार म उसकी विस्तृत योजना को जानना चाहा। आडन ने कहा—' देखो तुमने तोप तैयार की है और मैं ऐसा गोला तैयार करूगा जो चाद पर जाकर वहा की खबर लेगा। उस गोले म झटका रोकने वाले यन्त्र, खाने का कमरा, रोशनी, पानी, आक्सीजन तथा चाद पर लगाने के लिए वनस्पति पृथ्वी से पहुचाई जा सकेगी। उसमे सोने व बठने के लिए भी कई आदमियों की जगह होगी।'

बारबीकेन बडा प्रसन्न था कि उसको एक योग्य सहयोगी मिल गया। ये सब लोग बात कर ही रहे थे कि अचानक निकोल आ गया और उसने आडन से तरह-तरह के प्रश्नो की झडी लगा दी।

' पृथ्वी और चाद की कक्षाओ की सीमाओ पर घर्षण होने से उस गोले म गर्मी और आग पदा होगी उसमे तुम कस बचोगे ?"—निकोल न कहा।

"हमारा गोला प्रति सेकिंड १२,००० मीटर की गति से उडेगा और एक-दो सेकिंड के समय में वह पृथ्वी की कक्षा को बेध कर चांद की कक्षा में घुस जाएगा। अत घर्षण होने और गर्मी पैदा होने का प्रश्न ही नहीं उठता।"

' तुम हवा कहा से लोगे ?"

"रसायन क्रियाओ से मैं स्वय हवा तयार करूगा।"

"गोले के छूटते ही जो झटका लगेगा उसे कैसे सहन करोगे ?"

"मेरे गोले मे झटका सहने वाले यत्र होंगे?"

"चाद पर पहुच कर तुम जिंदा कैसे रह सकोगे ? वहा क्या खाओगे, क्या पीओगे ?"

"मेरे पास पूरे एक साल का राशन है।"

"लेकिन तुम चाद पर इस गोले मे बैठकर पहुच तो जाओगे। मगर वहा से लौटोगे कैसे ?"—निकोल का यह सवाल लाजवाब था।

'मैं चाद से लौटना ही नहा चाहता।"

"मूख आदमी, अगर तुम लौटोगे नही तो तुम्हारे जाने का फायदा क्या हुआ? तुम चाद की बातें यहा क लोगो के कैस बताओगे? बारबीकेन पागल है जो तुम्हारी जान लेना चाहता है।"—निकोल चीख उठा।

"सुनो, मैं बडे-बडे हरफो मे चाद पर बैठकर पृथ्वी के लोगो को सदेश भेजूगा। ये हर्फ इतने बडे होंगे जो भारी टेलिस्कोपो से पृथ्वी से ही पढ लिए जाएगे।"

"आल नॉनसेंस" (सब बकवास है)—कहकर निकोल ने रिवाल्वर निकाल ली और 'पागल' कहकर वह बारबीकेन पर टूट पडा। आडन व कनल ब्लाम्सबेरी ने उसे जकड लिया। बारबीकेन झल्लाया—"निकोल, तुमने मेरी बेइज्जती की है। अच्छा हो तुम कल सुबह ५ बजे स्केरना के जगल मे बदूक लेकर मुझसे लडो और फिर देखें किसम कितना दम है। ऐसे झल्लाहट दिखाने से कुछ नहीं होता।"

निकोल ने यह चुनौती मजूर कर ली और दूसरे दिन सुबह जगल मे मिलने को कहकर वह चला गया। आडन चिंतित हो गया। उसे लगा जैसे सारा खेल ही खत्म हो रहा है। वह उन दोनो की जान बचाने के प्रयास

मे सुबह ४ बजे ही जगल में पहुच गया। एक ऊचे पेड पर चढ़कर वह दूरबीन से देखने लगा। पौ फट रही थी। निकोल जंगली मकडी के जाले मे अटकी एक चिडिया की जान बचा रहा था। आइन फौरन वही पहुचा। उसने निकोल से कहा—"तुम बहुत बडे मूख हो। तुम चिडिया की जान बचा रहे हो और एक साथी वैज्ञानिक की जान लेना चाहते हो। तुम आदमी नही जानवर हो। अगर तुम दोनो को मरना ही है तो क्या नही मेरे साथ चाद पर चलते ? अच्छा हो कि हम चाद की खोज करते हुए अपनी जान गवाए।'

निकोल को बात जच गई और दोना फौरन बारबीकेन को ढूढने निक्ले। तीना मान गए और तय किया गया कि बिल्ली को छोटे गोले म उछाल कर झटके का परीक्षण किया जाए ताकि चाद की ओर जाने और वहा से लौट कर पानी मे गिरने पर गोले के झटके का असर अन्दर बठने वाला पर न हो। परीक्षण मे तोप से एक गोले मे एक बिल्ली और दो गिलहरिया को ऊपर दाग दिया। जब समुद्र मे गिरे हुए छोटे गोले को निकाल कर खोला गया तो गिलहरी गायब थी और बिल्ली ज्या की त्या थी। ये समझ गए कि बिल्ली गिलहरी को खा गई। लेकिन यह परीक्षण सफल रहा।

तीन दिन बाद तोप मे बारूद भर दी गई। निकोल ने अपनी शत के मुताबिक तीन हजार डालर बारबीकेन को देते हुए कहा—"यह लो मैं तीसरी शत भी हार गया दोस्त" बारबीकेन ने मुस्कुराते हुए यह रकम लेकर क्लब को ही दे दी। अब गोला तयार था और उसे तोप के मुह में उतारना बाकी था। विशाल क्रेन मगवाकर गोले को धीरे धीरे तोप की नाली मे उतरने की सब तैयारी हो गई। उधर मिसूरी मे कुछ वैज्ञानिका ने ऊचे दर्जे की बडी-बडी दूरबीनें तयार कर ली जो चाद तक देख सकती थी। उसे देखने पर ऐसा लगता था जैसे चाद धरती से कुछ ही मील दूर है। मिसूरी से टेम्पा मे बारबीकेन को खबर भेज दी गई कि 'बडी दूरबीनें तयार हैं, तुम अपना काम जारी रखो।'

दिसम्बर का वही दिन आ गया जब चाद धरती से केवल २ १८,६५७ मील की ही दूरी पर था। तीनो आदमी दो कुत्तो सहित अपने गोले मे घुस



अब चन्द्रयात्री तेजी से चांद की ओर बढ़ रहे थे

कर बैठ गए। हजारों लोगों ने सफलता की कामना करते हुए उन्हें विदाई दी। उन्होंने कुछ विस्फोटक राकेट भी गोले में रख लिए ताकि उन्हें दाग कर गोले की गति को कम-ज्यादा किया जा सके या दिशा-परिवर्तन किया जा सके। तीन मिनट बाकी थे। अब गोले का मुंह बन्द हो गया और उसे क्रेन ने धीरे-धीरे तोप के पेट में रख दिया। तीनों वैज्ञानिक अन्दर थे और

मैंस्टन स्विच के पास तैयार खडा था कि जल्दी समय पूरा हो और मैं बटन दबा दू ताकि गोला आकाश मे उडने लगे। १५ सेकण्ड, १०, ५, ३, २ और १ बटन दबा। तुरत भयानक लपटो के साथ एक भीषण विस्फोट हुआ और १२,००० गज प्रतिपल की गति से गोला आकाश में चांद की ओर झपटने लगा।

गोले मे तीन वैज्ञानिक और दो कुत्ते थे। झटके के साथ सभी इधर-उधर टकराकर गिर पडे। लेकिन विस्फोट की ध्वनि किसी को भी नही सुनाई दी। एक ने पूछा—"कही ऐसा तो नही कि हम तोप के तले म ही बैठे हो।"

"हरगिज नही। यह देखो हम चाद की ओर बढ़ रहे हैं। हमे विस्फोट की आवाज इसलिए नही सुनाई दी कि हमारी गति आवाज की गति से कही ज्यादा है।" पृथ्वी के चारो ओर चक्कर लगाता हुआ गोला कक्षा से बाहर निकल गया। कक्षा से निकलते ही फिर एक झटका लगा और चीख की आवाज सुनाई पडी। "कमबख्त सेटेलाइट (कुतिया) मर गई। इसे कहा दफनाया जाए।" बारबीकेन ने कहा।

"अच्छा हो कि हम फौरन इसे खिडकी खोलकर नीचे फेंक दें।" जब कुतिया को नीचे गिराया गया तो वह न चाद पर पहुची और न पृथ्वी पर। बीच मे ही लटकी रह गई। यह वह स्थान था जहा चाद या पृथ्वी की खिचाव शक्ति (गुरुत्वाकर्षण) मिल रही थी। यहा दोना एक दूसरे को खीच रहे थे। अत सेटेलाइट वही लटकी रह गई। यह देखकर आडन विस्मित नही हुआ। उसने कहा—"हम शीघ्र ही चन्द्रमा की परिधि मे आ रहे हैं।"

उधर मिसूरी मे जहा बडी दूरबीनें लगी थी, अनेक नागरिक और पत्रकार उस गोले का रहस्य जानना चाहते थे कि वह चाद की ओर जा रहा है या नही। दूरबीनो से देखकर वैज्ञानिको ने कहा—"अभी तो उसका धुआ ही धुआ नजर आ रहा है। आकाश मे धुए के बादल छा रहे हैं। इसके सिवा कुछ भी दिखाई नही दे रहा है।"

उधर गोले के अन्दर सहसा बारबीकेन के हाथ से टेलिस्कोप छूट गया और वह फर्श और छत के बीच मे लटक गया। तीना आश्चर्य से देखने लगे। लेकिन अचानक ही कुत्ते समेत तीना के तीनो भी धीरे धीरे ऊपर



गुरुत्वाकर्षण की सीमा मे चन्द्रयात्री

उठने लग। अब गोला चाद की सतह के पास आ चुका था। आइन ने हवा मे तैरते हुए खिडकी पकड ली। देखा तो चाद की दुनिया ठीक उसके सामन थी। उस लगा जैसे वह फौरन चाद को छू लेगा। सूखी हुई नदिया, नगे पहाड और रगिस्तान जैसे सूखे समन्दर उस साफ दिखाई दे रहे थे। वह जोर स चिल्लाया—"हम कामयाब हो गए। हमारा राकेट चाद तक पहुच गया। अब हम चाद पर उतरेंगे।"

बारबीकेन बोला—"चाद के गड्ढे भी हमारे पूवजो के ही बनाए हुए हैं। वे सूय की तेज गर्मी से बचन के लिए इनम छुप जाते थे, क्योकि चाद का एक दिन पृथ्वी के १५ दिन के बराबर और रात भी उतनी ही लम्बी होती है।"

निकोल ने दूरबीन लगाकर देखा। इन गहरे-गहरे गड्ढो मे जो मीलो लम्बे थे वनस्पति और खेत लहरा रहे थे। लेकिन इन खेतो मे कोई आदमी या पानी नही था। अचानक अधेरा और ठड बढने लगी। पानी जमने लगा। निकोल ने खीच कर कहा—'हम तो चाद के पिछले भाग की ओर बढ रहे हैं जहा सूय नही दिखता और १५ दिन की रात ही रात होती है।"

सभी सर्दी से कापने लगे। बारबीकेन ने कहा—"अगर हम दिन वाले भाग मे न पहुचे तो हम शीघ्र ही यहा बफ की तरह जमकर मर जाएगे और हमारा काम अधूरा रह जाएगा।"

"लेकिन हमारा गोला तो चाद के चारो ओर चक्कर लगा रहा है। तभी हम दिन वाले भाग से हटकर पिछले भाग की ओर आ गए हैं। यहा ठड और रात ही रात है।"—आइन ने कहा।

'अब हमे कोई तरीका सोचना चाहिए कि इस गोले की दिशा बदल जाए और यह हमे चाद के दिन वाले भाग मे ले जाकर चाद की सतह पर उतार दे।"—बारबीकेन बोला।

'ठीक है, हमारे पास राकेट जो है। अगर हम उन्हें दाग देंगे तो फौरन ही झटके के साथ हम दिन वाले भाग की ओर पहुचते ही अपने गोले की गति को कम कर पाएगे फिर धीरे धीरे चाद की सतह पर उतर लेंगे।"—निकोल बोला।

कुछ ही देर बाद जब चाद का दिनवाला भाग चमकने लगा तो आइन ने तीन राकेट दाग दिए। एक झटका लगा और गोला उल्टा होकर नीचे

गिरने लगा। इन्होंने समझा कि अब गोले ने चन्द्रमा के चारों ओर चक्कर लगाना बन्द कर दिया है और वह चांद की सतह पर उतर रहा है। लेकिन हुआ उल्टा। वह तेजी से पृथ्वी की ओर गिरने लगा। तीनों वैज्ञानिक चिल्लाए—'अरे ताज्जुब है, हम धरती पर उतर रहे हैं, चांद पर नहीं।'

प्रशान्त महासागर में अमरीकी नौसेना के लोग सेन फ्रांसिसको में हवाई द्वीप संचार व्यवस्था शुरू करने के लिए बडे-बडे केबिल डाल रहे थे। एक जगह महासागर के बीच में समुद्र की गहराई नापी जा रही थी। और तभी आकाश की ओर से जाता हुआ गोला दीख पडा। नौसेना का कप्तान बोला—"बाल्टीमोर गन क्लब के वैज्ञानिक चांद से लौट आए।" इतने में ही पूरी शक्ति के साथ वह गोला जहाज के पास ही लहरों पर छपाक से गिरा। जहाज हिलने लगा। समुद्र कांप उठा और वह गोला तेजी से समुद्र में डूब गया। नौ सेना के लोग चिल्लाए और गोले को निकालना चाहा। लेकिन घंटों तक कुछ भी पता नहीं चला। नौ सेना के जहाज ने उसी स्थान पर एक नौका तैनात कर दी ताकि यह निशान रहे कि गोला यहीं गिरा है और जहाज समुद्र में लटकाए जाने वाले यंत्र लेने के लिए बंदरगाह की ओर चल पडा।

उस जमाने में वायरलैस या बेतार का तार नहीं था। कप्तान ने सोचा कि गोले में आक्सीजन तो है ही, अतः हमारे वैज्ञानिक यदि समुद्र में डूबे भी रहे तो कम से कम मरेंगे तो नहीं। तब तक हम उन्हें किसी तरह खोज कर निकाल लेंगे। प्रशांत महासागर में चांद पर भेजे गए गोले के गिरने की खबर सुनकर लोग समुद्र की ओर दौड पड़े। मैस्टन भी एडमिरल के दफ्तर में पहुंचकर सहायता मांगने लगा। गोताखोरों को एडमिरल ने समुद्र के तल की खोज के लिए रवाना कर दिया। मैस्टन भी साथ था। वह घबरा रहा था कि कहीं वह गोला न मिला तो बहुत बुरा होगा और हम तीनों वैज्ञानिकों को खो बठेंगे।

जहाज में उसी स्थान पर पहुंच कर जहां नौका खडी थी, एक बडा संयत्र कई गोताखोरों सहित समुद्र में अन्दर डाल दिया गया। मैस्टन भी साथ था। घंटों तक समुद्र का तल खोजने पर भी उस गोले का पता नहीं

चला और मस्टन गन्ति गातागार वापस जहाज पर आ गए। इसी तरह खोज करते करत पाच न्दि बीत गए और सभी ने चाद से गिरने वाले गोले के मिलने की आशा छोड दी। मस्टन जहाज पर खडा सोच रहा था कि— अब क्या करे ? ाप्तान दूरबीन से समुद्र को दूर दूर तक देख रहा था। कप्तान न न्खा कि बहुत दूर एक लाल रग की नौका जसी कोई चीज तर रही है।

उसपर एक झडा सा लहरा रहा है। जहाज को कप्तान ने उसी ओर बढाया। फि एक नौका उस तरन वाली चीज का पता लगान के लिए रवाना कर दी। मस्टन उसी नौका म था। जब नौका पास आई तो देखा ि वही गोला जिसम चाद पर जान वाले तीन वैज्ञानिक थे समुद्र की लहरो पर खेल रहा है। नौका का गाले के पास लाकर मस्टन न कान लगाया। एसा लगा जस इस गोले म कोई जीव या आदमी की आवाज नही है। क्या सब मर गए हाग। मस्टन साच ही रहा था। इतने म ही दरवाजा खुला और तीना वज्ञानिक एक के बाद एक बाहर निकले और नौका मे कूद कर मस्टन से लिपट गए। मस्टन के चहरे पर हवाइया उड रही थी।

"अरे तुम क्या डर गए ?"

हा, बहुत ही डरा।'

'लकिन हम ता अन्दर शतरज खेल रहे थे और ये गोला समुद्र म अन्दर उसी तरह चक्कर लगा रहा था जसे आकाश मे।"

तब तो बारबीकन का सिद्धात ठीक ही निकला।"—मस्टन बोला। सभी नौका म बठकर तजी स जहाज की ओर बढने लगे 'क्या तुम्हें डर नही लगा ? —मस्टन न उन लोगा से पूछा।

धरती म २ लाख मील दूर सर करने वाले कही डरते हैं ? ये तो तुम लाग ही हो जा जरा म डर गए। हमारे लिए ता चाद की ऊचाइया और समुद्र की गहराइया एक जसी ही है। —बारबीकेन ने उत्तर दिया। और जहाज तीना वज्ञानिको को लकर किनार की ओर चल दिया। जहाज नजदीक आ गया और तीना वज्ञानिका को लेकर किनारे की ओर बढ गया जहा लाखो नागरिको की भीड चन्द्रयात्री वज्ञानिका के स्वागत म जमी थी।

पुच्छल तारे पर दो वर्ष

'आफ आन ए कामेट' जुले वन की अन्य महत्त्वपूण और लोकप्रिय वज्ञानिक कृति है। इसमे पृथ्वी के एक भाग मे बसने वाले कुछ लोग सहसा सौर मडल के एक पुच्छल तारे में जुडकर अलग हो जान से बिछुड जाते हैं पृथ्वी का यह टुकडा जो अल्जीरिया का एक भाग है, सौरमडल की कक्षा में दो वर्ष तक चक्कर लगाता रहता है।

इस पर रहने वाले कप्तान हेक्टर काउट आदि को बडे सघष और सकट का सामना करना पडता है और अनेकों मौसम की कठिनाइयों व साहसिक घटनाओं के बाद ये लोग निजन में बने एक टापू पर पहुचकर एक गणना और खगोल विज्ञानी से जा मिलते हैं। यह उन्हें समझाता है कि घबराओ मत, यह पुच्छल तारा जो पृथ्वी के खड को तोड लाया है अब जल्दी ही वापस उसे पृथ्वी के उसी स्थान स जाकर जोड देगा।

अनेक वज्ञानिक तथ्यों से भरपूर प्रस्तुत उपन्यास भी 'चांद का चक्कर की तरह सफल वैज्ञानिक कल्पना पर आधारित रोचक उपन्यास है जिस इस सकलन मे लिया गया है।

—सम्पादक

•

"मुझे दुख है काउट ! मैं अपनी धारणाओ को नही बदल सकता और न उस औरत से विवाह ही कर सकता हू।"

'कैप्टन हेक्टर फिर तुम्हें तलवार की नोक पर राजी करना होगा। कल पहली जनवरी को तुम मुझे सैलिफ नदी के किनारे चट्टान के पास मिलो। वही हम दोनो की मुठभेंड होगी।" काउट ने कहा।

' बिलकुल ठीक है।"

कप्तान हेक्टर घोड़े पर चढा और अपने अदली बेंजूफ को साथ लेकर उनकी झोपडियो की ओर चल दिया जहा वह रहा करता था ।

अल्जीरिया के मुस्तागनेम नामक स्थान पर फ्रांसीसी कप्तान हैक्टर सर्वेडक तैनात था । मैडम डेल को लेकर इसकी काउट से झडप हो गई और कल सुबह के लिए दोनो मे युद्ध की तैयारिया हो गई । शाम के लाल बादल आकाश में तैर रहे थे । कप्तान हैक्टर कविता की पक्तिया गुन गुनाता हुआ अपनी कुटिया मे आ गया । बेंजूफ खाना खाने लगा और हेक्टर बैठा बैठा गुनगुनाता रहा । इतने मे ही भूकम्प का सा भयकर धक्का लगा । दोनो लडखडाकर बेहोश हो गए ।

कई घटे बाद जब होश आया तो बेंजूफ ने पूछा, "हम कहा हैं ? यह सब क्या था ? अरे सूरज निकल रहा है । क्या सबेरा हो गया ?"

"आश्चर्य की बात है कि सूरज पश्चिम मे निकल रहा है । आखिर यह कोई रहस्य जरूर है । लेकिन जल्दी करो काउट, तिमचेफ इन्तजार कर रहा होगा । जल्दी ही हमे सैलिफ नदी के किनारे चट्टान पर पहुचना चाहिए । मेरी तलवार लाओ ।"—हेक्टर ने कहा ।

जब दोनो चट्टान पर पहुचे तो वहा कोई भी नही था । वे कई घटे तक इन्तजार करते रहे । कुछ ही घटो मे सूरज डूबने लगा—"यह क्या दिन छ घटे मे ही छुप गया । अभी तो बारह ही बजे हैं और सूरज डूब रहा है । अवश्य ही यह कुछ रहस्य है ।" बेंजूफ ने पूछा ।

"कही हम पागल तो नहीं हो गए हैं ।'—हेक्टर बोला । "अरे अरे यह क्या ?'

सहसा दोनो को ऐसा लगा जैसे वे दोनों हल्के होकर ऊपर उठ गए हैं और हवा मे उड रहे हैं । धरातल से कोई तीस-चालीस फुट ऊपर । रास्ते मे एक नाला था । उसके ऊपर भी वे उडकर निकल गए । 'महान आश्चर्य है' वे फिर धरातल पर आ गिरे । छ घटे बीत गए । सूरज फिर उगने लगा । छ घटे का दिन छ घटे की रात । चलो अपने घोडे सभालें । दोनो घोडो पर बैठकर सैलिफ नदी के किनारे आ गए । नदी का तीर बिलकुल समुद्र का क्षितिज जसा बन गया था । उसके किनारे के सभी नगर और बस्तिया गायब थे । उस समुद्र जैसी नदी का तल एक थल मात्र था । नदी सूखी थी ।

दोनो नदी के तल मे घटो तक घोडा दौडाते रहे। उन्हे इस भूखड पर कोई भी आदमी नही मिला। लगता है—"हम किसी टापू पर हैं जो एक दम निजन और बजर है। चलो किनारे पर चलकर किसी जहाज के आने का इन्तजार करें।"

"कितनी तेज गर्मी है। लगता है हम सूरज के पास पहुच रहे हैं। आखिर यह क्या रहस्य है।"

"लेकिन अब तो हम मगल ग्रह की कक्षा मे हैं। दूरबीन से देखो, मगल ग्रह कितना पास दिखाई दे रहा है।"

"क्या हम मगल ग्रह मे पहुच जाएगे।"

"लेकिन अब तो ऐसा लग रहा है कि सूय से दूर हट रहे हैं। देखो गर्मी भी कम होती जा रही है।"

दो-तीन दिन बाद। किनारे की ओर एक जहाज आने लगा। "ओफ हो, ये तो काउन्ट तिमसफ का जहाज है। मुझे इसी का इन्तजार था।" हेक्टर ने कहा।

इतने में ही ले० प्रोकोप के साथ काउन्ट आ पहुचा। "माफ करना कप्तान, मैं एक जनवरी को मिलने का वायदा पूरा न कर सका। इकतीस दिसम्बर की ही रात को समुद्र मे एक भयानक तूफान आया। राम जाने हम बच कैसे गए। यह पहली धरती है जिसे मैं तूफान के बाद देख सका हू। चलो अब अपनी पुरानी दुनिया की खोज करें। आओ तुम लोग मेरे जहाज मे आ जाओ।"

हेक्टर काउन्ट के जहाज म आ गया और बेंजूफ टापू पर ही प्रतीक्षा के लिए रह गया। जहाज पूव की ओर चलने लगा फिर वह दक्षिण की ओर मुडा। सामने एक टापू दिखाई दे रहा है। लेकिन यह टापू ऐसी जगह पर है, जहा पहले कभी भूमि नही थी। जहाज उसी टापू की ओर बढने लगा। मीलो चलने के बाद अचानक समुद्र मे तूफान आ गया। जहाज चट्टान से टकराने ही वाला था कि काउन्ट से विक्टर न कहा— "वह देखो, दो चट्टानो के बीच मे रास्ता है, जहाज को उधर ही ले चलो।" ले० प्रोकोप ने दो समवर्ती चट्टानो के बीच मे जहाज को मोड दिया। इस सकरे माग से निकलते ही ये लोग एक शान्त समुद्र मे आ गए। सामने थल था।

एक चट्टान सी नजर आ रही थी। जसे ही जहाज इस चट्टान के किनारे पर पर पहुचा दो ब्रिटिश सेना के अधिकारी काउट और हेक्टर के स्वागत क लिए तयार खड़े थे। ये दोनो मेजर जान टेम्पल और कनल फिच मर्फी थ। दोना ने परिचय दिया और टेम्पल ने कहा—"पिछली साल पहली जनवरी को जब हम समुद्र मे थे, भयानक तूफान आया और काफी लम्बे समय तक भटकने के बाद हम इस चट्टान पर पहुचे।" हम यूरोप और इगलड से सम्पक भी न कर सके। लेकिन हम यह पता है कि यह ब्रिटेन की ही धरती जिब्राल्टर ह जहा हम और आप खड़े हैं।" "लेकिन यह कैसे हो सकता है। जिब्राल्टर तो पश्चिम मे है और हम बराबर पूव की ओर चलकर आए हैं।—" हेक्टर ने कहा।

ब्रिटिश सेना अधिकारियो को छोडकर ये वापस अपने जहाज पर चढ़ गए। काउ ट ने कहा—' जिस रास्ते से हम आए हैं उससे जिब्राल्टर तक पहुचने के लिए तो हमे अल्जीरिया होते हुए स्वेज नहर, लाल सागर, हिन्द महासागर प्रशात सागर व अटलाटिक महासागर को पार करना होगा। लेकिन हम अब तक केवल चौदह सौ मील चलकर ही जिब्राल्टर तक कसे आ गए। इसम क्या रहस्य है।"

' मुझे लगता है हम जिस दुनिया मे है वह पृथ्वी के व्यास १/१६ भाग घट गई है और उसकी परिधि कुल चौदह सौ मील ही है।" हेक्टर ने कहा।

' ठीक है। मैं समझ गया। इस समय हम पृथ्वी से विलग एक पुच्छल तारे जसे भूखड पर सूय की ओर यात्रा कर रहे हैं और अब हम पृथ्वी की कक्षा म न होकर सौर मडल की कक्षा मे हैं। यही कारण है कि यहा छ-छ घटे के दिन और रात होते हैं।'

कई दिना तक इनका जहाज समुद्र मे भटकता रहा। अचानक उन्हें समुद्र मे तैरती हुई एक दूरबीन मिली। इसमें एक पत्र था—यह अग्रेजी, इटालियन और लैटिन मे लिखा था। इस पर लिखा था—'गेलिया। १५ फरवरी को यह उपग्रह सूय से कितनी दूर है यह भी इसमे अकित था। यह पत्र अवश्य ही किसी महान गणना शास्त्री का है जिसने इस पुच्छल तारे (उपग्रह) को गोलिया कहा है। उसी ने समुद्र मे यह पत्र छोडा है। लेकिन वह व्यक्ति आखिर है कहा ?

इसा प्रकार खोज करता हुआ जहाज भूमध्य सागर मे आ गया। इन्होंने समझा कि शायद हम सारडीनिया मे पहुच है। जहाज [illegible] टापू के पास ठहरा जहा एक बकरी चर रही थी। हेक्टर ने [illegible] साथ एक लडकी भी है। जसे ही हेक्टर लडकी की ओर बढा उसने चीखकर कहा—"तुम हम को मारोगे तो नही। मेरा नाम नीना है और यह है मेरी बकरी मार्जो। उस भयानक तूफान के बाद हमारा सब कुछ खो गया और मैं अपनी बकरी के साथ इस निजन टापू मे अकेली रह गई।"

'डरो मत तुम हमारे साथ आओ। हम तुम्हारी हिफाजत करेंगे।" कप्तान ने इन्हें लेकर अब जहाज को उस टापू की ओर मोडा, जहा वे लोग बजफ को छोड आए थे।

बजूफ अपनी बन्दूक से बडी-बडी चील और उकाब जसी चिडियो को मार रहा था। ये पक्षी यहा थोडे से भाग मे उगी फसल को खा रहे थे। पता नही ये फसल यहा कसे उगी रह गई। अगर बजूफ इस फसल को नही बचाता तो काउन्ट सहित ग्यारह आदमियो के लिए खाना कहा से आता। हेक्टर ने कहा—"अब हम अपनी पुरानी दुनिया से लाखो मील दूर है। अब हमे न जाने कब तक यहा रहना होगा। अच्छा हो कि हम यहा स्थायी रूप से रहने की व्यवस्था कर लें।'

"लेकिन इस टापू पर हम ग्यारह ही नहीं बाईस व्यक्ति हैं। जब आप चल गए तो यहा स्पेन के ग्यारह व्यापारियो का 'हसा' नामक एक जहाज और आ गया। वे भी तूफान मे भटक गए। वे टापू के दूसरी ओर फसल काट रहे हैं।"

"बहुत अच्छा। तब तो हम लोग और भी अच्छी तरह रहगे।" हेक्टर न कहा।

"जी हा, अल्मा हकाबुत जहाज का मालिक है। उसके पास काफी, चीनी, तम्बाखू बारूद औजार, कपडे सभी कुछ ह।' बजूफ बोला।

"ठीक है। हम सब मिलकर रहगे। लेकिन अब पुच्छल तारा जिस पर हम सवार हैं सौर मडल की कक्षा से दूर हटता जा रहा है। अब तापमान जीरो शून्य से छ अश नीचे है। कितनी तेज सर्दी है। पहले हम इस सर्दी से बचने के लिए रास्ता खोजना चाहिए। अगर तापमान गिरकर धीरे

धीरे साठ अशा से नीचे पहुच गया तो हम लोग जमकर मर जाएगे।"— काउन्ट ने कहा।

"ठीक है। हमे धरती के नीचे गड्ढे बना लेने चाहिए।" बंजूफ ने कहा।

जब गड्ढे खोदे गए तो चट्टान की सतह इतनी अधिक पथरीली और कठोर निकली कि किसी भी प्रकार उसको नही बेधा जा सका। इसी बीच क्षितिज पर आग की लपटें और धुआ उठता दीख पडा। हेक्टर न दूरबीन लगाकर देखा—एक ज्वालामुखी पहाड लावा डाल रहा है। वह जोर से चिल्ला पडा—"ठीक है हमारा काम बन गया। हमे सर्दी से बचने के लिए आग और गर्मी ही चाहिए न, वह मिल गई। चलो हम सब जहाज मे भरकर उसी ज्वालामुखी की ओर चलते हैं।'

जब जहाज ज्वालामुखी पहाड के पास पहुचा तो एक ओर मौन ज्वालामुखी लावा उगल रहा था। दूसरी ओर का धरातल शात और स्वच्छ था। 'हमें रहने के लिए इसी ओर स्थान खोजना चाहिए। मैंने ऐसा मौन ज्वालामुखी आज तक नही देखा।" हेक्टर ने कहा। ये लोग पहाड पर चढ गए। पहाड में कुछ ऊंचाई पर एक गुफाद्वार नजर आ रहा था। काउन्ट ने उसमें घुसकर देखा। उसमें काफी गर्माहट थी। काउन्ट और लेफ्टीनेंट प्रोकोप उसमें अन्दर बढते चले गए। पहाड के गत में खोखली जगह थी। जहा पीला प्रकाश हो रहा था। गम-गम लावा की नदी बह रही थी। बाहर के कठोर शीत को देखते हुए यह स्थान बहुत ही अनुकूल और मनोरम था। "वाह रे ईश्वर तेरी लीला।" दोनो ने सोचा सर्दी काटने के लिए कुदरत ने कितना सुन्दर स्थान हमें बता दिया। हमें यही पर अपनी बस्ती बनानी चाहिए।

ज्वालामुखी की कदरा मे मधुमक्खियो के छत्ते जसे अनेक छेद थे। ये सामान रखने के लिए बहुत ही अच्छे थे। तीन दिन मे बाईस आदमियो की एक छोटी सी बस्ती बस गई। इमी बस्ती का नाम रखा गया—नीकाघर। सारा सामान कदरा मे ठीक जगह देखकर रख दिया गया। अब सभी का जीवन सामान्य हो गया।

काफी समय बीत गया। एक दिन नीना को भूखे पक्षियो ने घेर लिया।

वह एक छोटे से कबूतर को अपनी गोदी मे छुपाए उन पक्षियो से बचा रही थी। इतने मे ही बैंजूफ आ गया और उसने सभी जगली चिडियो को डडे मारकर भगा दिया। बैंजूफ ने पूछा—"नीना तुम्हारे गोदी मे क्या है, देखो तो"—नीना ने कबूतर उसे दे दिया। कबूतर की गर्दन मे काले रग की एक थली म एक चिट्ठी थी। हेक्टर ने चिट्ठी को पढा—उसमे लिखा था कि "एक अप्रेल को हम सूर्य से दूर पहुच जाएगे। मेरे पास खाना खत्म होने जा रहा है " शेष भाग चिट्ठी मे फट गया था। कबूतर को देखा तो उसके परो पर एक मुहर जैसी छपी थी उसमें अप्पस्ट सा लिखा था 'फोमेन्टेरा'। 'यह तो स्पेन के पास वाली रीक द्वीपो मे एक छोटा द्वीप है। यहाँ से करीब तीन सौ साठ मील होगा।" काउन्ट ने कहा। "हमे इस व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए।"

तापमान जीरो से नीचे होने पर भी समुद्र नही जमा। समुद्र शात था। हेक्टर ने कहा—"मुझे विज्ञान का सिद्धान्त मालूम है यदि एक छोटा सा बर्फ का टुकडा इस समुद्र के बीच मे डालकर इसके पानी को आन्दोलित कर दिया जाए तो शीघ्र ही ठड का प्रभाव होगा और कुछ ही घटो मे सारा समुद्र जम जाएगा।" ऐसा ही हुआ। समुद्र बर्फ की तरह जम गया। अब जहाज से स्केटिंग रिंक लाकर ये लोग बर्फ पर फिसलने लगे। हेक्टर ने कहा—"क्यो न हम इसी तरह अपने छोटे जहाज के नीचे ऐसी ही फिसलने वाली लोहे की पत्तिया लगाकर उस द्वीप तक जाए जहा वह गणनाशास्त्री रहता है।"

"विचार तो अच्छा है। साथ मे मैं भी चलूगा ताकि हम उस व्यक्ति को अपने साथ यही ले आए।" प्रोकोप ने कहा।

जहाज तैयार था। जसे ही हवा का रुख फोमेन्टेरा की ओर हुआ ये दोनो अपना जहाज लेकर तेजी से फिसलते हुए उस द्वीप तक पहुच गए। बडा सुनसान द्वीप था। पूरे द्वीप मे एक ही घर था। दरवाजा खोलकर देखा तो एक बूढा व्यक्ति बेहोश पडा था। दोनो ने उसे जहाज में रख लिया और वे वापस तेजी से ज्वालामुखी पर्वत की ओर चलने लगे।

नीना घर म लाकर उसको लिटा दिया। होश आने पर उसने आँखें टिमटिमाईं। बल पाँच सौ लाइनें, हेक्टर उनके मुह से निकला। वह बडबडा

रहा था। हेक्टर ने कहा—"यह और कोई नही मेरा गुरु प्रो० पामीरिन है, ये गणना और ज्योतिष का माना हुआ विद्वान है।" थोडी देर मे वह जाग गया। उसने कहा—"तुम लोगो ने 'गोलिया' का क्या अथ लगाया ?"

"हमने सोचा शायद पृथ्वी से अलग इस भूखड का नाम ही आपने गोलिया दिया होगा।"

"नही, गोलिया वह उपग्रह और पुच्छल तारा है जो हमारे इस भूखड को पृथ्वी से अलग करके इसे सौरमडल की कक्षा मे लिए जा रहा है। यह तारा दो वष तक इसी प्रकार भूखड को चिपकाए घूमता रहता है और अत म पृथ्वी तक आकर उस भूखड को पुन ज्यो का त्यो जोड देता है। अब यह तारा हम वापस पृथ्वी की ओर ही ले जा रहा है। हमे एक वष से अधिक समय हो गया। अगली पहली जनवरी तक हम लोग पुन अपनी पुरानी दुनिया मे पहुच जाएगे।" यह कहकर प्रोफेसर चुप हो गया। सब लोगो ने सतोष की सास ली।

समन्दर ज्वालामुखी के चारो ओर बफ के मैदान की तरह फैला था। सारे लोग नये साल की दावत मनाने के बाद बर्फ पर खेल कूद करने के लिए निकल गए। जब वापस नीनाघर मे लौटे तो ज्वालामुखी पवत के गभ मे होते हुए भी उन्हे सर्दी लगने लगी। रोजाना से ज्यादा सर्दी। देखा तो लावा की नदी जो गर्मी और आग उगलती हुई बहती थी एकदम गायब है। उसने जो भी तापमान छोडा है उसी से वातावरण गम है। यह देखकर सभी लोग दग रह गए। 'अब क्या होगा।' हम लोग कसे जिन्दा रहगे। एक तरकीब सूझी। क्यो न चट्टान की छाती को तोडा जाए। शायद कोई दूसरी लावा की नदी मिल जाए या कोई और सुरग मिल जाए। चट्टान पर छनी-हथौडे चलने लगे। कई घटे मे जाकर चट्टान का थोडा पत्थर टूट पाया। ऐसे काम नही चलेगा। तापमान तेजी से घट रहा है।' हेक्टर ने सोचा क्या न बारूद लाकर सुरग बनाई जाए और चट्टान को तोड दिया जाए। बस बारूद लगाकर जैसे ही चट्टान को फोडा दूसरी ओर एक लम्बी सुरग दिखाई पडी। धुए के बादल छटने के बाद ये लोग अन्दर बढे। लग भग चार सौ कदम चलने के बाद सुरग की दीवारो म कुछ-कुछ गर्माहट महसूस होने लगी। यहा लावा की नदी तो नही थी। लेकिन बाए मुडकर एक

समतल जगह थी। बस यही जगह शेष बर्फ के महीने काटने के लिए चुनी गई। यहा आरामदायक गर्माहट थी और हल्की-हल्की खपर की ओर से हवा भी आ रही थी। यह जगह लावा की नदी वाली जगह से कुछ कम अच्छी थी। लेकिन इन लोगो के पास यहा रहने के सिवा कोई और चारा न था। सब लोग यहां सामान ले आए और शेष दिन बिताने लगे।

इसी तरह दूसरे साल के नौ महीने बीत गए। अब अक्तूबर आ गया। सर्द हवाए चली गईं और मौसम मे कुछ-कुछ गर्मी और शुष्कता बढने लगी। पुच्छल तारे के साथ लिपटा भूखड तेजी से पृथ्वी के पास आ रहा था। बहुत दिनो तक ये लोग बर्फ के मैदान मे पानी की खोज करते रहे। अब केवल तीन महीने बाकी थे। जनवरी के पहले दिन ये लोग अपनी पुरानी धरती पर पहुचने वाले थे।

अब इन लोगो के सामने एक बडी समस्या थी कि अगर पुच्छल तारे का यही भूखड जिस पर ये लोग रह रहे हैं पृथ्वी से टकराएगा तो सभी चूर-चूर हो जाएगे। यह भूखड किसी भी ओर जाकर पृथ्वी से जुडे मगर उसका धक्का तो बहुत ही असहनीय होगा।" एक रास्ता ले० प्रोकोप ने सुझाया। हम गोलिया के पृथ्वी में जुडने से एक दो दिन पहले क्यों न छोड दें। हम सब लोग गुब्बारे पर सवार होकर गोलिया को छोडकर एक दो दिन हवा मे उड़ें फिर धीरे धीरे अपनी पृथ्वी पर उतर जाए। यह बात सबको जच गई।

गुब्बारे को हवा बद करने के लिए वार्निस का प्रयोग किया जाएगा। उसमे गम हवा भरी जाएगी ताकि यह धीरे धीरे आकाश मे उडने लगे। पुच्छल तारा पृथ्वी तक किस समय पहुचेगा, इसकी ठीक ठीक गणना प्रोफेसर ही करेंगे। ये लोग बातचीत कर ही रहे थे कि अचानक जोर का भूकप जसा धक्का लगा और गुफा की अन्दर की सारी चीजें एक-दूसरे से टकरा-टकराकर इधर उधर उछलने लगी। प्रोफेसर, हेक्टर तथा सभी लोग गुफा से बाहर दौड आए। देखा तो एक छोटा सा भूखड आकाश मे उडकर टूटे हुए तारे की तरह भाग रहा था। प्रोफेसर ने दूरबीन से देखा—"यह हमारे ही भूखड का एक भाग है। कोई नया उपग्रह नही है। यह पृथ्वी की कक्षा से निकलकर खगोल की दूसरी कक्षा मे जा रहा है। इस भूखड मे

जिब्राल्टर की ओर वाला भाग नजर आता है।"

"शायद हमारा भार घट गया है। इसीलिए यह भूखड कटकर अलग हो गया है।" हेक्टर ने कहा।

"धत। अगर ऐसा होता तो हम पृथ्वी तक कभी नही पहुच पाते और आकाश मे ही भारहीन होकर मडराते रहते। लेकिन अब हम १ जनवरी का दिन के दो बजकर ४२ मिनट ३५-६-१० सेकिड पर पुन अपनी पुरानी पृथ्वी से जुड जाएगे।" 'धन्यवाद प्रोफेसर।" मैं यही सब कुछ तो जानना चाहता था।"

अभी दो महीने का समय बाकी था। तेजी से एक विशाल गुब्बारा बनाने की तैयारिया होने लगी। दिसम्बर के अत तक गुब्बारा तयार हो गया। "अब हम नये साल का पहला दिन अपनी पृथ्वी पर चलकर ही मनाएगे। अपने बिछुडे हुए दोस्तो और घरवालो से मिलेंगे। दो वर्ष का समय कितनी कठिनाई से बीता है।" काउट ने कहा।

१ जनवरी का दिन। सभी लोग इकट्ठे होकर गुब्बारे के नीचे वाले भाग मे बैठ गए। दो बज गए। केवल ४२ मिनट बाद पुच्छल तारा पृथ्वी से जुडने वाला था। प्रोफेसर ने जोर से हाथ हिलाकर कहा—"आप लोग जा सकते हैं। मैं पुरानी दुनिया मे नही जाना चाहता। मुझे यह लोक ही अच्छा लगता है। मुझे यही रहने दो। तुम लोग जाओ।"

हेक्टर मुस्कराया। मन मे कहने लगा—'प्रोफेसर भी कितना अजीब आदमी है।' हेक्टर ने दो आदमियो को इशारा किया और वे फौरन ही डाक्टर को हाथ पैर पकडकर उठा लाए और उसे अपने साथ बिठा लिया। डाक्टर चिल्लाता रहा—"मुझे छोड दो। मुझे यही रहने दो।" /

दो बजकर पाच मिनट होगा। सिगनल होते ही गुब्बारे की डोरिया काट दी गई और ज्वालामुखी को छोडकर गुब्बारा बाईस आदमियो को लेकर धीरे धीरे ऊचा उठने लगा। बादलो में धीरे धीरे उडता हुआ गुब्बारा पृथ्वी के ऊपर उडने लगा। अब धीरे धीरे गुब्बारे की गैस कम हो रही थी। सभी लोग इतजार करने लगे कि अब कुछ ही क्षणो मे हम पृथ्वी पर होंगे।

अचानक आकाश बादलो से घिर गया। अजीब-अजीब सी रग बिरगी रोशनिया होने लगी। लपटें सी उठती दिखाई दी। भयानक आवाज हुई

और ये लोग वेहोश हो गए। कुछ घटे बाद जब होश आया तो सभी लोग पृथ्वी पर पडे थे। सारा सामान अस्त व्यस्त था। न गुब्बारा था और न उस पुच्छल तारे का ही निशान बाकी था।

'पुच्छल तारा पृथ्वी का चुम्बन करके वापस सौर मडल की कक्षा मे लौट गया। काश ! मैं भी उसी पर होता।" प्रोफेसर ने कहा।

ऐसा लगता है हम वापस अलजीरिया मे ही आ गए। यह बिलकुल वही जगह है, जहा से हम लोग धरती से जुदा हुए थे। ये लोग टहलते हुए मुस्तागनेम नामक अपनी पुरानी जगह पर पहुचे। मेजर ने कडककर कहा, "हेक्टर तुम दो साल तक अचानक कहा गायब हो गए ?"

"मैं जो कुछ बताऊगा, उस पर तुम विश्वास नही करोगे।" हेक्टर ने कहा। "लेकिन तुम्हें पता है मैडम डेल का क्या हुआ ?"

"क्या वह तुम्हारे इतजार मे अब तक बैठी रहती। उसने कभी का विवाह कर लिया।" मेजर ने कहा।

"खुदा का शुक्र है। चलो काउट अब हमे मैडम डेल के लिए द्वन्द्व युद्ध नही करना पडेगा।" हेक्टर ने पास खडे काउट से कहा।

'चलो अच्छा हुआ।" काउन्ट बोला।

उधर मैडम डेल छुपी छुपी खडी हस रही थी। वह अभी तक हेक्टर के इतजार मे रुकी थी। हेक्टर यह देखकर बडा दुखी था कि मैडम डेल उसे कितना चाहती है और उसके आते ही उससे विवाह कर लिया।

/

गार्डनर एफ० फॉक्स

गाडनर एफ० फॉक्स अमरीका के दूरदर्शी, पुरातत्त्वान्वेषी एव शोधपूण प्रयोगा के महान उपन्यासकार हैं। इनकी सभी कृतियो मे इतिहास को नई व्याख्या और मीमासा मिली है। इतिहास को नये रूप मे सजोने वाले गाडनर एफ० फॉक्स ने इसी शताब्दी मे 'द क्वीन आफ शेबा' नामक उपन्यास लिखकर विश्व के तत्कालीन भौगोलिक और ऐतिहासिक तथ्यो को झकझोर दिया।

प्रतिभावान लेखक गाडनर एफ० फॉक्स के ममस्पर्शी, रोमाचक और ज्ञान के एक एक कपाट को खोलने वाले इस उपन्यास मे ऐतिहासिक और रोमानी से अधिक वैज्ञानिक तत्त्व हैं। इसमे भौगोलिक विज्ञान के अतिरिक्त उस युग के यानी ईसा से १००० वष पूव के युद्ध और शस्त्र विज्ञान का स्वाभाविक चित्रण किया गया है। विश्व के महान उपन्यासकारों म श्री फॉक्स का नाम कभी नही भुलाया जा सकता। प्रस्तुत सकलन मे इनकी सभी रचनाओ मे से चुनकर 'शेबा की रानी' को 'वैज्ञानिक धनुप' के नाम से सार रूप मे प्रस्तुत किया गया है।

वैज्ञानिक धनुष

ईसा से हजार वर्ष पूर्व भी मिस्र और इजरायल की शत्रुता थी। मिस्र के फारोवा ने इजरायल (यरूशलम) के सम्राट सुलेमान से संधि करके अपनी बेटी एनोबेथ का विवाह कर दिया, जो अपने युग की अपूर्व सुन्दरी थी। उधर फिलिस्तीन सदैव इजरायल के विरुद्ध षडयंत्र करता रहता था। मगर वीर सुलेमान ने अनेक आपदाओं को सहकर हजारों वैज्ञानिक धनुष शेबा के कारीगर मदास से बनवाए और शेबा की रानी से मिलकर विश्व को विजय करने का स्वप्न सजोया।

उस युग में धनुष का आविष्कार नहीं हुआ था और उन दिनों सबसे उन्नत वैज्ञानिक अस्त्र यही था, जो केवल सुलेमान और शेबा की रानी के हाथ में था। इस कहानी को फाक्स ने सुलेमान और रानी शेबा की प्रेम कथा में बांधकर इस युद्ध विज्ञान की पुरातन कहानी को भूगोल और इतिहास के संदर्भ में नया कलेवर दिया है।

—सम्पादक

यरूशलम भूकंप के झटकों में डोल रहा था। नगर की इमारतें थर-थर कांप रही थीं। तेज घड़घड़ाहट की आवाज से नगर के लोग डरकर यरूशलम की गलियों में इधर-उधर भाग रहे थे। तीव्र वेग से भागते हुए एक आदमी पर सहसा इमारतों के कुछ टूटे हुए पत्थर गिरे और वह बेहोश होकर सड़क पर लुढ़क गया। भूकंप शांत हुआ। लोगों ने उसे उठाकर देखा। वह अभी तक बेहोश था। उसने अपने हाथ में कसकर कोई चीज पकड़ रखी थी। भेड़ की गर्म खाल में लिपटी हुई कोई आबनूस की लकड़ी की चीज। इस बेहोशी की हालत में भी कसकर मुट्ठी में भींचे था। लोगों ने देखा वह यरूशलम का निवासी नहीं है। यह तो शीट देश का

रहने वाला कोई व्यापारी लगता है। उसके कधे पर बधे थैले को खोलकर देखा गया।। उसमे तरह तरह के इत्र, चमडे के नमूने और खड्ग और तलवारो के नक्शे थे। उसके पास पारस पत्थर भी था जिसे लोहे मे लगाने से सोना बनाया जा सकता था।

सीरिया, जोडन और लेबनान तक इजरायल के यहूदी सम्राट सुलेमान का शासन था। यरूशलम प्राचीन नगर था। यही सुलेमान की राजधानी थी। इजरायल एक नवोदित राज्य था। यहूदियो के बढते हुए उत्कप ने ही इस राज्य को जन्म दिया। समस्त अरब राष्ट्र और प्राचीन मिस्र भी सुलेमान के प्रभाव से आतकित थे। मिस्र बूढा हो रहा था और इजरायल अपनी तरुणाई पर था। मिस्र की सभ्यता और सस्कृति हजारो साल पुरानी थी। यहूदी किसी समय मिस्र मे दास बनकर रहा करते थे। मिस्र के गौरव, शिल्प और सभ्यता को देखकर ससार आखें फाडता था। इजरायल के यहूदी बबर और खानाबदोश थे। ये अपनी भेडो को लेकर चरागाहो की तलाश मे अरब के समद्ध नगरो के आसपास घूमा करते थे। अरब मे तब तक रेगिस्तान बहुत ही कम भूमि पर था। यहा की अधिकाश धरती लहलहाती थी, सुदूर पूव मे चीन, भारत, जापान आदि देशा से व्यापार चलता था और यहूदी लोग अरबो के यहा दास बनकर काम करते थे।

यह ईसा से एक हजार वष पहले की घटना है। इजरायल के दास स्वतत्र हो गए।। अब्राहम, मूसा और दाऊद ने इजरायल की आजादी के लिए सघप किया था। दाऊद ने सोल साम्राज्य की स्थापना की। सतत सघष मे बूढा शेर मिस्र पराजित हो गया। आसपास के अरब देशो की सीमाए यहूदियों द्वारा हडप ली गइ। परन्तु युद्ध का अन्त शाति मे हुआ। ऐसी शाति जिसने हमेशा के लिए दो देशा को एक सूत्र म बाध दिया। यहूदियों का सम्राट सुलेमान दाऊद का बेटा था। इसकी माता बाथसबा इजरायल की अपने जमाने की अतीव सुदरी थी। उधर मिस्र का सम्राट फारोवा था। इसने अपनी बेटी एनीबेथ का विवाह सुलेमान से करके इजरायल और मिस्र को प्रेम के बधन मे बाध दिया। सुलेमान और एनाबेथ की शादी दो दिलो के प्रेम की प्रतीक नही थी। बल्कि दो देशो की मित्रता को कायम रखने वाली एक ऐतिहासिक घटना थी। दूसरे शब्दो म मिस्र

और इजरायल की यह शादी थी।

एनोबेथ सुलेमान से नफरत करती थी। वह कभी यहूदिया के देवता जेहोवा के आगे पूजा नही करती थी। वह अपने देवता अस्तकरत और मिस्र के धमदेव एकूनाथन, एसिस और ओसरीज को ही अपना देवता मानती थी। जब भी सुलेमान अपनी रानी एनोबेथ के पास आकर प्यार की बात करता, वह उसे दुत्कार देती। एनोबेथ कहती—"हम दोनो की शादी एक दूसरे की मर्जी से नही हुई है। मैं यह कैसे भूल सकती हू कि तुम मिस्र के यहूदी गुलामो की औलाद हो और मैं मिस्र के सम्राट फारोबा की बेटी। कहा मिस्र जैसा प्राचीन और महान देश और कहा कल का छोटा-सा राज्य इजरायल।'

यह सुनकर सुलेमान जमीन पर पैर पटकता और छटपटाकर रह जाता। एनोबेथ को वह जबरदस्ती अपनी बाहो मे पकडकर चूम लेता और वह उसे धकेलकर बडबडाती हुई अपने महल मे दौड जाती। सुलेमान उसके पीछे-पीछे जाता। वह जोर-जोर से चिल्लाकर कर कहता—' एनोबेथ, इजरायल एक महान राष्ट्र है। मैने अनेक देशो को जीतकर अपार धन इकट्ठा किया है। मैं महान हू। तुम मुझे यहूदी दास समझने की भूल मत करो। मैं जेहोवा का ऐसा विशाल मदिर बनवा रहा हू जिसके शिल्प और वास्तुकला को देखकर ससार चकित हो जाएगा और लोग मिस्र की कला और सस्कृति का भूल जाएगे।" यह कहकर उसने जैसे ही एनोबेथ को अपनी बाहों मे जकडा वसे ही किसी के पैरो की आहट सुनाई पडी। सुलेमान ने अपनी पकड ढीली कर दी और एनोबेथ उसके हाथो से छूटकर भाग गई।

सुलेमान ने देखा बनेजा हाथ मे खड्ग लिए तेजी से सीढिया चढता हुआ आ रहा है। बनेजा बार-बार अपने लाल चोगे को सभालकर सीढिया चढ रहा है। सुलेमान ने आगे बढकर उसे सीढियो के पास रोक दिया। 'क्या लाए हो बनेजा। तुम्हार हाथ मे क्या है ?"

"सम्राट यह एक हथियार का नक्शा है। ऐसा हथियार जो एक आदमी के छह सौ कदमो की दूरी पर मार कर सकता है।'

"छह सौ कदमो की दूरी यानी छह सौ गज तक—"

सुलेमान चीख उठा—' कहा है यह हथियार—मैंने आज तक एसा

हथियार नहीं देखा। अगर मुझे हथियार मिल जाए तो मैं सारे ससार को जीतकर जेहोवा के कदमो मे झुका सकता हू।"

"सम्राट, यह एक धनुष है। यह इस धनुर्ष का नक्शा है।"—बैनेजा ने नक्शा खोलते हुए कहा।

"मगर वह धनुष है कहा ? तुम्हें यह नक्शा कहां से मिला ?"—सुलेमान छटपटा उठा। उसने बैनेजा के हाथ से भेड की खाल में लिपटा नक्शा छीन लिया और तेजी से अपने महल की ओर बढ गया। बैनेजा अपना खड्ग उठाए सुलेमान के पीछे-पीछे हो लिया। वहां टायर के शिल्पी और यहूदियों के धमगुरु नथान उसका इतजार कर रहे थे। उन्हें देखकर वह फिर लौट पडा और सीढियों के पास आकर कुछ सोचने लगा।

"बैनेजा, बोलते क्यो नहीं, यह नक्शा तुम्हें कहा से मिला?"—सुलेमान ने पीछे मुडकर बैनेजा से सवाल किया। उसका लटकता हुआ सुनहरी चोगा चारो ओर घूम गया। बैनेजा सावधान हो गया और सडक पर बेहोश पड़े क्रीटवासी के बारे मे सुलेमान को बताने लगा।

"जिस रात यरूशलम में भयानक भूकप आया था। उस रात नगरपाल ने एक विदेशी को बेहोशी की हालत मे गिरफ्तार किया। यह विदेशी क्रीट के नोसिस नगर का वासी है और अपना नाम रिथोस बताता है। इसी के पास पारस पत्थर इस वैज्ञानिक धनुष का नक्शा मिला है।"—बैनेजा कहे जा रहा था।

"यह क्रीटवासी यरूशलम कैसे आया ?" सुलेमान ने सशकित होकर दूसरा सवाल पूछा।

बनेजा फिर चौंक गया और रिथोस की यात्रा की कहानी सुनाने लगा। रिथोस कोहरिल, हेराक्लीस, अरब का रेगिस्तान, फीनिशिया और सीरिया आदि देशो मे घूमता हुआ सीरिया के रास्ते इस नगर मे घुस आया था। वह वास्तव मे लाल सागर को पार करके अफ्रीका के देश टायरा मे जाना चाहता था। लेकिन सीरिया मे कुछ लोगो ने उसका पीछा किया और वह इस हथियार के नक्शे को छिपाता हुआ यहा तक आ पहुचा। वह इस हथियार के बदले में सोना, सुन्दर स्त्रिया और हीरे जवाहरात मागता है। वह कहता है कि मैंने इसे हासिल करने मे अनेक रातें जहाजो मे कडकडाती सर्दी मे

बिताईं, धूप से तपते रेगिस्तानो मे अपने शरीर को झुलसाया। फिर भी वेबीलोन और हिरमश्योम के सम्राटो के अपार धन देने पर मैंने उन्हें इस हथियार का राज नही बताया और मैं किसी तरह जान बचाकर यहा तक आ पहुचा हू। अगर उस रात भयानक भूकम्प न आता तो मैं लाल सागर के पार मिस्र मे चला जाता और इस हथियार को मिस्र के सम्राट फारोबा के हाथ बेचता। वह इसके बदले मे निश्चय ही मुझे अपार धन, दास, सुन्दरिया और अरबी घोडे देता।

सुलेमान बैंनेजा के मुह से रिन्थोस की बातें सुनकर तिलमिला उठा। उसने अपना हाथ खड्ग पर रखा और बेनेजा से कहा कि रिथोस को उसके सामने पेश करे। उसने ऐसा सोचकर दाऊद के बेटे सुलेमान का अपमान किया है। हम उसकी जान लेंगे और जेहोवा को उसके खून की बलि देंगे। बैंनेजा अपना खड्ग उठाकर रिथोस को सम्राट के सामने लाने के लिए भीम वेग से नीचे उतर गया। गुस्से से कापता हुआ सुलेमान जैसे ही पीछे मुडा उसने देखा धर्मगुरु नथान खडे-खडे मुस्करा रहे हैं।

'सुलेमान मैंने तुम दोनो की बातें सुन ली हैं। तुम रिथोस का सम्मान करो और उससे ऐसे हजारो धनुष बनाने को कहो ताकि तुम सारे ससार को जीतकर विश्व मे जेहोवा का सन्देश पहुचा सको। रिथोस की हत्या करने की भूल कभी मत करना।" यह कहकर नथान चला गया और सुलेमान मन ही मन सोचने लगा कि मैं रिथोस को मालामाल कर दूगा और उसे अरब और इजरायल की सुन्दरिया के बीच महलो मे विलासिता के लिए छोड दूगा बशर्ते कि वह ऐसे हजारो हथियार बनाने का वायदा करे। वह सोच ही रहा था कि फिर पैरो की आहट हुई। बैंनेजा रिथोस के साथ आ रहा था।

चमडे के गदे कपडे पहने, दाढी बढाये रिथोस सुलेमान के सामने चुप चाप खडा हो गया। उसके कधे पर चमडे का थैला लटका था। सुलेमान ने उसे नीचे से ऊपर तक देखकर कहा—

'यह हथियार तुम्हें कहा मिला ?'

'शेवा नगर मे ओरिस के कुए के पास एक दुकान पर।'—रिथोस ने सच-सच कह दिया।

'क्या तुम इजरायल के लिए यह हथियार बना सकते हो ?"

'नही।"

"क्यो नही।" यह कह सुलेमान ने अपने खड्ग पर हाथ रखा। बनेजा ने भी अपना खड्ग उठा लिया। रिन्योस एक बार काप गया। वह जानता था कि वह यहूदी सम्राट सुलेमान के सामने खडा है, और पास ही खडा है, इजरायल की सेना का महाबलाधिकृत बैनेजा जो एक ही बार मे रियोस को यमलोक पहुचा सकता है। रियोस ने बात बदल दी।

"मैं कारीगर नही हू। मैं तो धन कमाने वाला एक व्यापारी हू। शेबा मे मडास नाम का एक कारीगर है, वह ऐसे हजारो धनुष तैयार कर सकता है। लेकिन इसके लिए आपको स्वय शेबा जाना होगा। वह शेबा को छोड-कर यहा नही आ सकता।" रियोस ने यह कहकर सुलेमान और बैनेजा को अपने देवता की शपथ लेकर विश्वास दिलाया।

सुलेमान ने रियोस से वह नक्शा ले लिया और वह शेबा जाने की तैयारी करने लगा। उसने बैनेजा से कहा—"तुम मेरे साथ चलो। अब तुम जा सकते हो और सुनो रियोस को थोडा-सा धन और चार सुन्दरियाँ देकर महल मे बद कर दो।"

सुलेमान मन ही मन विश्व-विजय का स्वप्न सजाने लगा। इतने मे ही एनोबेथ आ पहुची। बैनेजा रियोस को लेकर चला गया। सुलेमान एनोबेथ के सौदर्य को एकटक देखने लगा। मिस्र की सुन्दरी, सुलेमान के दिल पर शासन करने वाली गर्वीली सुन्दरी एनोबेथ जो भारत से मगाए गए कीमती पुखराज और हीरो के हार पहने हुए थी। सफेद खीनखाब के कपडो मे एनोबेथ से बढकर कोई और सुन्दरी नही है। वह एनोबेथ की ओर बढा। उसको अपनी भुजाओ मे पकडकर बार-बार चूमने लगा। एनोबेथ कसमसाने लगी। सुलेमान ने कहा— 'एनोबेथ, तुम मेरे देवता जेहोवा की पूजा करोगी न। मैं कुछ दिन के लिए यरुशलम को छोडकर बाहर जा रहा हू। सीरिया के रेगिस्तान के पार। एनोबेथ कुछ न बोली और सुलेमान झल्लाता हुआ एनोबेथ को छोडकर बाहर चला गया।

सुलेमान का एक भाई जोयप था। उसे किसी तरह सुराग लग गया कि

सुलेमान अरब में किसी राज्य मे जा रहा है। उसके साथ उसका सेनाध्यक्ष बैनजा भी जा रहा है। उसने अब षड्यन्त्र करने का ठीक मौका देखा और अपने मित्र नरकल से मन्त्रणा करके कुछ आदमी इनके पीछे लगा दिए। जोथप ने कहा, "जहा भी मौका लगे बेनेजा और सुलेमान की हत्या कर दो ताकि मैं सदैव के लिए इजरायल का सम्राट बन जाऊ।"

सुलेमान अब लाल सागर को पार करके शेवा राज्य की ओर जा रहा था। उसने रास्ते मे कई नखलिस्तान और रेगिस्तानो को पार कर लिया। अनेक सरायो मे ठहरते हुए और पीछा करने वाले जोथप के दूतो से बचते हुए वे दोनो किसी तरह शेवा नगर मे पहुच गए। सुलेमान की बगल मे दो खडग लटके हुए थे। वह तेज चलने वाले घोडो पर सवार था। शेवा पहुचकर उसने समुद्र का पूर्वी तट देखा। वह समझता था कि यहा पृथ्वी का अंत हो जाता है। परन्तु उसने यह भी सुना था कि यहा से हजारो मील दूर दक्षिण की ओर भारत देश है जहा लोग असख्य देवी-देवताओं के बडे-बडे मदिर बनाते हैं, विचित्र वस्त्र पहनते हैं और हजारो देवताओ की पूजा करते हैं। उत्तर मे यूनान है और फिर सीरिया जहा रोमिल बबर रहते हैं। शेवा एक ऐसा सुन्दर नगर है जहा एशिया अफ्रीका और पूर्वी देशो के लोग आकर व्यापार करते हैं। अनेक देशो के व्यापारियो से जहाज और नावो का कर यहा की रानी शेवा वसूल करती है। शेवा एक समृद्ध और शक्तिशाली राज्य है। यही मेडास रहता है जो भयानक शक्तिवाले वैज्ञानिक धनुष तैयार कर सकता है।

सुलेमान और बैनेजा शेवा नगर की एक सराय मे ठहर गए। यहाँ शाम के समय भोजन करने के लिए जब सुलेमान बैठा तो एक सुन्दर स्त्री टाई (गिटार जैसा एक बाजा) बजाने लगी और दूसरी रबाब बजाकर अस्थरत देवता को प्रसन्न करने वाला नृत्य करने लगी। सुलेमान ने देखा एक आदमी बराबर उसे घूर रहा है। उसे ऐसा लगा जैसे उसने इस आदमी को रास्ते मे उसने बार-बार देखा है। सुलेमान एकदम चौकन्ना हो गया। वह आदमी झपटकर सुलेमान से पास पहुचा और तलवार खीचकर लडने लगा। बेनेजा सावधान था। उसने खड्ग खीचकर उस आदमी के शरीर के दो टुकडे कर दिए। इतने मे ही और कई आदमी बनेजा और सुलेमान

को मारने के लिए टूट पड़े। सुलेमान ने अपने खड्ग से कइयों को काट दिया। सराय में भयानक युद्ध होने लगा और सुलेमान सराय से निकलकर एक ऊंची दीवार के सहारे-सहारे अंधेरे में भागने लगा। कई आदमी उसका पीछा कर रहे थे। उसने रुककर फिर युद्ध किया और कई आदमियों को घायल कर दिया।

बनेजा सराय में ही फंस गया। सुलेमान दोनों आदमियों को मारकर खून में लथपथ खड्ग लिए उस बगीचे की दीवार पर चढ़ गया और धीरे से बगीचे के अन्दर मुलायम दूब पर कूद गया। चांदनी रात थी। बगीचे के बीच में खूबसूरत संगमरमर का छिछला सरोवर था। उसका पानी दूध की तरह सफेद था। उसमें एक सोने जैसी सुन्दर स्त्री निवसना खड़ी थी। सुलेमान उसे बराबर देखता रहा और हाल में हुई हत्या और भयंकर युद्ध की सभी घटनाओं को भूल-सा गया। धीरे धीरे वह उसी ओर बढ़ने लगा। पानी में खड़ी वह स्त्री धीरे-धीरे दोनों हाथों में पानी लेकर अपने नंगे शरीर पर उछाल रही थी। दूध जैसे पानी की मोती जैसी बूंदें उसके रजत शरीर पर ढुलक कर फिर पानी में मिल जाती। सुलेमान उस अनिंद्य रूप सुन्दरी को देखकर एनोवेथ के सौन्दर्य को भूल सा गया। वह सोचा करता था कि संसार में एनोबेथ से बढ़कर कोई और सुन्दर स्त्री नहीं है। लेकिन आज वह नग्न और खुला सौन्दर्य देखकर पागल-सा हो गया। उसे जरा भी डर नहीं रहा और वह फटे कपड़ों में खून से लथपथ खड्ग उठाए तेजी से सरोवर के पास पहुंच गया।

सुन्दरी उस विदेशी को देखकर इठलाती हुई मुस्कराई। उसकी मुस्कराहट में एक रहस्य था। ऐसा रहस्य जैसे कोई शिकारी अपने जाल में फंसे शिकार को देखकर मन ही मन मुग्ध होता है। वह अपनी नग्नता को उभार कर सुलेमान को अपनी ओर आकर्षित करने लगी और सुलेमान बेबस उसे टकटकी लगाए देखता ही रहा। उस सुन्दरी ने पानी से निकल कर झीने कपड़े से अपना शरीर ढक लिया। वह उसकी ओर बढ़कर पूछने लगी, 'क्या तुम किसी आदमी की हत्या करके आए हो ?"

'हां, एक नहीं, कई आदमियों की, क्योंकि वे मेरी हत्या करना चाहते थे। इसीलिए मैंने खड्ग से उन्हें मार दिया और जान बचाकर इस बगीचे



शबा की रानी बल्कीज और इसराइल का सम्राट सुलेमान

मे कूद आया। मुझे क्या पता था कि यहा तुम जैसी अपूर्व सुन्दरी मिलेगी।"

"तुम विदेशी हो ?'

वह हा' कह ही पाया था कि दूर मदिर की घटिया बजने लगी। सुन्दरी ने कपडे बदले और सुलेमान से कहा—"जल्दी करो, देर हो रही है। य कपडे उतारकर नहा लो फिर मेरे साथ तुम्हें पूजा मे चलना है। आज विलास की वेला है। कितनी उजली चादनी छिटकी ह। एक पल की भी देर मत करो।"

"किसकी पूजा—मैं तो सिफ जेहोवा की पूजा करता हू। वही मेरा देवता है। उसी ने सारे ससार को बनाया है। क्या तुम उसी की पूजा करोगी ?" सुलेमान ने विस्मय से झीने वस्त्रो मे लिपटी अधनग्ना की ओर देखा।

"यह सवाल मत पूछो जैसा मैं कहती हू वैसा करो।" यह कहकर शेवा की रानी बल्कीज उस ओर चल दी जहा से घटिया बजने की आवाज आ रही थी।

सुलेमान उसके रूप-लावण्य पर मुग्ध होकर यह भूल गया कि वह शेवा मे क्यो आया है और उसका साथी बेनेजा कहा है। कही वह किसी मुसीबत मे तो नही फस गया है। सुलेमान बल्कीज के रूपपाश मे कद हो गया।

चारा ओर रोशनी फैल रही थी। रगीन फानूसो से तीखी रोशनी छिटक रही थी। बल्कीज न हाथ पकडकर सुलेमान को अस्कतरत देवी के सामने खडा कर दिया। उसन अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए और सुलेमान को भी ऐसा करने का इशारा किया। वह मूख की तरह ऐसा ही करने लगा। उसे ऐसा आभास हो रहा था कि वह कुछ भी नहीं वरन् शेवा की रानी का एक बुद्धिहीन दास है। उसे शेवा की रानी ने सम्मोहित कर दिया था। मदिर की घटिया फिर बज उठी। प्राथना खत्म हो गई।

आधी रात बीत गई। बल्कीज ने सुलेमान को हाथ पकडकर अपने साथ ले लिया। वह महल में अन्दर जाने लगी। फूला की महक से सुलेमान का दिल उमग रहा था। बल्कीज ने कहा—"घबराओ मत विदेशी। अब हम दोनों अपनी देवी अस्कतरत का प्रसन्न करने के लिए एक-दूसरे को अपना शरीर अपण करेंगे। यह शेवा की परम्परा है। महीने मे एक बार

हम आधी रात को देवी की पूजा करते हैं और उसी दिन शेवा की रानी नग्न होकर अपना शरीर किसी विदेशी की गोद मे रखकर सो जाती है।" सुलेमान मन ही मन मुग्ध हो रहा था। इस देश का रिवाज और यहा की देवी उसे अच्छी लगी।

आज विलास की बेला थी। बल्कीज ने सारी रात सुलेमान के साथ बिताई और भोर होते-होते जसे ही मदिर की घटिया बजने लगी रानी ने इस अनजान परदेसी को मुक्त कर दिया।

उसे सराय मे बेनेजा स.ता हुआ मिला। दोपहर के बाद वे लोग धनुष बनानेवाले मैडास की खोज मे निकल पडे। मैडास एक काना आदमी था। सुलेमान ने उसे एक हजार धनुष-बाण बनाने की आज्ञा दी और जब मडास ने उसके लिए धन मागा तो उसने बहुमूल्य रत्नो का बटुवा अपने गले मे लटके डोरे मे दिखा दिया।

रानी बल्कीज शेवा की स्वामिनी थी। आज उससे मिस्र के दूत मिलने आए थे। रानी ने अपने को अधिक सुन्दर बनाने का प्रयत्न किया। वह जानती थी कि पुरुष स्त्रियो से केवल सौन्दय के कारण आकर्षित होते हैं। इसी समय एक सेनाध्यक्ष वहा उपस्थित हुआ और उसने रानी के सम्मुख रत्नो का एक बटुवा खोल दिखाया और कहा— 'कल रात दो व्यक्ति एक सराय के पास जा रहे थे। उनको कई लोगो ने घेरकर मार डालना चाहा। उन लोगो ने वीरता से युद्ध किया। तब तक नगर रक्षक वहा पहुच गए। उन्होने उन दोनो को गिरफ्तार कर लिया। उनमे से एक के पास ये कीमती रत्न निकले हैं। उस समय नगर रक्षको का मुखिया अज्जल था। उसने उन दोनो को कैद मे डाल दिया। ये रत्न अपने साथियो मे बाट दिए और अपने लिए ज्यादा हिस्सा रख लिया। किन्तु एक व्यक्ति को कुछ नही मिला। उसने आकर सारी बात मुझे बताई। मैंने इन सबको गिरफ्तार कर लिया है और रत्न आपके सामने मौजूद हैं। अज्जल बाहर खडा है।

रत्नो को देखकर रानी की आखें फटी की फटी रह गई। उसने कहा— 'विदेशी को ले आओ।"

मनिका ने बन्दीगह का ताला खोला और वह उन्हें बाहर ले आया। उन्हें स्नान कराया गया और सुगन्धियां लगाई गई। बहुमूल्य वस्त्र पहना

कर जब दोनो विदेशी रानी बल्कीज के सामने लाए गए तो मिस्र के दूतो ने उठकर सुलेमान का अभिवादन किया, क्योकि उनके देश की राजकुमारी एनोबेथ से विवाह करने के लिए सुलेमान मिस्र गया था। तभी से वे उसे जानते थे। सुलेमान ने देखा कि उनके सामने शेवा की रानी थी। वही स्त्री जो कि चादनी रात म उसे पानी मे नगी खडी मिली थी। जब उन्हे रानी के समक्ष पेश किया गया तो बल्कीज ने भी इस व्यक्ति को पहचान लिया। दूत लोग बीच मे मे हट गए और बल्कीज और सुलेमान फिर एक-दूसरे से मिल गए। रानी का विलास, वैभव और आनन्द फिर से थिरकने लगा। रानी ने गर्व से कहा—"दक्षिण के समुद्रो पर पुथ से लेकर भारत तक मेरे जहाजो का अधिकार चलता है। शेवा के शौर्य से आतकित होकर कोई मेरे नाविको पर हमला नही करता। चारो ओर मेरा ही राज्य है।"

सुलेमान ने गम्भीर स्वर मे कहा—"टायर, यरूलम और शेवा, यह तीन राज्य सारे ससार पर अधिकार कर सकते हैं।'

बल्कीज की महत्वाकाक्षा जाग उठी। वह सुलेमान को एक दीवार के पास ले गई। यहा ससार का एक नक्शा बना हुआ था, उस ससार का जिसको ईसा से एक हजार वर्ष पहिले के लोग जानते थे। वहा अरब था, उसके दक्षिण पश्चिम की ओर शेवा की भूमि थी, लाल सागर था, और सीरिया (असीरिया) तथा बेबीलोन की भूमि मे इजराइल तक फैला हुआ सीरिया का रेगिस्तान था। मिस्र, और नील नदी समुद्र के पास थे। सुलेमान ने फिर कहा—"यदि शेवा मेरे साथ हो और तुम सम्राज्ञी और मैं सम्राट बना रहू तो मैं सारे ससार को जीत सकता हू।"

बल्कीज उत्तेजित हो उठी। उसने प्रेम से उसे चूम लिया।—"सुलेमान ऐसा ही होगा। आओ अब तुम मेरे देवता और देवियो की उपासना करने चलो। समय हो गया है।" उधर घटियो की आवाज आ रही थी।

उधर जोपप फिलिस्तीन के सम्राट उमरी से जोड-तोड कर रहा था। इजरायल और फिलिस्तीन की सीमाए एक थी। फिलिस्तीन की राजधानी गाजा थी। फिलिस्तीन का राजा उमरी जोपप की मदद करके उस इजरायल का सम्राट बनाना चाहता था। सुलेमान की अनुपस्थिति मे फिलिस्तीनी

लोग यहूदियो को सता रहे थे। वे बार-बार इजरायल की सीमा म घुसकर लूटमार करते और जोथप का नाम लेकर उत्पात मचाते। इससे यहूदी क्षुब्ध हो गए और वे अपने सम्राट सुलेमान के वापस आने की राह देखने लगे। अनाथ और सूने इजरायल पर फिलिस्तीना का घिराव और आतक बढता जा रहा था।

उमरी की पुत्री राजकुमारी केन्डिया न जोथप को अपने प्रेम जाल मे जकड रखा था। वह चाहती थी कि मेरे पिता की मदद से जोथप सुलेमान की जगह इजरायल का सम्राट बन जाए और मैं साम्राज्ञी बनू। उधर जोथप की पत्नी नो-आमी प्रणय वचिता थी। उसे जोथप प्यार नही करता था। वह बराबर जोथप की योजनाओ को धमगुरु नथान और सुलेमान की रानी एनोवेथ से मिलकर विफल कराने मे लगी रहती थी। वह देशभक्त थी और अपने देशवासियो से प्यार करती थी। उधर बढते हुए सकट को देखकर धीरे धीरे एनोवेथ का मन भी फिर गया। वह जेहोवा को ही अपना दवता मानने लगी और उससे रात दिन प्राथना करने लगी कि किसी तरह वे सुलेमान को शेवा से वापस बुलवा दें। उसका दिल फेर दें। वह जल्दी ही यहा लौट आए।

नथान ने एनोबेथ से सलाह करके इनहोतक नाम के विश्वासपात्र दूत को तेज घोडे पर शेवा रवाना कर दिया। उसका काम था कि वह किसी भी तरह सम्राट सुलेमान को इजरायल पर आने वाले भयकर सकट की सूचना दे दे। फिलिस्तीन म जोरो से युद्ध की तैयारिया हो रही थी। वे लाग बडे अच्छे योद्धा थे और प्राचीन क्रीट राज्य के समुद्री राजाओ के वशज थे। फिर भी वे यहूदियो को जोथप की सहायता के बिना जीत नही सकते थे।

इनहोतक शेवा के महल में जा पहुचा। उसने देखा सम्राट रानी बल्कीज के प्रेम मे पागल है। वह वभव और विलास के रग मे डूब रहा है। उसने ज्यो ही यरूशलम की दशा का समाचार सुनाया तो सुलेमान एकदम होश मे आ गया।

उसने जेहोवा से क्षमा मागी और शेवा की रानी बल्कीज से विदा ली। सुलेमान बनेजा को साथ लेकर इनहोतक के साथ स्वदेश लौट पडा। वह

व्यग्र हो उठा। उसके सामने यरूशलम और इजरायल की रक्षा का प्रश्न था। वह जानता था कि सीरिया की शक्ति क्षीण हो चुकी है, मिस्र बूढा है, फीनिशिया और शेवा केवल नौसैनिक शक्ति में ही बढे-चढे हैं, टायर से सहायता आना असभव है, क्रीट की शक्ति छिन्न-भिन्न है, यूनान छोटे-छोटे राज्यो मे बट गया है। ऐसे सकट के समय मे इजरायल का कौन साथ दे सकता है। वह इसी सोच में था। चलते-चलते आठ दिन बीत गये।

अब वह सीरिया के रेगिस्तान को पार कर रहा था। दूर पर भयंकर तूफान दिखाई दिया। उसे लगा मानो जेहोवा उससे क्रुद्ध हो गए हैं। वह काप उठा। तूफान उसकी ओर बढता आ रहा था। चारो ओर पीला-पीला अधेरा छा गया। बालू से बालू टकराने लगी। रेत के पहाड उड रहे थे। तीनो एक-दूसरे से ओझल हो गए। सुलेमान ने अपना घोडा रेत मे लिटा दिया और वह उसकी पीठ के सहारे चिपक कर छिप गया। वह और उसका घोडा रेत मे डूब गए।

उसे लगा 'जैसे' मैंने बहुत पाप किया है। अपने देवता को छोडकर बल्कीज की देवियो को पूजा है। मैं पापी हू। वह हिचकी भर-भर कर रोने लगा। जेहोवा से बार-बार क्षमा मागने लगा। कुछ ही घटो मे तूफान उतर गया। सूरज की रोशनी चमकने लगी और तीनो फिर मिल गए। चालीस मील का सफर तय करके शाम तक ये लोग यरूशलम पहुच गए। एनोबेथ ने सम्राट का स्वागत किया और अगले दिन से इजरायल में युद्ध की तैयारिया शुरू हो गई।

मेडास के बनाये हुए १००० धनुषो ने फिलीस्तीन के रथो को तोड दिया। उमरी घायल हो गया और जोथप जीवित पकडा गया। उमरी की पुत्री केडिया को सुलेमान की सेना के लोगो ने गिरफ्तार कर लिया। थोडे से युद्ध के बाद ही फिलीस्तीन इजरायल के आगे घुटने टेक गया। एनोबेथ विजय-गर्व के साथ सुलेमान के समीप आ गई। नथान की राय से जोथप को प्राण दड दे दिया गया। नथान ने सुलेमान को आशीर्वाद दिया कि अब वह ससार मे अमर हो गया है।

कई वर्ष बीत गए। सुलेमान एनोबेथ के प्रेम मे और जेहोवा की भक्ति मे खो गया। इजरायल समृद्ध हो चला। उसका धन एव सैन्यशक्ति बढती



वैज्ञानिक धनुषों ने फिलिस्तानियों को परास्त कर दिया

जा रही थी। उधर जोथप का मित्र नरकल जीवित था। वह सुलेमान से बदला लेने की फिराक मे था—जोथप के प्राणदंड का बदला। वह ताबीज वाला सौदागर बनकर किसी तरह शेबा की रानी के दरबार मे जा पहुंचा और सुलेमान की झूठी डींगें हांककर शेबा की रानी को फुसलाने लगा। रानी का दिल इजरायली शक्ति और सुलेमान के गौरव को सुनकर झकृत हो उठा, जैसे वह सोते से जाग गयी हो, उसे वह विश्व विजय का स्वप्न याद आ गया जो आज से कई वर्ष पहले उसने और सुलेमान ने साथ-साथ देखा था। उसने घोषणा कर दी कि वह सारे ससार के वैभव का प्रतिरूप लेकर विश्व विजय की याद दिलाने के लिए सुलेमान के पास इजरायल जाएगी और विजय के स्वप्न को पूरा करेगी।

चारो ओर खबर फैल गई—शेबा की रानी इजरायल जा रही है।

सारे मसार का मीलो लम्बा कारवा तेका, हयूमा, सूर और उनके बियावान नखलिस्तानो मे होकर इजरायल जायगा। पहले से दूतो ने यह सवाद सुलेमान तक पहुचा दिया। इजरायल मे रानी के स्वागत की तैयारिया होने लगी। शेवा की रानी का मीलो लम्बा कारवा इजरायल की ओर चल पडा। रास्ते भर गावो मे, चरागाहो मे भेडो को सजा कर रानी का स्वागत किया गया।

हजारो रथ, बौने, लोहे के पिंजरो मे सफेद चीते, गुरिल्ले, भारत के हाथी, कवचो स सज्जित चमचमाते अस्त्रो वाले योद्धा, जूबियन के शेर, विचित्र रत्नो की मजूषाए, हाथीदात, पुखराज, चदन की पालकिया, विचित्र देवताओ की मूर्तिया, लाल, पीली, काली और सफेद जातियो के देश विदेश वाले मनुष्य और अत मे हाथीदान के सफेद रथ पर बैठी शेवा की रानी बल्कीज।

विश्व विजय का यह कारवा इजरायल पहुचा और चमक से यह देश एक बार कौंध उठा। यरूशलम मे तहलका मच गया। स्वय सम्राट सुलेमान और रानी एनावेथ ने नगर के मुख्यद्वार पर बल्कीज का स्वागत किया। बल्कीज ने कहा, "सम्राट, मैं ये सारा ससार तुम्हे दिखाने लाई हू। आज विश्व विजय का स्मृति दिवस है और उसी आकाक्षा को याद दिलाने के लिए मैं स्वय तुम्हारी राजधानी मे आई हू।"

अब शेवा की रानी, सुलेमान और एनोवेथ बात करते-करते सिंहासन के पास पहुच गए। बगल के आसन पर एनोवेथ बैठ गई। बल्कीज ने सुलेमान से पूछा "मैं एक पहेली पूछती हू। बताओ, कौन-सा प्रेम है जो कभी नही मरता ?"

सुलेमान ने कहा, 'स्त्री-पुरुष का प्रेम मर जाता है। मा और बेटे का प्रेम मिट जाता है। ईश्वर से मनुष्य का प्रेम भी सदैव नही बना रहता, पिता और पुत्र का प्रेम भी अमर नही होता। किन्तु एक प्रेम सहज है, जो कभी नही मरता। वह है—आत्म प्रेम जो प्रत्येक प्राणी को अपने आप से होता है। उसकी अपनी प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक कार्य पर शासन करता है और मृत्यु तक बराबर बना रहता है।"

अब बल्कीज न खडे होकर ताली बजाई। दास भीतर घुस आए। अवगुठनो मे ढके हुए दो व्यक्ति सामने लाए गए। बल्कीज की आज्ञा से उनके

चेहरे खोल दिए गए। 'सुलेमान ने झुककर देखा—पीले रग की एक औरत थी। बल्कीज ने कहा—"मीडिया और फारस से बहुत दूर पूव की ओर एक पीली जाति रहती है। यह स्त्री उसी जाति की है। मैं इस दासी को तुम्हें भेंट करती हू।"

रानी एनोबेथ आश्चयचकित हो गई। उसने सुना था कि चीनी नाम के व्यक्ति ससार मे रहते हैं। लेकिन आज तक उन्हें देखा नही था। दूसरा व्यक्ति लाल था। सुलेमान ने कहा, "लाल रग का आदमी ! अपने यौवन मे मैं एक बार टायर गया था। वहा मुझे फिनीशिया के नाविक मिले थे। लगभग पाच सौ वप पूव उनका एक जहाज हेराक्लिज के खभो से पश्चिम की ओर भटक गया था। कई सप्ताह जहाज पानी पर तैरता रहा और फिर वह एक विशाल भूमि पर पहुचा जहा लाल रग के आदमी रहा करते थे। सैकडा वर्षों से फिनीशिया के लोग उनकी कहानियाँ सुनाया करते थे और सुनने वाले गप्प समझकर हस देते थे।

बल्कीज ने विजय-गौरव से कहा, "ससार विशाल है सुलेमान, ससार विचित्र है। जो इस पर शासन करेगा, वही इसको खोजने की शक्ति भी प्राप्त कर सकेगा।'

सुलेमान के भीतर अतद्वन्द प्रारम्भ हो गया। विश्व विजय का स्वप्न फिर उसके अदर धधकने लगा। बल्कीज उत्सुकता से आखो मे आशा लिए उसकी ओर देख रही थी। एनोबेथ ने उसके मन की इस हलचल को समझ लिया। सहसा सुलेमान शात हो गया।

बल्कीज ने फिर कहा, "मैं तुम्हें ससार के अनेक आश्चय दिखाऊगी। मैं जो तुम्हें दिखा रही हू, यह सब तुम्हारा है सुलेमान।" वह फिर एक बार उस सपने को जगाने की चेष्टा कर रही थी जो शेबा में दोनो ने साथ-साथ देखा था—विश्व विजय का स्वप्न।

अब सुनहरी गाडियाँ आने लगीं—भारत के मदिर का नक्शा एक गाडी पर रखा हुआ था। जिसका स्वण चमचमा रहा था। नोसिस का श्वेत-नगर जिसमे बेल का मदिर और माइनोस के महल थे। सुदूर यूनान के मईसीनिया के सिहद्वार का प्रतिरूप भी था। बेबीलोनिया के विशाल उपवन का प्रतिरूप, सूय देवता का मिस्री मदिर, चपटी छतों

वाला ऊर, सूसा, नैनवे, फीनीशिय' का बदरगाह—किस देश और चीज का नमूना वहा नही था। एनोबेय उन नमूना को देखकर आश्चर्यपूर्वक बोली, "बल्कीज, ससार महान है, विचित्र है।"

सुलेमान उन गाड़ियों के बीच मे घूमने लगा। फिर वे सुनहरी गाड़िया वहा से हटा दी गई। अब दस चदन के बक्से लाए गए—एक बूढा खोलकर उन्हे दिखाने लगा। सुनहले प्यालो मे आफीर और अरब के गध-पदार्थ, भारत के कीमती लाल और अफीका से लाया हुआ पाडु, हीरे, हाथी-दात की मूर्तिया, मलमल के रग बिरगे वस्त्र एक के बाद एक न जाने कितनी वस्तुए प्रकट होने लगी। आज तक ऐसा कोष वहा किसी ने भी नही देखा था।

बल्कीज ने कहा—"यह सब तुम्हारा हो जाएगा। सुलेमान इजरायल की थल सेना और शेबा और टायर की जल सेना मिलकर तुमको सारे ससार का सम्राट बना देगी।"

सुलेमान ने उत्तर दिया—"तुम मुझे लालच दे रही हो, किन्तु यह नही हो सकता। मैं युद्ध नही करूगा।"

बल्कीज क्रोधपूर्वक बोली—"क्यो नही हो सकता ?"

"मेरे देवता जेहोवा ने इसे वर्जित कर दिया है। वह सारे ससार का स्वामी है। मैं युद्ध करके पाप नही कर सकता।"

बल्कीज का मतव्य पूरा नही हुआ। वह निराश हो गई। उधर नरकल का षड्यत्र भी अभी तक सफल नहीं हुआ था। उसने देखा—रानी परेशान है। और सुलेमान किसी भी तरह नही मान रहा है। वह रानी से मिला। रानी ने उसे पहचान लिया। वह वही नरकल था—जोथप का दोस्त, जो शेबा मे व्यापारी बनकर रानी के सामने आया था। इसी ने इजरायल की समृद्धि और शक्ति की डीगें हाककर शेबा की रानी को प्रभावित किया था।

नरकल ने रानी को अभिवादन करने के बाद कहा—"ऐसा लगता है कि आप सुलेमान से पराजित हो गइं।"

'नही।" रानी ने ऊचे स्वर मे उत्तर दिया।

"अब सुलेमान से बदला लेने का एक ही रास्ता है—" कहकर नरकल रानी की प्रतिक्रिया देखने लगा।

"क्या ?"

"तुम एनोवेथ को बीच मे से हटाकर सुलेमान से अकेले मे मिलो।"

"अगर वह मेरी बात फिर भी न माने तो ?"

"तो दूसरा रास्ता यह है कि तुम शराब के प्याले मे जहर मिलाकर उसे हमेशा के लिए सुला दो।'

"छि, मैं ऐसा हरगिज नही कर सकती। उसे जहर देने से मुझ क्या मिलेगा ?" रानी ने नरकल को फटकार दिया, बोली, "मैं, विश्व विजय की योजना बनाने के लिए यरूशलम आई हू। मुझे सुलेमान से ईर्ष्या द्वेष नहीं है, लेकिन याद रखो—सुलेमान बहादुर है। उसे जहर देना, इससे बड़ा पाप कोई दूसरा नही हो सकता।' यह कहकर बल्कीज ने नरकल से बात करना उचित नही समझा।

वह निराश होकर चला गया। उसने देखा कि रानी पर उसकी बात का कोई प्रभाव नहीं हुआ। नरकल महल से निकलकर जा ही रहा था कि जोथप की विधवा पत्नी नाओमी ने उसे पहचान लिया। वह जान गई कि नरकल यहा अवश्य शेबा की रानी से मिलकर सुलेमान के खिलाफ षडयत्र करने आया है।

नाओमी नरकल से तभी से घृणा करती थी जब से उसने उसके पति जोथप को फिलिस्तीन के सम्राट् उमरी की पुत्री केडिया के प्रमजाल म फसवा दिया था। वह जानती थी कि नरकल की कुमत्रणाओ के कारण ही जोथप की जान गई। केडिया और उसके पिता उमरी का राज्य बरबाद हो गया। इसीलिए नाओमी नरकल के षड्यन्त्र को विफल करना चाहती थी। उसने समझ लिया कि नरकल अवश्य ही सुलेमान के विरुद्ध कोई षडयन्त्र करने आया होगा। किसी न किसी की हत्या का षडयन्त्र। नाओमी ने नरकल की प्रतिहिंसा का समाचार सम्राट् सुलेमान तक पहुचा दिया।

अब नरकल ने एक और चाल चली। उसने धन देकर महल के सेवक को अपने पक्ष म कर लिया। सेवक न शराब में जहर मिलवा दिया। शाम हुई। बल्कीज अब सुलेमान से विदा लेने वाली थी सुलेमान अकता ही बल्कीज के पास आया। उसने कहा— बल्कीज विश्व विजय का विचार छोड दो। इतने म ही सेवक शराब का प्याला लेकर आ गया। सुलेमान

को पहले ही सूचना मिल चुकी थी। उसने शराब का प्याला बल्कीज की ओर बढ़ा दिया।

बल्कीज ने प्याला ले लिया और वह उसे अपने होठों की ओर ले जाने लगी। वह निर्दोष और अनजान थी। सुलेमान समझा नहीं, यह क्या रहस्य है ? उसने फौरन बल्कीज के हाथ से प्याला गिरा दिया। बल्कीज चौंक गई, "सुलेमान, यह सब क्या है ?"

"तुम्हें नही मालूम, इस प्याले मे जहर था ?"

"जहर।"

"हां, इस वक्त मैंने तुम्हारी परीक्षा करने के लिए यह प्याला तुम्हें दिया था, लेकिन मैं समझ गया हू, तुम निर्दोष हो। इस षड्यन्त्र मे तुम्हारा हाथ नही है।"

"यह नरकल का षड्यन्त्र हैं, सुलेमान !" बल्कीज को क्रोध आ गया।

"तुम ठीक कहती हो। मैं नरकल को अभी पकड़वाता हू। मेरे सैनिक उसकी खाल खीच लेंगे।" सुलेमान क्रोध मे भरकर चला गया।

नरकल पकड़ा गया। सुलेमान ने उसे मृत्युदण्ड दिया। अब उसका क्रोध शात था। उसे स्वय से घृणा पैदा होने लगी थी। अब वह यरुशलम से तुरन्त वापस शेबा जाना चाहती थी। सुलेमान और बल्कीज दोनो ने एक-दूसरे की परीक्षा कर ली। दोनो को एक दूसरे पर सन्देह हुआ था। उनका प्रेम जो अस्कतरत के सामने विलास की बेला मे प्रकट हुआ था, वह अब जेहोवा के प्रभाव से क्षीण हो गया। बल्कीज सुलेमान के पास आई, "सुलेमान" मैं अब बिदा लेती हू। मैं अपना जो ससार तुम्हें दिखाने के लिए यहा तक लाई थी, यहीं छोड़े जाती हू। तुमने मेरे प्रेम मे अविश्वास किया है।"

"नही बल्कीज। यह सब एक षड्यन्त्र था, एक धोखा। इसे तुम भी नही जानती, मैं भी नही जानता। इसे जानते हैं जेहोवा।" सुलेमान ने अपना पक्ष मजबूत करने की चेष्टा की।

"सुलेमान, मैं तुम्हारे पास विश्व विजय की योजना बनाने आई थी। अब यह सम्भव है। मैं तुमसे प्रेम करती हू और नारी के रूप में आज तुम्हारे सामने पराजित हो चुकी हू।" शेबा की रानी ने अपनी दृष्टि झुका ली।

"मुझे विश्वास है कि मैं एक देश की रानी के रूप मे तुम्हारे सामने पराजित नही हो सकूंगी।"

"पहले विश्व विजय, फिर प्रेम और फिर राजा रानियां की बातें। यह सब मैं समझा नही बल्कीज ?"

"जल्दी ही समझ जाओगे सुलेमान। मैं दोनो देशो के बीच व्यापारिक सधियां करना चाहती हू, ताकि हम दोनो एक-दूसरे की भलाई कर सकें।"

"अब तुम प्रेम और विश्व विजय से व्यापार पर आ गई हो। अब दो देशो के शासक एक-दूसरे से प्रेम करते हैं तो यही होता है।"

"एक-दूसरे से व्यापार करके हम अपने-अपने देशो को समृद्ध बनाएं यही मेरी कामना है।" बल्कीज ने सुलेमान की ओर कटाक्ष करते हुए कहा।

दूसरे दिन बल्कीज ने यरुशलम से विदा ली और विश्व विजय का स्वप्निल कारवा वही छोड दिया। शेवा की रानी शांति के देवता जेहोवा की भक्ति के सामने नतमस्तक हो गई। अब उसका मन शरद के धुले आकाश की तरह निर्मल था।

मेरी डब्ल्यू० शैली

मेरी शली का जन्म ३० अगस्त, १७९७ को लन्दन मे हुआ था। प्रसिद्ध सम्पादक और 'स्वतन्त्र विवाह सिद्धात' के प्रचारक विलियम गौडविन मेरी के *पिता थे। मेरी की माता वौलस्टोनक्रैफ्ट ने 'स्त्रियो के अधिकार'* (द राइटस आफ वीमैन) नामक पुस्तक लिखकर प्रसिद्धि प्राप्त की थी।

महाकवि शली ने अपनी पहली पत्नी हैरियट को छोड दिया था। गौडविन के यहा शली को मेरी दिखाई दी और शैली ने उसे रिझा लिया। इस तरह कुमारी मेरी कवि शैली के साथ जुलाई, १८१४ मे यूरोप भाग गई। जब हैरियट (शैली की पहली पत्नी) का देहान्त हो गया, तो शैली ने मेरी से ३० दिसम्बर, १८१६ को विवाह कर लिया। १८२२ मे कवि शैली की मृत्यु हो गई और मेरी शैली विधवा हो गई। विधवा जीवन मे मेरी शैली ने अपने पति की कृतियो पर काम करना आरभ कर दिया और स्वय भी अनेक कृतिया लिखीं। २१ फरवरी, १८५१ को मेरी वोलस्टोन क्रैफ्ट शली अपनी कृतियो को अमर कर सदैव के लिए ससार से मुक्त हो गई।

प्रस्तुत उपन्यास 'फ्रैंकेंस्टीन' मेरी शैली ने साहित्य मे एक विचित्र और भयानक कथा लिखने की दृष्टि से सन् १८१७ मे लिखा था। यह इनका प्रसिद्ध उपन्यास है। इसमे विज्ञान के विकास और मानव की प्रकृति विजय की लालसा को चित्रित किया है। इसमे *मध्यकालीन रसायन विज्ञान* की भी चर्चा है।

पिशाच का प्रतिशोध

पिशाच का प्रतिशोध विश्वप्रसिद्ध कवि शली की पत्नी मरी शैली की प्रसिद्ध पशानिक और पासिक कृति है, जिसमें उन्होंने मानव ही नहीं पिशाच की कामवासना की ओर इंगित किया है।

जेनवा का एक वज्ञानिक युवक जो रसायन विज्ञान का शास्त्री था, सहसा अमृत की खोज करते-करते एक विशालकाय पिशाच का सृजन कर बैठा। इसकी पशाचिक वृत्तियों न इसी रचनाकार वैज्ञानिक की पत्नी, भाई और मित्रों की हत्याओं का ताता लगा दिया और अपने लिए एक विकराल पिशाचिनी की मांग उस वज्ञानिक से की। यही रोमांचक और भयावनी कथा इस सकलन मे प्रस्तुत है।

—सम्पादक

फ्रैंकेन्स्टीन जेनेवा के एक सरकारी कमचारी का लडका था। उसका लालन पालन बडे लाड-प्यार से हुआ था। पढने मे बहुत ही तेज था। रसायन विज्ञान पढने म तो उसकी विशेष रुचि थी। इस विषय की प्राय सभी प्रमुख पुस्तकों का उसने अध्ययन कर लिया। १७ वष की आयु मे विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिए उसने विश्वविद्यालय म प्रवेश किया। इससे पहले ही उसकी माता मर चुकी थी। मृत्यु के कुछ दिन पहले ही उसकी माता ने उससे यह वायदा करा लिया था कि वह एलिजाबेथ लवेज से ही विवाह करेगा। लैवेज मिलान के एक ऊचे परिवार की लडकी थी। उसके अनाथ हो जाने पर फ्रैंकस्टीन के माता पिता ने ही उसे पाला था। सौदय मे इस लडकी की सानी न थी।

रसायन की पुस्तकें पढने-पढते उसम 'अमृत' खोजने की एक अनोखी इच्छा पदा हो गई। जब वह आधुनिक विज्ञान का छात्र था। रसायन तथा

प्राकृतिक विज्ञानो के अध्ययन मे उसे बडा मजा आया। इन विपयो के विशेपज्ञो के सम्पर्क मे आकर उसने बहुत-सी नई-नई बातें सीखी। उसने इतना परिश्रम किया कि दो वर्ष के बाद ही इन गुरुजनो को अपने शिष्य, फ्रैंकस्टीन को पढाने के लिए कुछ न रहा।

विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त करके वह जेनेवा लौटने ही वाला था कि उसके वैज्ञानिक मस्तिष्क मे एक आश्चर्यजनक आविष्कार फूट निकला। उसकी यह खोज ऐसी थी कि इससे वह स्वय भी चौंक पडा। एक दिन जब वह मरघट का चक्कर लगा रहा था तो उसके मस्तिष्क मे अचानक ही यह बात कौंध गई कि मनुष्य के जीवन का रहस्य क्या है ? यह कैसे शुरु होता है ? क्यो शुरू होता है ? लोग उसे पागल समझते रहे। मगर उसने यह जान लिया कि बेजान शरीर मे किस प्रकार जान डाली जा सकती है।

फिर क्या था। खुशी से उसके पैर जमीन पर नही पड रहे थे। वह अपने को विधाता समझने लगा। अब वह इस दुर्लभ खोज को बेकार क्यो गवाए। अत उसने एक मानव का निर्माण शुरू कर दिया। एक ऐसा मानव जो इस सृष्टि के मानव से भी बढ-चढ कर हो।

मानव भी ऐसा-वैसा नही, आठ फुट लम्बा। वह ऐसे ही मानव के निर्माण मे जुट गया। वह रात को सुनसान कब्रो मे उतर जाता। कभी डाक्टरो के चीड फाड के कमरो मे घुस जाता। कभी-कभी जानवरो को पकडकर उनको अनेक प्रकार से यातनाए देता। इसी बीच उसने अनेक दुस्साहसिक काम किए। उसने लगन से रात दिन एक कर दिया। उसे तो निर्जीव को जीवित करके एक नये मानव का निर्माण करना था।

इस तरह परीक्षण करते-करते फ्रैंकेस्टीन को महीनो क्या वर्षों बीत गए। उसने अपनी प्रयोगशाला मे हड्डी, मास मज्जा-रक्त, जैसी अनेक चीजें इकट्ठी करली। उसने दुनिया से अपने को बिल्कुल अलग थलग कर लिया था। लोगो से मिलना जुलना तक बन्द कर दिया। वह रात दिन इसी धुन मे जुटा रहता और अपने लक्ष्य को पाने के लिए बदहवास की तरह काम करता रहता।

जाडे की एक ठडी रात थी। जोरो से पानी बरस रहा था। चारो ओर

घनघोर अधेरा और सन्नाटा था। फ्रैंकेस्टीन ने इसी क्षण उस आठ फुट लम्बे और बेजान ढाचे मे प्राण फूकने का निश्चय कर लिया। आखिर उसने उस मुर्दा शरीर मे जान डाल ही दी। मुर्दे ने जान आते ही अपनी पीली-सी आखें खोली। रात के उस भयानक वातावरण मे फ्रैंकेस्टीन सहसा डर से काप उठा। उसके दिल की धड़कन घबराहट मे तेज हो गई और उसका शरीर थरथर कापने लगा। अपने ही द्वारा बनाए गए इस पैशाचिक मनुष्य को देखकर स्वय फ्रैकेस्टीन के होश उड गए।

वह तेजी से अपने सोने के कमरे की ओर भागा और घबराकर चारपाई पर गिर पडा। पता नही कब उसे नीद आ गई। जब उसने आखें खोली तो उस पिशाच को अपने कमरे मे खडा देखकर वह फिर चौंक उठा। वह विकराल मनुष्य ऐसा लगता था जैसे कोई मरा हुआ राक्षस जीवित होकर खडा हो गया हो। अब फ्रैंकेस्टीन को अपनी जान का खतरा लगने लगा। अपनी रक्षा के लिए वह हेनरी के पास भागा गया। यह उसका कालेज का बडा पुराना साथी था। यहा पहुचते ही उसे तेज बुखार हो गया। वह चारपाई पर लेटे-लेटे महीनो तक बडबडाहट करता रहा। करीब एक साल तक इसी हालत मे रहने के बाद उसे कुछ-कुछ होश आने लगा।

ठीक होते ही वह जेनेवा लौटने की योजना बनाने लगा। इसी बीच उसे दुख भरी खबर मिली कि उसके भाई की किसी ने गला घोटकर हत्या कर दी है। उसका मन आपदाओ से काप उठा और भारी मन से वह घर की ओर रवाना हो गया। लगातार यात्रा करते-करते जब वह जेनेवा के पहाडी प्रदेशो मे पहुचा तो थोडी देर के लिए वह ठिठक कर रह गया। सामने देखता है कि वही भयानक पिशाच खडा है। उसको अब यह समझते देर न लगी कि उसके भाई की हत्या इसी पिशाच ने की है।

घर जाकर फ्रैंकेस्टीन क्या देखता है कि बचपन से ही उसके परिवार मे पली जेस्टिन को उसके भाई की हत्या के अभियोग मे पुलिस ने पकड लिया है। छुडाने के लाख प्रयत्न करने पर भी निर्दोष लडकी—जेस्टिन को मौत की सजा दे दी गई। इन दो घटनाओ से फ्रैकेस्टीन को बहुत गहरी वेदना हुई। उसने सोचा कि वह अपने द्वारा बनाए गए उस पिशाच के बारे मे लोगो को बता दे। लेकिन यही सोचकर कि लोग उसे कही पागल न

समझने लगें उसने इस रहस्य को किसी से नही खोला। उसे अपन किए पर बार-बार दुख हो रहा था। उसकी मगेतर एलिजाबेथ उसे बार-बार सात्वना देती मगर जैसे ही उसे अपनी इस रचना की याद ताजा हो आती, उसका हृदय घृणा और वेदना से भर जाता।

मन के बोझ को हल्का करने के लिए वह आल्पस पवत की ओर चला गया। एक दिन जब वह पहाडियो पर घूम रहा था, सहसा उसे फिर वही पिशाच दिखाई दिया। वह बहुत तेजी से फ्रैंकेस्टीन की तरफ बढता आ रहा था। फ्रैंकेस्टीन डर से कापने लगा। मगर वह भाग भी नही सकता था। पिशाच ने उसे घेर लिया और अपनी कहानी सुनने के लिए मजबूर कर दिया। उसने अपनी कहानी शुरू की—'जीवित प्राणियो म मुझसे दुखी जीवन किसी का भी नही है। सभी लोग मुझसे बडी घृणा करते हैं। मेरी छाया स दूर भागते हैं। मैं पहले जन्म मे दयालु और भला आदमी था, लेकिन मेरे सूनेपन तथा दुराशाओ ने मुझे आदमी से पिशाच बना दिया। यहा तक कि तुम मेरी रचना करने वाले होते हुए भी मुझसे दूर-दूर भागते हो। तुम अगर चाहो कि मैं किसी को दुख दिए बगैर शांति से रहू तो यह तुम्हारे बस की बात नही है।" पिशाच ने अपनी कहानी को आगे सुनाते सुनान फ्रास से निकाले गए एक बूढ आदमी की कहानी भी सुनाई जिसकी दो सतानें थी। पिशाच ने कहा—"मैंने इन लोगो के बगल के कमरे मे रहना शुरू कर दिया। मैं दीवार के एक छेद मे से देखा करता था। कभी-कभी इनसे बातें भी किया करता था। धीरे धीरे मुझमे अनेक आदमी जसे अच्छे गुण पैदा हाने लगे। मेरे मन मे दया तथा ममता के भाव उमडने लगे। मैंन इन्ही लोगो की मदद से बोलना तथा पढना लिखना भी सीख लिया।'

उसने आगे कहना शुरू किया "मगर मैंने एक गलती कर डाली। मैं भावना के आवेश म आकर उन लोगो से एक दिन मिलने चल दिया। लेकिन ज्यों ही उन्होंने मेरी पैशाचिक सूरत देखी उनके दिल घृणा और भय से काप गए। और मैं फिर दुनिया मे अकेला ही रह गया।'

पिशाच न अपनी कहानी खतम करके फ्रैंकेस्टीन से कहा—"क्या तुम मेरी एक कामना पूरी कर सकोगे ?"

"कौन सी कामना ?" फ्रैंकेस्टीन थोड़ा घबराकर बोला।

मुझे अपनी ही जैसे पिशाचिनी चाहिए।"

फ्रकस्टीन का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

पिशाच ने कहा—-डरनेकी कोई बात नही है। मैं अपनी औरत को लेकर दक्षिण अफ्रीका के जगलो की ओर चला जाऊगा।"

आखिर फ्रकेस्टीन ने उसकी यह बात मान ही ली। वह इस पिशाच के लिए एक औरत बनाने मे जुट गया। लेकिन इस पिशाच के निर्माण करते समय जो उत्साह फ्रैंकेस्टीन मे था उसका स्थान अब भय ने लिया। उसका मन हमेशा उसे पहले ही धिक्कारता रहता था कि यह क्या कर चुका है और अब क्या कर रहा है ? फिर भी इस पाप के प्रायश्चित्त करने के लिए उसने धीरे धीरे यह काम पूरा करना तय कर लिया। अब इस पिशाचरचना म प्राण फूकना भर रह गया था कि सहसा वह पिशाच वहा आकर खडा हो गया। फ्रैंकेस्टीन न उस पिशाच का भयावना रूप देखते ही क्रोध मे आकर उस पिशाचिनी का ढाचा तोड दिया। बस फिर क्या था। पिशाच प्रतिशोध से पागल हो उठा। उसने फ्रकस्टीन से कहा कि याद रखना इसका बदला मैं तुम्हारी शादी के वक्त लूगा।

पिशाच क्रोध से पागल होकर तरह-तरह के उत्पात करने लगा। उसने हेनरी की भी हत्या कर दी और हत्या के सदेह मे पकडा गया निर्दोष वैज्ञानिक फ्रैंकेस्टीन। यहा तक कि फ्रकेस्टीन अपने को निरपराध साबित न कर सका और तीन महीने तक जेल मे सडता रहा। बाद म किसी तरह मुकदमे म बरी होकर वह जेनेवा लौट आया।

उसके माता पिता बडी उत्सुकता से उसकी राह देख रहे थे। एलिजा वेथ की तो इतजार करते-करते आँखें थक गई थी। फ्रैंकेस्टीन ने आते ही फौरन विवाह कर लिया। विवाह के समय भी वह बराबर डरता रहा। क्योंकि हेनरी की मृत्यु के कारण वह और भी सशकित हो चुका था। अब वह सुहागरात मनाने के लिए इवियन नामक स्थान की ओर रवाना हो गया।

पति-पत्नी यहा पहुचकर एक सराय म ठहरे। एलिजावेथ पहले ही सोने के कमरे म चली गई। सोने के कमरे म जाने से पहले फ्रकेस्टीन अच्छी

तरह घर की निगरानी कर रहा था। वह उस पिशाच के आने के सभी रास्ते बद कर देना चाहता था। ताकि वह रात सुख से बिता सके। अचानक एलिजाबेथ के कमरे मे एक भयानक चीख गूजी। फ्रैंकेस्टीन उसके कमरे की ओर तेजी से दौडा। वहा पहुचकर जो उसने देखा उसके रोगट खडे हो गए। एलिजाबेथ के शरीर का एक एक हिस्सा मरोडकर तोड दिया गया था। वह बिस्तर पर मरी पडी थी। खिडकी के पास खडे पिशाच पर जब फ्रैंकेस्टीन की निगाह पडी तो उसने एलिजाबेथ की तरफ देखते हुए भयावने दातो को फाडकर तेज अट्टहास किया। फ्रैंकेस्टीन न ज्योही उसे मारने के लिए पिस्तौल निकाली वह खिडकी से कूदकर पीछे की ओर गहरी झील मे कूद गया।

फ्रैकेस्टीन ने अब यह तय कर लिया कि स्वय जीने के लिए पहले पिशाच को मारना होगा। और वह उसका निरतर पीछा करने लगा। पिशाच भागता चला जा रहा था। फ्रैंकेस्टीन ने उसका पीछा करते करते फ्रास और भूमध्यसागर तक के प्रदेशो को पार कर लिया। पिशाच भी काले सागर मे होता हुआ रूस और साइबेरिया को पार कर गया। फ्रैकेस्टीन भी बराबर उसका पीछा कर रहा था। अत म वे दोनो उत्तरी ध्रुव के उस क्षेत्र मे पहुच गए जहा चारो ओर बफ ही बफ थी। बफ मे पीछा करने के कारण फ्रैकेस्टीन का स्वास्थ्य बहुत गिर गया था। यहा वह बहुत बुरी तरह कमजोर होकर बफ के दलदल मे फस गया। अत मे एक ब्रिटिश यात्री ने उसे बचाने की कोशिश की। फ्रैंकेस्टीन ने सारी कहानी इसी ब्रिटिश यात्री को मरते मरते सुना दी। वह अपने द्वारा बनाए उस भयावने पिशाच को नष्ट करता करता स्वय ही मिट गया। मगर उस पिशाच का अत न कर सका।

पृथ्वी के गर्भ मे वैज्ञानिक खोज

मेरे चाचा प्रो० हाडविग, जो कई विषयो के विशेषज्ञ और खनन एव पुरातत्व के ज्ञाता थे, सहसा दो सौ वष पुरानी एक पाण्डुलिपि को देखकर कुछ खोजने लगे। इन्हें आइसलैण्ड की राजधानी रैंकजैविक के बारे मे इसमे कुछ पढने को मिल गया। पुस्तक के बीच मे भोजपत्र जैसा, कुछ विचित्र लिपि वाला कागज भी उन्हें सहसा मिला और वह उसे पढने की कोशिश करने लगे।

बहुत माथा-पच्ची करने के बाद उस लिपि मे से कुछ-कुछ उनकी समझ मे आने लगा। यह रूनिक भाषा थी जो आइसलैण्ड मे बोली व लिखी जाती थी। उन्हें इस पर्चे म अन सेनुसेम का नाम पढने मे सफलता मिल गई। यह १६वी सदी का एक विद्वान प्रोफेसर था जिसने १२वीं शताब्दी के इस रहस्यमय भोजपत्र पर लिखी लिपि को रखा हुआ था। उसी ने लेटिन भाषा मे एक सन्देश छोडा था कि पथ्वी के मध्य मे एक ज्वालामुखी का गह्वर है जो ठीक धरती के गभ म पहुचता है।

इस अंग्रेजी, फ्रेंच व लेटिन लिपि के कई वाक्यो को पढकर मेरे चाचा ने यह निष्कष निकाल लिया कि अन सेनुसेम का १६वी शताब्दी में दिया गया यह सकेत हमे धरती के मध्य गम मे खोज करने के लिए प्रेरित करता है।

इस पर्चे में उन्होंने पढ़ा—"स्नफिल के योकूल नामक पवत के ऊपर बने मुख (गह्वर) मे जहाँ स्कारटेरिस की शृखलाए हैं जुलाई के महीने में पहुचकर नीचे उतरने पर कोई भी अभियानी दल ठीक पृथ्वी के केन्द्र में पहुँच सकेगा।"

इसी पढ व समझकर मेरे चाचा कई हाथ ऊंचे उछल पड़े और हमें वहां पहुंचने की तैयारियां करने का आदेश दे दिया। उन्होंने कुछ ही समय में कुछ नक्शे तैयार कर लिये ताकि वहां पहुंचने का सही मार्गदर्शन मिल सके।

यह पूरा द्वीप ज्वालामुखियों से भरा हुआ था। इन्हीं ज्वालामुखियों के पुंज का नाम योकूल था। योकूल का अर्थ है—'बर्फ के द्वीपों के बीच के ग्लेशियर'।

मैंने अपने चाचा से प्रश्न किया —"फिर, स्नैफिल्स का क्या मतलब है?"

वह तुरन्त बोले—"मेरी उंगली को देखो। वह पश्चिमी तटों को इंगित कर रही है जहां आइसलैण्ड की पूर्व राजधानी रैक्जेविक थी।

इसी के ठीक मध्य में ५,००० फीट की ऊंचाई पर जो पहाड़ियां हैं, वे ही स्नैफिल कहलाती हैं। यहीं से हम पृथ्वी के गर्भ में नीचे उतरने के लिए एक बड़ा गुफा-मुख मिलेगा।'

मैंने कहा—"असम्भव। यह सब कल्पना की बातें हैं। इन भयानक लावाओं से भरे ज्वालामुखियों के गुह्य में जाकर क्या हम अपने प्राण गवायेंगे?"

"नहीं, ये ज्वालामुखी पर्वत शान्त हैं। यहां जिस अन सेकुसेम नामक प्रोफेसर ने इसकी खोज की थी, उसने पता लगा लिया था कि जून के अन्त में स्कारटेरिस की चोटी पर सूर्य ऐसी स्थिति में आ जाता है कि स्नैफिल पहाड़ की दो चोटियां शान्त रहती हैं। इन्हीं में से एक यह चोटी है जिसके मुख में उतरने से हम पृथ्वी के मध्य केन्द्र में पहुंच सकते हैं।"—उन्होंने समझाया।

मेरे चाचा की एक दत्तक पुत्री थी—ग्रेचेन। मैंने उसी से शादी करने की बात तय कर ली थी। मैंने बिना चाचा से पूछे उसे इस यात्रा के बारे में सब कुछ बता दिया। उसने इस यात्रा की भयावहता जानते हुए भी मुझे चाचा के साथ जाने की अनुमति दे दी।

चाचा ने आदेश दिया कि हम देर न करके परसों सुबह ही रवाना हो जायेंगे। हम हेम्बर्ग (जर्मनी) से कापनहेगन (डेनमार्क) होकर रैक्जेविक

(आइसलैण्ड) पहुचेंगे।

आखिर वह दिन आया और हम स्नैफिल पवत तक पहुचने मे सफल हो गये। हमे यहा से प्याले की शक्ल मे बने ज्वालामुखी के मुह मे उतरना था। हमने अपने साथ धरती के मध्य गम के सम्ब ध मे लिखी कुछ किताबें, जो सेनुसेम ने लिखी थी, ले ली। इनसे हमे अच्छा मागदशन मिलना था। हमने अपने साथ एक गाइड, हुस भी ले लिया। वह यहा के बारे मे सब कुछ जानता था।

हमने थर्मामीटर व अ य यत्रो के अलावा रस्से, कुदाल, कम्पास, लालटेन, दूर तक देखने वाले चश्मे, रात मे देख सकने वाली दूरबीनें, दो ब दूकें, बैटरी आदि बहुत-सी जरूरत की चीजें ले ली। हमे बताया गया कि भूगर्भ मे तापमान १५० सेंटीग्रेड और ३१८ फारनहीट से कम न होगा। लगभग १० दिन की पैदल यात्रा के बाद हम ज्वालामुखी के मुख पर पहुच सके। अब हम समुद्र तल से हजारो फीट उपर आ गये थे। यहा हमने घोडो को छोड दिया, जिनपर बैठकर चढाई तय की थी।

गुफा मुख के पास ही हमने सारी रात बिताई। इस चोटी का नाम था स्कारटेरिस। यह गुफा मुख करीब १०० मीटर चौडा था। इसमे नीचे उतरना तोप के मुह मे उतरने के समान था। बर्फ की तहो के बीच से हम ज्वालामुखी के चौडे मुख मे उतरने लगे। एक लम्बी मजबूत रस्सी से हमने एक-दूसरे को बाध रखा था। छोटी छोटी क दरा जसे खण्डो को पार करते हुए हम गुफा मुख मे नीचे की ओर उतरने लगे।

सहसा एक चट्टान पर हमे उसी भाषा मे, जिसमे भोजपत्र था, अन सेनुसेम का नाम लिखा दिखाई दिया। अ दर अधकार था। हम बीच मे ही टिके रहे और सूरज की तेज रोशनी होने का इ तजार करते रहे। दोपहर को आकाश साफ हुआ और हम और नीचे उतरने लगे।

गाइड हुस भी हमारे अभियान मे साथ था। चाचा ने कहा—'अब हमे गहराई में उतरना है, कठिन यात्रा अब शुरू होगी।"

ज्वालामुखी के मुख का आकार कुए की तरह सकरा होने लगा था। हमने रस्सी के सहारे उतरना आरम्भ किया और सारा सामान आपस मे लिया। लावाओ के अनेक ढिप्पे सीढी की तरह हमारे पांवो के नीचे

स्वत ही आते थे और हम नीचे उतरते चले जा रहे थे। हम लगभग ५,६०० फीट यानी एक मील की लम्बाई के गहरे गर्त में पहुच चुके थे। ऐसा ज्ञात होता था कि अब गर्त का तल आ गया है। हम पृथ्वी के गर्भ में नीचे तक पहुच चुके हैं। अब हमें यहां आराम कर लेना चाहिए।

सुबह ८ बजे जब हम सब उठे तो दूर दायीं ओर एक कन्दरा जैसा मुख दिखाई दे रहा था। बेरोमीटर से नापने पर पता चला कि हम समुद्र-तल के बिन्दु तक नीचे उतर चुके हैं। मेरे चाचा ने बेरोमीटर का तापमान २११° लिखा। दिशा ई० एस० ई० लिखी। डायरी मे १ जुलाई, ४ बजकर १७ मिनट का समय भी नोट कर लिया।

जाच करने पर पता लगा कि हम केवल १,१२५ फीट नीचे ही आए हैं। अब एक गुफा द्वार दिख रहा है। हम गुफा मे घुसने की तैयारी करने लगे। यहा घुसन पर लगा कि तापमान ७०° ८०° है। दुबारा हम गुफा मे नीचे उतरते चले गये। काफी गहराई पर जाने पर जब हमने जाच की तो पता चला कि हम समुद्र-तल से लगभग १०,००० फीट नीचे आ चुके हैं। गुफा का रास्ता सुगम और सपाट था। कहीं-कहीं ऊचा-नीचा भी था। फिर भी हम निरन्तर लम्बाई मे चलते ही रहे। सबने पीठ पर आवश्यक उपकरण व सामान लाद रखा था। गले मे दूरबीन व लालटेन लटका रखी थी। ऐसा लग रहा था कि हम सपाट नहीं, गहराई की दिशा मे बढते जा रहे हैं। गुफा हमे नीचे की ओर ले जा रही है।

सकरी कन्दराए हमे नीचे लेटकर व रेंगकर पार करनी पडती थी। हम लगातार चलते रहे। हमे सोये बिना दो दिन हो गये। काफी गहराई मे उतरने के बाद सामने अचानक रास्ता बन्द हो गया और दीवारें आ गईं जो गुफा मे आगे बढने से हमे रोक रही थीं। दीवार पर कुछ जीवाश्म, पौधों और जीवों के अवशेष चिह्न रूप मे चित्रित दिख रहे थे। ये कदाचित् प्रागैतिहासिक काल के रहे होंगे।

अधेरे मे दीवार के सहारे सहारे टटोलने के बाद लगा कि अन्दर एक और सुरग है। इसम कोयला जैसी तेज गन्ध आ रही थी। यह सुरग करीब ८० फीट चौडी थी। यहा हम गैस सूघने से बेचैन होने लगे। यहा हम रात भर रुके रहे। हमारा राशन खत्म होन लगा था। हमने अब पानी का

सहारा लिया। आगे बढना अब सम्भव न था।

हमे सुरग तक पहुचते-पहुचते सात दिन पूरे हो चुके थे। अब ८ जुलाई आ गई। हम वास्तव मे अधमरे हो चुके थे। हमे न कुछ साफ दिखता था, न ही कोई आवाज सुनाई पडती थी। घोर सन्नाटा था। मैं चाचा की गोदी मे बैठकर सचमुच रोने लगा और एक छोटे बच्चे की तरह वापस लौट चलने के लिए मचलने लगा।

पानी खत्म हो जाने से हमारी जिन्दगी के लिए और खतरा बढ रहा था। मैंने आगे बढने से बिलकुल इनकार कर दिया। चाचा आगे और कुछ खोजने की जिद पर अडे थे। उन्होने रूठकर कहा, "आप लोग चाहें तो हस को लेकर वापस लौटने लगें। मैं अभी और रुकूगा तथा कुछ और खोजने का प्रयास करूगा।"

पानी का खत्म हो जाना हमारे लिए सबसे बडा खतरा था। हमने चाचा को अकेला न छोड एक दिन और भू-गर्भ मे सघर्ष करने की ठानी और जान की बाजी लगा दी। हमने पश्चिम की ओर जाने वाली एक छोटी सुरग का पता लगा लिया। यह वह स्थान था, जहा आरम्भ मे गर्म पृथ्वी ने ठडा होना शुरू किया होगा। यहा हमे शान्ति और ठडक महसूस होने लगी।

जाच करने पर हमको पता चला कि ये सुरग वाली चट्टानें तांबे, सोने व प्लेटीनम की हैं। हमे सर-सर की कुछ आवाजें भी आने लगी। दीवारों पर कान लगाने पर लगा कि दीवार के पीछे पानी का कोई झरना बह रहा है। मैं चक्कर खाकर बेहोश होने लगा और करीब चार घण्टे तक बेहोश पडा रहा। चाचा व हस मेरे पास थे, जब मैंने आखें खोलीं। हमारा पीने का पानी खत्म हो ही चुका था। हस इधर उधर काफी देर छोटी सुरग में भटकता रहा।

सहसा हस चिल्लाया—यहा पानी है! यहा सुरग के नीचे की ओर मीठे पानी की एक नदी बह रही है। हम मरेंगे नहीं। हम पानी पीकर कई दिनों तक जिन्दा रह सकते हैं। ईश्वर ने हम साहसी अभियानियों की वास्तव मे मदद की है।

आइसलैण्ड की राजधानी रेकजैविक से दक्षिण पूर्व मे साढ़े सात मील भू गर्भ मे पहुच गये थे। हम जिस सुरग मे अब चल रहे थे, वहा पैरो के नीचे पानी बह रहा था। वह भी एकदम ठण्डा। यहा तापमान भी कम था। ऐसा लगता था कि हम नीचे की ओर सीढियो पर उतर रहे हैं। अब हम समुद्र-तल से १०-१२ मील नीचे पहुच चुके थे।

मैंने चाचा से कहा—क्या अब हम सचमुच आइसलैण्ड के नीचे नहीं हैं? हमने नक्शा व कुतुबनुमा निकाली। हम वास्तव मे धरती के नीचे नहीं, खुले महासागर के गर्भ मे पहुच गये थे। हमारे सिर पर समुद्र हिलोरें ले रहा होगा— मैंने कल्पना की।

हम काले सगमूसा की चट्टानो पर चल रहे थे। हम पृथ्वी व समुद्र मे भी अनेक मील की गहराई पर नीचे थे। हमारा खून ठण्डा पडने लगा। हम पानी के सहारे ही जिन्दा थे। पूरी जुलाई निकल गई और वापस लौटने की बजाय हम भू-गर्भ मे ही निरन्तर चलते रहे। हमने इस झरना प्रदेश का नाम हस जलक्षेत्र ही रख दिया। यहा का पता वास्तव में हस ने ही लगाया था। हम मृत्यु का भय तो लग रहा था, पर दैवकृपा से हम थके मादे जीवित थे।

अगस्त का महीना शुरू हो गया।

अब हमे चट्टानो के धडकने व टूट-टूटकर गिरने की आवाजें आ रही थी। दूसरी ओर हम पानी की कलकल की तीव्र आवाज भी सुनाई पड रही थी। यहा घना अधकार बढता जा रहा था। हाथ को हाथ न दिखता था। लालटेनो की मद्धिम रोशनी मे ही हम सरक रहे थे। लगता था कि यह सुरग मौत की सुरग थी जो हम मृत्यु के मुख मे ले जा रही थी।

६ अगस्त आ गया। हम धरातल के नीचे-नीचे लगभग १०० मील आ चुके थे। सहसा सूर्य का तीव्र प्रकाश दिखने लगा। ऐसा लगा जैसे हम मध्य समुद्र के तट पर आ गये हैं। सवेरा हो रहा था। सूर्य का प्रकाश देखकर जैसे हमें नया जीवन मिल गया। यहा ठण्डी हवा बह रही थी। वातावरण शान्त था।

हमने सोचा, क्या हम वापस पृथ्वी पर समुद्री यात्रा करके ही पहुच पायेंगे। आकाश मे घने बादल भी दिख रहे थे। यहां किसी भी प्रकार की

किसी बदबू या गैस का अहसास नही हो रहा था। हमे जैसे नई जिन्दगी मिल रही थी। भूख-प्यास सभी गायब हो चुकी थी।

हम समुद्र के किनारे-किनारे आगे बढ़ते रहे। दूर पर हमे खुम्बी या कुकुरमुत्ता जैसी वनस्पति का जगल दिखाई देने लगा। सामान्य खुम्बिया नही—सभी भीम आकार की हाथी जैसी लम्बी-चौड़ी खुम्बियां झुण्डों मे खड़ी थी।

मेरे चाचा ने बताया—जब दुनिया शुरू हुई होगी, उस समय खुम्बिया इसी आकार की रही होगी। बाद मे धरती पर हमने उन्हें छोटा बनाकर उगा लिया।

यहा हमने जो घास देखी वह भी बहुत लम्बी और काफी बड़ी थी। बलूत व देवदार के पेड साधारण पेडो से १० गुने बड़े थे। जो भी वनस्पति हमे यहा दिखाई दी, वह पृथ्वी की सामान्य वनस्पति से ८-१० गुना लम्बी व ऊची थी। वास्तव मे धरती बसने से पूव धरती के पेट मे लहराता यह समुद्र धरती का भू गर्भ थल ही रहा होगा, ऐसी कल्पनाए हम करने लगे।

समुद्र के किनारे या जहा-जहां थल था, हम उधर ही बढने लगे। कन्दरा और सुरगो से बाहर आने पर हमे अब जीवन का खतरा न था। कोई भी वनस्पति खाकर हम जीवित रह सकते थे। मीठे पानी के सोते उन पहाडो के मध्य बहकर समुद्र मे गिर रहे थे।

दैत्याकार वृक्ष और घास ही यहा नही थी। आगे चलने पर हमने पशु और अन्य जीवो के अस्थि-पजर भी देखे। इनका एक एक दांत ही ७ ८ फीट लम्बा-चौडा था। दैत्याकार प्राणियो की हड्डिया और पजर ज्यो-के-त्यो थे। उन्हें गहरा हरा, काला व मटमैला प्रकृति ने कर दिया था। किन्तु वह आकार मे साफ दिखते थे।

जैसे ही हमने हाथी जसे एक जीव के पजर को पकडा, वह राख की तरह झरकर टूट गया। समुद्र का पानी भी जहरीला और खारा कम था। हम सबने वहा स्नान किया और अब पृथ्वी पर वापस लौटने की तैयारी शुरू कर दी।

समुद्री खरपतवार व बासो जसी लकडियों से हमने एक नाव-जैसा

बेडा बना लिया। हमने यहा मछलिया पकडकर भोजन आरम्भ कर दिया। यहा हमे अधी व विशेष आकार की मछलिया मिली जो पूर्व प्रागैतिहासिक रही होगी।

दूर-दूर तक समुद्र-ही-समुद्र दिख रहा था। हवा के भरोसे पाल लगाकर हमने अपना बेडा आगे बढा दिया। हम क्षितिज को खोजने लगे। दो दिन तक लगातार हम मीलो लम्बे समुद्र में चलते ही रहे—सोते जगते। समुद्र की गहराई जानने के लिए हमने लोहे का मोटा लगर नीचे डाला। उसे किसी समुद्री जन्तु ने दातो से तोड-मरोडकर टेढ़ा कर दिया। इस समुद्र मे अवश्य ही लोहे से भी मजबूत दातो वाले जल जीव रहे होगे, ऐसा हमने सोचा।

१८ अगस्त आ गया। हमे आइसलैण्ड से चले डेढ महीने से भी ज्यादा समय हो गया था। मैं थककर सो गया। मैं उस समय जगा जब बेडा पानी पर ऊपर की ओर उठने लगा था। एक भारी मास का लोथडा-पानी की सतह पर बार-बार बेडे से कुछ दूरी पर ऊपर-नीचे होता हुआ दिख रहा था।

बडा भयानक मुह फैलाये एक समुद्री दैत्याकार जीव पानी के २०-२२ फीट ऊपर उठता हुआ दिखाई दिया। अगर वह एक झपट्टा मारकर हमारी ओर बढता तो हमे बेडा समेत चूर चूर कर देता। मैंने तुरत बन्दूक उठा ली और निशाना लगाकर गोली चलाने ही वाला था कि चाचा ने मुझे रोक दिया। चाचा ने कहा—इसकी चमडी इतनी कठोर है कि गोली फिसल जायेगी और कोई असर न होगा।

ऐसे दो जन्तु धीरे धीरे बेडे की विपरीत दिशा मे बढ़ने लगे। एक छिपकली के मुह वाला और मगर जसे दाँत वाला था। एक मछली और छिपकली का वणसकर दिखता था, जिसकी लम्बी साप जैसी पूछ भी उसके मुह के पास लहराती हुई कभी-कभी दिख जाती थी।

कुछ दूर हटकर दोनो जल-जीवो मे युद्ध होने लगा। हमारा दिल भी कापने लगा। मगर जैसे दात वाले समुद्री जीव ने साप व मछलीनुमा लम्बे-चिकने जीव की गर्दन मुह मे दबा ली और उसे रक्तरजित कर मृतप्राय कर दिया। धीरे धीरे दोनो समुद्र मे डूब गये।

□

आज २१ अगस्त है। हम इसी बेडे पर रात दिन मे २०० मील का सफर तय कर चुके है। लगता है कि हम अब इग्लैंड के नीचे के भाग म हैं। कपास की गेंद जैसे घने बादलो का झुण्ड समुद्र के ऊपर आसमान म एकत्र होने लगा। घना अधेरा छा रहा था और ऐसा लगता था, कोई तूफान आने वाला है। हवा मे बिजली की चमकती तरगें थरथराने लगी। मैं भी डर से थरथराने लगा। समुद्र पर बेडानुमा नाव हमने स्थिर कर दी। हमने हवा की गति की ओर बेडे को बहने देना ठीक समझा और पतवार चलाना बन्द कर दिया। लहरो पर हमारी नाव नीचे ऊपर उछालें लगाने लगी। गडगडाहट के बारूद जैसे धमाके होने लगे। पूरे दिन व पूरी रात तूफान का ताडव चलता रहा। हम तूफान से जूझते-जूझते थक चुके थे। कई बार बेडा पानी मे भी डूबने लगता। सामने आग का चमकता लाल गोला तूफान के बीच झूलता दिखाई देता रहा। ऐसा लगता था कि हम यूरोप के नीचे अब चैनल मे फ्रास के नीचे हैं।

एक तेज धमाके व छपाट के साथ बेडा उछलकर किनारे पर खुश्की मे आ गिरा। हमने मौत के डर से आखें मीच ली। लगा, समुद्री यात्रा खत्म हो गई। बेडा टूटकर टुकडे टुकडे हो गया। हम फिर जमीन पर आ गये और पृथ्वी के मध्य केन्द्र की रोमाचक यात्रा समाप्त हो गई।

□

हमारा बन्दूकें खो गईं। कुछ मसालेदार खाना, जो अगले चार माह के लिए हमने मीठे पानी के समुद्र के पास जमा किया था, हमारे पास था। लेकिन हम वापस जमीन पर उस गुफा-मुख मे नही आये थ जो ठण्डे ज्वालामुखी का आइसलड म था और जहा से हम पृथ्वी के गभ मे उतरे थे। हम दक्षिण की अपेक्षा अब उत्तर दिशा म थे। हवा का उलटा रुख हमे यहा खीच लाया था।

"समझ मे नहीं आता, अब हम कहा जायें, किस ओर आगे बढ़ें। रात भर हम वहीं रुके रहे। हमे समुद्र के किनारे रेत मे पुरातन मनुष्य की खोपडी का ककाल पडा मिला। हमने उसे उठा लिया। यह आदिम युग के मनुष्य का सिर था। यह अभी भी पशु के चमडे जैसी मोटी खाल से ढका

था। दांत मुह में थे। खोपड़ी की हड्डियों पर ज्यों के-त्यों चमड़ा आवृत्त था। सिर पर मिस्र की ममी की तरह बाल भी थे। ये कैसी रेत मिट्टी थी जिसने विकृत हुए बिना इस नरमुण्ड को ज्यों का त्यों रखा—हम सोचने लगे।

यह धरती के नीचे की दुनिया थी। पृथ्वी के अन्दर थी। समुद्र के किनारे हाथियों का झुण्ड दिखाई दिया। दूर घना जगल दिखाई दे रहा था। पृथ्वी के गर्भ मे भी जगल, समुद्र, नदियाँ, पहाड़ और वन जीव हैं—यह वास्तव मे आश्चर्य की बात थी जिसे हम देखते ही रह गये।

हमने तय किया कि हम इस घने जगल मे अन्दर घुसें। किन्तु वन-जन्तुओं से बचने के लिए हमारे पास हथियार न थे। हमने यहा १२ फीट ऊंचे हाथी जैसे आकार के मसे भी देखे। मध्य समुद्र के अन्य विचित्र जन्तु भी देखे। जगल के बीच घुसने पर एक अजीब सी गुफा दिखी। पास जाकर देखने पर एक चट्टान पर हमे उसी भाषा मे, जो अर्न की थी, ए० एस० लिखा दिखाई दिया। ए० एस० का अर्थ था अर्न सेनुसेम—वही प्रोफेसर वैज्ञानिक जिसने पृथ्वी के गर्भ म उतरने की १६वीं सदी मे तैयारी की थी। ये गुफा मजबूत काले पत्थर की थी। ३०० वर्ष पूर्व कदाचित् प्रोफेसर अर्न यहा आये होंगे—यह उसी का प्रमाण है।

२७ अगस्त आ गया। हमने इस गुफा मे बारूदी विस्फोट करने की ठानी। हम काफी दूर खड़े हो गये। ३० सेकिंड मे चट्टान उड़ा दी। काफी देर के बाद एक बड़ा छेद दिखाई दिया। मध्य-समुद्र के पानी की तेज धारा इस छेद से फूट पड़ी। यह छेद चौड़ा होता चला जा रहा था। हम भारी प्रपात के नीचे आ गये। बेड़ा छोड़कर हमारा सारा सामान पानी मे बह गया। ऐसा लगा कि हम एक सकरे कुए मे फस गये हैं और तेजी से बेड़े पर बठे ऊपर की ओर उठे जा रहे हैं।

हम तेज रफ्तार से ऊपर उठे जा रहे थे। हममे से किसी को पता नहीं था, अब क्या होगा। गर्मी बढ़ती जा रही थी। तापमान १२०° से ऊपर था। अचानक हमने महसूस किया कि तापमान और बढ़ता जा रहा है। शरीर पर कपड़े पहने रहना कठिन हो गया। जिस सुरग मे हम ऊपर की ओर एक दबाव से फेंके जा रहे थे—वह भट्टी की तरह धधक रही थी। घड़घड़ाहट की आवाजों से लग रहा था कि हम किसी भूकम्प के बीच फसे हैं।

"सम्भवतया हम ज्वालामुखी के मुह मे हैं।"—चाचा ने फरमाया। हम गर्म उबलते पानी पर अपने टूटे हुए बेडे मे चिपके ऊपर की ओर उठे जा रहे थे। लग रहा था सारी सुरग कांप रही है। पता चला कि अब तापमान २००° तक पहुच गया है और हम सब कपडे उतारने पर भी झुलसकर जले जा रहे थे।

"हम जीवित वापस धरती पर नही पहुच सकेंगे।"—मैंने चाचा से कहा।

कुछ ही क्षणो मे हम ज्वालामुखी के मुह से निकलकर ठण्डी बर्फ की पहाडियो पर आ गिरे। बेडा भी टूटकर एक तरफ जा गिरा। हमे लगा कि हम भयकर लावा और आग से जीवित बच गये। हमारे शरीर पर गर्म राख चिपकी हुई थी। जैसे तोप के मुह मे से गोला निकलता है, ठीक ऐसे ही हम सभी बर्फ के पहाडो मे आ पडे। जब आखें खोली तो लगा कि हम यूरोप के उत्तरी क्षेत्र मे हैं। सारा शरीर जल और छिल गया था। खरोंचें बनी थी—सभी के बदन पर।

"क्या हम आइसलैड आ पहुचे?"—हस ने पूछा।

धीरे-धीरे सूरज निकल आया जो हमे तेज गर्मी से फिर झुलसाने लगा। अपने-आपको सभालने के बाद हम कुछ भोजन खोजने इधर उधर निकल पडे। कुछ दूर नीचे उतरने पर हमे लगा कि हम आर्कटिक क्षेत्र मे हैं। यहा पहाडो की तलहटियो मे वनवृक्ष भी थे। देवदार, बलूत, अनार, अगूर सभी दिखने लगे। मगर सभी जगली प्रजातिया थी। एक ओर ताजे पानी का झरना बह रहा था। हम फल तोडकर खाने लगे। इतने मे ही एक फटेहाल सस्ती सी पोशाक पहने १० १२ साल का लडका वहीं से आकर खडा हो गया। हम तीन अधनगे पुरुषो को देखकर लडका डरा और सहमा सा लगा।

मेरे चाचा ने जर्मन भाषा मे पूछा—"बेटे, इस पर्वत व प्रदेश का क्या नाम है?"

बच्चे ने सुनकर कोई उत्तर नही दिया। शायद वह जर्मन भाषा नही समझता था।

फिर चाचा ने वही सवाल फ्रेंच भाषा मे पूछा।

लडके ने सिर हिलाकर कहा—"वह नही समझ पाया कि वे क्या कह रहे हैं।"

फिर हमने इतालवी भाषा मे वही प्रश्न पूछा—"कम सो नोमा क्वेस्टा इजोला (इस द्वीप का क्या नाम है) ?"

"स्ट्राम्बोली"—लडके ने फौरन जवाब दिया और वह बलूत के पेडो की ओर भाग चला।

'स्ट्राम्बोली'—चाचा सुनकर प्रसन्न हुए। उन्होने दिमाग पर थोडा जोर देकर बताया कि हम भूमध्य सागरीय प्रदेश मे हैं। यही प्रदेश वास्तव मे धरती का मध्य केन्द्र है।

यहा समुद्र के किनारे बसी बस्ती के कुछ मछुए आ गये। उन्होने हमे कपडे पहनने को दिये और भोजन भी दिया। जसे हमारा जीवन लौट आया। सिसली के पास मैसीना नगर मे हम एक विशेष नौका से पहुचाये गये। यह ३० सितम्बर का दिन था। ४ अक्टूबर तक हम फ्रास पहुच गये और ५ अक्टूबर को हेम्वग (जमनी) वापस आ गये। सारे शहर मे हमारे पृथ्वी के गभ से वापस लौटने की खबर फैल गई। फिर समाचार एजेंसियो ने विश्व भर मे इस समाचार को फैला दिया कि हमने धरती के पेट मे जाकर कई महीने बिताये और विशेष खोजें की। अनेक लोगो ने इस समाचार पर विश्वास भी नही किया।

जसे ही हमने उन्हें पृथ्वी के गभ से लाए अनेक चीजो के नमूने दिखाये तो उन्हें कुछ-कुछ विश्वास होने लगा। हमार सम्मान मे उत्सव और दावतें होने लगी। हमने अन सेनुसेम प्रोफेसर द्वारा लिखा भोजपत्र, जो इस साहसिक यात्रा का मूल कारण था, नगर की पुरातत्व लाइब्रेरी मे जमा करवा दिया।

अब हस की बारी थी। इस बहादुर साथी को वापस आइसलड जाना था। इसकी विदाई से हमारी आखें भर आइ। हमे ऐसा वफादार, बहादुर गाइड कभी भी न मिलेगा। इस यात्रा से विश्व भर मे रोमाच फैल गया। सभी देशों की भाषाओ के समाचार-पत्रो मे हमारी यात्रा के विवरण छपे और इसी गौरव को हम सारी उम्र सजोये रहे। मेरी शादी अन्त मे ग्रेचेन से हो गई और मैंने चाचा के पास से हटकर अलग घर बसा लिया।

रहस्यमय द्वीप

बात १८६५ की है। फ्रांस मे गृहयुद्ध चल रहा था। जनरल ग्रान्ट गृहयुद्ध और खून खराबी को बन्द कराना चाहते थे। इसी बीच कुछ विद्रोहियो ने युद्ध से भागकर जनरल ली से सहायता लेने की योजना बनायी। पाच आदमियो का एक दस्ता गुब्बारे म बैठकर उडने के लिए तैयार था। उनके साथ टोप नाम का एक कुत्ता भी था। भयानक तूफान आया हुआ था। वह दस्ता तूफान रुकने की प्रतीक्षा मे कप्तान इजीनियर हार्डिंग के कमरे म रुक गया। इस दल मे स्पिलिट, सेलर पेनक्रोफ्ट और उसका मित्र ब्राउन, कप्तान का नौकर नेब आदि कुल मिलाकर पाच साहसी थे।

तूफान कुछ कम हुआ। निश्चित समय पर गुब्बारे की रस्सी टूट गयी और वह पाच आदमियो और कुत्ते को लेकर उडने लगा। गुब्बारे के आकाश मे उडते ही तूफान फिर बढ गया। तीन दिन तक ये लोग उडते रहे। उनमे से किसी को भी यह पता नही था कि वे इस समय कहा उड रहे हैं। तूफान रुका तो गुब्बारा नीचे गिरने लगा और अन्त में गुब्बारा समुद्र मे गिर पडा।

अपने को सभालते हुए भी वे पाचो एक दूसरे से अलग-अलग होकर समुद्र मे बहने लगे। बहते बहते वे एक द्वीप मे जा पहुचे। कप्तान हार्डिंग कुत्ते के साथ द्वीप के एक किनारे पहुचा। उसके साथी भी बहते-बहते उसी के आसपास पहुचे। सहसा साथियों ने कुत्ते की आवाज सुनी। उन्हें आशा बधी कि कप्तान भी वही-कही होगा। वे तुरन्त उधर चल पडे। कप्तान एक चट्टान के सहारे बेहोश पडा था। जब कप्तान को होश आया तो उसने अपने को साथियों के बीच म पाया। "लगता है हम अमरीका से दूर प्रशान्त महासागर के किसी टापू मे हैं!"—कप्तान ने आखें मलते हुए कहा—

"हमे इस टापू के पहाड की सबसे ऊची चोटी पर चढकर देखना चाहिए कि आखिर हम कहा हैं।"

जब कप्तान के साथी पहाड पर चढे तो उन्होंने देखा कि वह द्वीप मुश्किल से १०० मील लम्बा चौडा होगा। उस द्वीप के बीच मे एक ठण्डा ज्वालामुखी भी था। यहा इन लोगो के सिवा और कोई मनुष्य दिखाई न पडा। पहाड के दूसरी ओर एक झील थी। ये लोग फील की ओर चल दिये।

इसी तरह वहा रहते उन्हे कई सप्ताह बीत गये। एक दिन कप्तान बोला— 'मैंने नाइट्रोगिलसरीन नामक तेज विस्फोटक बना लिया है। हम झील के पानी को खाली कर देंगे। हो सकता है, इस झील मे ही कोई रहस्य हो।"

दूसरे दिन कप्तान ने चट्टान मे विस्फोटक पदार्थ रख दिया। कुछ देर बाद जोर का धमाका हुआ। जब धुआ साफ हुआ तो सचमुच झील का पानी उतर रहा था। शाम होते होते झील का पानी गुफा मे समा गया। सब लोग मशालें जलाकर गुफा मे उतरने लगे। काफी गहराई मे उतरने पर झील का स्रोत मिला। टॉप भौंकने लगा। कप्तान बोला—'टाप ने अभी कोई परछाइ देखी है।"

"लेकिन यहा तो कोई भी नही है। शायद वह नीचे पानी को देखकर भौंका होगा।"—नेब ने कहा।

कप्तान बोला—"यह तो समुद्र का पानी है। हम उतरते उतरते द्वीप के पाताल तक आ गये हैं। अब इसी को अपना घर बनाना चाहिए।"

दोपहर को सभी लोग भोजन करने बैठे। जसे ही ब्राउन ने कौर मुह मे दिया कि उसका एक दात चटखा। वह जोर से चिल्लाया— 'इस सब्जी मे पत्थर है।' सब खाते खाते रुक गये। ब्राउन ने मुह से वह कड़कनेवाली चीज निकाली तो वह कंकड नहीं, बन्दूक की गोली थी। सब लोग आश्चय मे पड गये। वे जिस सूअर का मारकर खा रहे थे, उसके शरीर मे गोली कहा से आ गयी? उन्होंने तो सूअर को बर्छे से मारा था। गोली किसने चलायी? यह एक और रहस्य था। वे इस नये रहस्य की खोज मे लग गये।

नाव मे बैठकर पाचो आदमी कुत्ते को साथ लिये टापू का चक्कर लगाने लगे। अचानक उन्हे टापू के एक किनारे पर रस्सियो से बधे लकडी के कुछ गोल और चौकोर बक्से दिखाई दिये। लेकिन वहा कोई आदमी नहीं था। उन्होने उन्हें खोला तो उनमे रसोई का सामान, किताबें, बारूद, तम्बाकू, सूखे मेवे, समुद्री औजार, हथियार आदि बहुत सी चीजें मिलीं। कप्तान ने एटलस और दिशा ज्ञान की मशीन हाथ मे लेकर जानना चाहा कि आखिर वह कौन-सी जगह है। इस टापू का नाम क्या है।

प्रशान्त महासागर मे विषुवत् रेखा के नीचे टावर नाम का द्वीप एटलस मे था। लेकिन जिस द्वीप पर वे थे, उसका वहा कही निशान भी न था। उन्होने अपने द्वीप का नाम लिकन द्वीप रख लिया। "टावर द्वीप यहा से कितनी दूर होगा?"—कप्तान ने अपने साथियो की ओर देखकर कहा—"हमे बडी नाव बनाकर उस द्वीप को ही खोजना चाहिए।"

शाम को जब ये लोग घर लौटे तो चट्टान पर लोहे की नसैनी लटकी थी। ये लोग खबरदार हो गये। अन्दर सब सामान ठीक था। फिर यह नसैनी किसने लटकाई? सहसा चादनी रात मे परछाईं चमकी। देखा तो एक गुरिल्ला गुर्रा रहा था। सबने मिलकर उसे पकड लिया और उसका नाम जूप रखा। कुछ दिन मे गुरिल्ला मित्र बनकर उनका मनोरजन करने लगा।

ये लोग टावर द्वीप जाने के लिए समुद्र मे यात्रा करने लगे। सहसा उन्हे लहरो पर उछलती हुई एक बोतल मिली। उसमें एक चिट्ठी थी। लिखा था—'भूला भटका आदमी, टावर द्वीप—१५३ प०देशान्तर ३७० द० अक्षाश के बीच।' टावर द्वीप पहुचकर इन्होंने चप्पा-चप्पा छान मारा, पर किसी का पता न चला। ये लोग लौटने वाले थे कि अचानक एक जगली लगूर ने ब्राउन पर आक्रमण कर दिया।

लगूर उसका गला दबाना ही चाहता था कि दूसरे साथियो ने दौडकर उसे काबू म कर लिया। अब नाव लगूर को साथ लिये टावर द्वीप से लिकन द्वीप की ओर चल दी। रास्ते में तूफान आ जाने से नाव डगमगाने लगी, तभी लगूर ने नाव का काबू मे कर लिया। ये लोग चकित थे—'यह लगूर तो बहुत अच्छा नाविक है। अवश्य ही यह लगूर कभी आदमी

रहा होगा।"

इन्ही दिनो कप्तान हार्डिग ने, जो एक कुशल इंजीनियर भी था, वायरलैस सैट (बेतार का तार) तैयार करके टावर, और लिंकन द्वीप के बीच सम्बन्ध जोड लिया। कप्तान ने इस वायरलैस के द्वारा तीन खबरें टावर द्वीप भेजी, लेकिन कोई उत्तर नही आया। एक दिन अचानक ही सकेत आने लगे—"मैं कोरल अपने बाडे मे हूँ, तुम्हारी खबरें मिली।"

इसी तरह घूमते-घामते एक जगली आदमी इनका साथी बन गया। वह चट्टान के एक बाडे मे रहता था। उसका नाम कोरल था। एक दिन खाना खाते हुए उसने दास्तान सुनायी—"मेरा नाम आयरटन है। बारह वर्ष पहले डकन जहाज को चुराने के अपराध मे मेरे मालिक ने मुझे बारह वर्ष के लिए सजा देकर इस द्वीप मे छोड दिया था। इसीलिए मैं जगली बन गया। अब मेरी सजा के दिन पूरे हो गये हैं। शायद मेरा मालिक मुझे लेने टावर द्वीप मे आयेगा।"

एक दिन काले झण्डे वाला समुद्री डाकुओं का जहाज उस द्वीप की ओर आ रहा था। आयरटन डाकुओं की शक्ति का पता लगाने के लिए तैरकर उनके जहाज म घुस गया। सभी डाकू नशे मे थे। आयरटन ने देखा कि उन डाकुओं मे बाब हार्वे और जेल से भागे उसके साथी भी थे। आयरटन ने उनको पहचान लिया। ये आस्ट्रेलिया के फरार ५० कैदी थे। वह सोचने लगा—"हम छह सात आदमी इतने डाकुओं का मुकाबला कैसे कर पायेंगे? उसने डाकुओं के बारूदखाने मे आग लगा दी और स्वय तैरकर वहाँ से द्वीप की ओर भाग निकला। कुछ ही क्षणो मे जहाज टुकडे-टुकडे होकर बिखर गया। इस दुर्घटना मे केवल छह डाकू बचे।

बचे हुए डाकू भी तैरकर लिंकन द्वीप मे आ पहुचे। कप्तान हार्डिग बडे चक्कर मे थे। इतने मे पैक्रोफ्ट ने बताया—"किनारे पर पनडुब्बी पडी है। लगता है, डाकुओं को डुबाने मे इस द्वीप के उस अदृश्य जादूगर का भी हाथ है।"

एक दिन एकाएक आयरटन गायब हो गया। इन लोगो ने पूरा द्वीप छान मारा, किन्तु उसका कही पता न लगा। जैसे ही ये लोग घर म घुसे, अचानक गोलियाँ चलीं और छिपे हुए डाकू भाग निकले। आयरटन का

अभी तक पता नही चला था। चादनी रात थी। टोप जोर से भौंकने लगा। ये लोग खबरदार हो गये और टोप के पीछे-पीछे चलने लगे। कुछ दूर चलने पर उन्होंने देखा—सभी डाकू चट्टान के सहारे मरे पड़े हैं। डाकुओं की छाती पर किसी ने लाल निशान लगा दिया था। "यह सब कैसे हो गया ? आयरटन कहा है ?"—उनके मुह से निकला।

अब ये लोग डाकुओ को छोड आयरटन को खोजने के लिए बाडे की ओर बढे। बाडे में अधेरा था। वहा पत्थर पर पडा एक आदमी कराह रहा था—"अरे, यह तो आयरटन ही है।"

"मैं यहा कैसे आया ? मुझे तो डाकू उठा ले गये थे।"—आयरटन अपने साथियो से बोला।

"लगता है, फिर उसी जादूगर ने आयरटन की मदद की और उसे डाकुओ के चगुल से छुडाकर बाडे मे पहुचा दिया। उसी ने डाकुओ को मार दिया, लेकिन यह है कौन ?"--वे लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे।

जैसे ही ये लोग घर म घुसे ता तार की घण्टी बजी। सकेत आने लगे। "फौरन बाडे मे चले आओ।" ये लोग बाडे की ओर लपके। बाडा खाली था। पत्थर पर पडे कागज पर लिखा था—"कागज पर बने रास्ते से चलकर पीछा करो।" ये लोग फिर भागे। द्वीप के दक्षिण मे नाव स उतरकर ये सुरग मे पहुचे। यहा वही पुरानी पनडुब्बी खडी थी।

पनडुब्बी मे घुसे ही आवाज आयी—'नौटिलस (पनडुब्बी) मे मृत्यु की गोद मे लेटा एक अजनबी तुम्हारा स्वागत करता है।" ये लोग बिस्तरे पर पड़े एक वृद्ध व्यक्ति के चारों ओर इकट्ठे हो गये। वह बोल रहा था—"मैंने ही सकेत भेजकर तुम्हें बुलाया है। मैं समुद्री जन्तुओ की खोज करने के लिए प्रशान्त महासागर मे जहाज लेकर एक दल के साथ आया था। एक दिन हमारा जहाज तूफान में चट्टान से टकराकर नष्ट हो गया। पनडुब्बी मे होने के कारण पूरे दल मे से मैं ही बचा। मैं वही फ्रासीसी वैज्ञानिक कैप्टेन नीमो हू। मैं ही अब तक छिप छिपकर तुम्हारी मदद करता था।'

इतना कहकर वह कुछ रुका। फिर बोला—'मेरे पास हीरो का यह

सन्दूक है। इसे तुम लोग काम मे लेना। कुछ देर बाद जब मैं मरू तो पनडुब्बी को यही डुबा देना। बस, यही मेरी अंतिम इच्छा है।" यह कहकर नीमो ने दम तोड दिया।

अब ये लोग जहाज बनाकर स्वदेश लौटने की तैयारी करने लगे तो ज्वालामुखी फिर गडगडाने लगा। कप्तान ने कहा—"जब भी यह ज्वालामुखी फटेगा, सारा द्वीप टुकड़े टुकड़े हो जाएगा। हमे तुरन्त यहा से चल देना चाहिए।'

एक दिन ये लोग जहाज मे सवार होकर टावर द्वीप की ओर चल दिये। ये मुश्किल से आधा मील ही पहुच पाये कि ज्वालामुखी भयानक विस्फोट करता हुआ फूट पडा। लेकिन द्वीप टुकडे-टुकडे होकर समुद्र मे खो गया। लहरो के थपेड़ों से जान बचाकर ये लोग एक अधडूबी चट्टान पर आ चिपके। आयरटन बोला—"यह लो, मैंने किसी तरह इन कीमती हीरो को बचा लिया, लेकिन अब इस चट्टान पर हम कब तक रह सकेंगे।"

सामने देखा तो डंकन सीटी देता हुआ अधडूबी चट्टान की ओर आ रहा था। जैसे ही डंकन रुका, ये उसमे सवार होकर अपने देश की ओर लौट पड़े।

सर आर्थर कोनन डोयल

इग्लैण्ड मे आर्थर कोनन डोयल नामक लडका वैज्ञानिक और जासूसी कहानिया पढने का बडा शौकीन था। किन्तु उसे लिखने का समय नहीं मिल पाता था। १८८६ मे जब वह २१ साल का युवक हो गया और डॉक्टरी पढ गया तो खाली बैठे-बैठे उसे कहानी लिखने का शौक चर्राया। उसी समय उसने शैलक होम नामक यह उपन्यास रचा।

वैज्ञानिक तथ्यों को उजागर करके उसने अनेक ऐसे अपराधियो को भी कानून के शिकजे से मुक्त कराया जो वास्तव में निर्दोष थे। अफ्रीका के बोर युद्ध मे डोयल ने डाक्टरी की सेवाए भी की। उसे युद्ध पर पुस्तक लिखने पर सम्राट् एडवर्ड सप्तम ने 'सर' की उपाधि भी दी।

प्रस्तुत उपन्यास 'बास्कर विल के खूखार कुत्ते' सबसे ज्यादा लोकप्रिय साबित हुआ। इसका अनेक भाषाओ मे अनुवाद भी हुआ। इसी उपन्यास के रेडियो, टी० वी० रूपान्तर आलेख, फिल्म, नाटक सभी तैयार किये गये। सर डोयल का १९३० मे ७१ वर्ष की आयु में निधन हुआ। किन्तु दिनोंदिन उसके प्रशसक-पाठकों की सख्या बढ़ती ही गई। उसके इसी उपन्यास का सार-सक्षेप यहा भारतीयकरण करके प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रस्तुत उपन्यास भी रहस्य-रोमांचो से भरपूर होते हुए रसायन विज्ञान पर आधारित है।

घाटी का रहस्य

शाम का समय था। लखनऊ के प्रसिद्ध जासूस हरिहर चौधरी अपने साथी डॉक्टर भानू के साथ घूमकर लौट रहे थे। आज दोपहर चौधरी ने एक पुराने अपराध के रहस्य को सुलझा लिया था। इसलिए इस समय वह अपने मस्तिष्क को हल्का करने के लिए डॉक्टर भानू से खिलाड़ियों के सम्बन्ध में बातचीत कर रहे थे।

धूम्रपान के लिए बैठक में पाँव रखते ही चौधरी को अपने से पहले किसी आगन्तुक के कमरे में प्रवेश करने का आभास मिला—"सोफे पर बैठकर कोई काफी देर तक हमारा इन्तजार करता रहा है," चौधरी ने सोफे के किनारे रखी हुई आगन्तुक की छड़ी को अपने हाथ में उठाते हुए कहा।

भानू का विचार सोफे पर लेटकर शाम का अखबार पढ़ने का था, किन्तु चौधरी की बात सुनकर उसने किसी नयी गवेषणा की आशा से समाचार-पत्र नीचे रख दिया और उसकी ओर देखकर कहा, "क्या तुम इस छड़ी को देखकर उस आगन्तुक के विषय में बता सकते हो?"

दो-चार मिनट तक चौधरी ने छड़ी को गौर से देखा और उसके मालिक के विषय में भानू को बतलाने लगा—

"इस छड़ी पर डॉ० मयूर का नाम लिखा हुआ है। छड़ी पर लगी मिट्टी यह बता रही है कि यह डॉक्टर किसी गाँव में रहता है। गाँव का निवासी होने पर भी यह डॉक्टर भ्रमण प्रेमी है। छड़ी के नीचे का भाग बहुत घिसा हुआ है, जिससे पता चलता है कि डॉक्टर काफी दूर तक घूम चुका है।"

हरिहर चौधरी ने बीच में रुककर बुझे हुए पाइप को जलाकर एक गहरा कश खींचा और आगे बोलना चालू कर दिया—

"देखो भानू, इस छडी पर कुत्ते के दातो के निशान बने हुए हैं और वे भी अधिकतर बीच मे। इसका मतलब यह है कि छडी का मालिक एक कुत्ता पाले हुए है और यह कुत्ता अक्सर उसकी छडी मुह मे दबाकर पीछे-पीछे चलता है। अब देखना यह है कि कौन-सी नयी मुसीबत इन डॉक्टर साहब को मेरे आराम में खलल डालने के लिए यहा खीच लायी है ?"

भानू ने चौधरी का प्रश्न सुनकर उत्तर देने के लिए अपना मुख खोला ही था कि प्रवेश द्वार खुलने की आवाज आई और हडबडाते हुए डॉ० मसूर ने कमरे म पाव रखा। चौधरी पर दृष्टि पडते ही उन्होंने घबराये हुए स्वर मे कहा—

"मि० चौधरी, मैंने बडे असमय मे आपको कष्ट दिया। किन्तु यह जीवन और मौत का प्रश्न है। इससे पहले कि मैं आपको कुछ और बातें बतलाऊँ, कृपया इस डायरी को पढ लीजिए।"

डॉ० मसूर की बात सुनकर हरिहर चौधरी ने पाइप का एक गहरा कश खीचा और उसे होठो मे ही दबा लिया। इसके बाद डायरी के पन्नो पर नजर दौडाने लगा। डॉ० भानू ने टबल लैम्प का स्विच दबाकर चौधरी की कुर्सी के पास तेज प्रकाश कर दिया।

पीले रग के पन्नो में एक भयानक इतिहास छिपा पडा था। किसी के अनगढ हाथो की लिखावट मे एक अनोखे रहस्य का वणन लिखा हुआ था। चौधरी पढ़ने लगा।

फिर मिर्जापुर के पास आया नगर रियासत की जायदाद और अमर महल का मालिक नवीन अमर नाम का एक नौजवान हुआ। यह जायदाद कई पीढ़ियों से उसके वश में चली आ रही थी। नवीन अमर जायदाद पाकर बडा उद्दण्ड और निम्न प्रकृति का हो गया। उसका अधिकांश समय वेश्याओं के साथ मदिरापान मे व्यतीत होता था।

एक दिन शैतान नवीन अमर अपने आवारा मित्रो के साथ शिकार से लौट रहा था। मार्ग में एक खेत के किनारे उन्हें किसी किसान की सुन्दर और जवान कन्या खडी दिखाई दी। अकेली कन्या को देखते ही अमर नवीन ने उसे बलपूवक घोडे पर चढा लिया और उसका मुह बाधकर अपनी कोठी की ओर ले भागा।

लडकी को एक कमरे में बन्द करके वह अपने साथियों के साथ दूसरे कमरे मे बैठकर मदिरापान करने लगा। बहुत रात गये उसको कमरे में बन्दी असहाय लडकी का विचार आया और तब वह पैशाचिक विचारों में भरा हुआ अपने साथियो के साथ उसके कमरे की ओर बढ़ा।

कमरे का द्वार खोलते ही उसने आश्चय के साथ देखा कि चिडिया उड गई थी और पिंजरा खाली पडा था। अपने शिकार को हाथ से निकला जानकर नवीन के क्रोध का ठिकाना न रहा।

वह अपने साथियो के साथ घोडे पर सवार हो और अपने शिकारी कुत्तो को लेकर महल से निकल पडा। रात के अधकार मे ऊबड-खाबड और बियाबान पथ घोडो की टापो से गूज उठा। नवीन और उसके कुत्ते बडी तेजी से बढे जा रहे थे। कुछ ही देर मे अन्य साथी बहुत पीछे रह गये।

जब अन्य साथियो ने देखा कि वे नवीन से अलग होकर पिछड गये हैं तब वे मशाल जलाकर चारो ओर उसे खोजने लगे। दूर एक भेडपालक अपने कधे पर लाठी रखे जा रहा था। उन्होंने उससे नवीन के बारे मे पूछा।

भेडपालक ने उन्हें बतलाया कि कुछ देर पहले उसने एक बहुत भयानक दृश्य देखा। नवीन अमर अपने घाडे पर बैठा हवा की तरह भागा जा रहा था और एक भयानक पशु उसका पीछा कर रहा था।

नवीन के साथियो ने उस भेडपालक की बात को केवल मजाक समझा और आगे चलने लगे। परन्तु कुछ ही देर बाद उन्हें नवीन का घोडा बिना सवार के खाली भागता हुआ दिखाई दिया। अब वास्तव मे उनको स्थिति की गम्भीरता का पता चला। शक्ति और भयभीत इन सवारो को कुछ ही दूर पर शिकारी कुत्ते खडे मिल गये। किन्तु वे साहसी और निर्भीक कुत्ते जोर-जोर से भौंकने के बजाय मूर्ति की तरह मूक खडे थे। किसी अज्ञात भय ने उन्हें जड बना दिया था।

कापते हुए भयभीत साथी अपने-अपने घोडो से उतरकर मशालों के प्रकाश मे नवीन की तलाश करने लगे। आगे भैरव ग्राम की एक घाटी थी। घाटी को पार करते ही इनमे से एक आदमी की मशाल टीले के नीचे

खड्ड में गिर पड़ी। मशाल के प्रकाश में उन्होंने देखा कि जिस लड़की को वे पकड़ने आये थे, उसकी लाश खड्ड में पड़ी है।

इतने में एक अन्य साथी की पुकार सुनकर सबका ध्यान दूसरी ओर चला गया। उस दृश्य पर दृष्टि पड़ते ही सबका खून सूख गया। घाटी के दूसरी ओर नवीन अमर की फटी चिथड़ी लाश पड़ी थी। किसी भयानक जन्तु ने उसको चीर-फाड़ डाला था।

इसके बाद चौधरी ने डायरी के आखिरी पन्ने को पढ़ा—"अमर वंश के समस्त उत्तराधिकारियों को सूचित किया जाता है कि वे रात के समय भैरव घाटी में न जाएं। यदि वह ऐसा करेंगे तो उनका केवल एक ही अंजाम होगा—मौत।"

यहां तक पढ़कर चौधरी ने डायरी बन्द करके रख दी। इसके बाद पाइप की राख झाड़कर लगातार तीन-चार गहरे कश लगाये।

हरिहर चौधरी को चुप देखकर डॉ० मसूर ने कहा, "यह डायरी नवीन अमर की मौत के बाद अमर महल के एक नौकर ने लिखी थी। तब से अब तक जो भी उस महल में रहने जाता है, वह इस सूचना से सावधान रहता है।"

"परन्तु इस घटना से मेरा क्या सम्बन्ध है?" हरिहर चौधरी ने डॉक्टर मसूर से प्रश्न किया।

'क्योंकि तब से अब तक अमर वंश के कई उत्तराधिकारी भैरव घाटी में इसी प्रकार खतरनाक और रहस्यपूर्ण ढंग से मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं और कल अमर वंश का अंतिम उत्तराधिकारी डॉ० *विशाल* अमर अपनी जमींदारी संभालने जा रहा है

"वह शिमला से मिर्जापुर अमर महल में रहने के लिए जा रहे हैं। उनको ऊपर से आने वाले खतरे का कुछ भी आभास नहीं है। केवल तुम उनको इस खतरे से बचा सकते हो।" डॉ० मसूर ने आगे कहा।

"लेकिन डॉ० मसूर, तुम इस कार्य में इतनी रुचि क्यों ले रहे हो?" हरिहर चौधरी ने पूछा।

"कुछ ही दिन पहले भैरव घाटी में श्रीमान् जगत अमर मरे पाये गये थे। डॉक्टरों ने उनकी मृत्यु का कारण दिल की हरकत रुक जाना बताया।

मैं जगत अमर का बचपन से मित्र था और इग्लैण्ड म उनके साथ पढा था। उनकी मृत्यु से मुझे बहुत दु:ख पहुचा है।

"मैंने भी मृतक जगत अमर की जाच की थी। उनका हृदय बहुत मजबूत था। मेरे विचार से उस भयानक पशु ने उनका पीछा किया। इसी भगदड मे वे कही लुढककर गिर पडे और भय से उनकी जान निकल गयी।" डॉ० मसूर ने कहा।

"तुम ऐसा क्या सोचते हो?" डॉ० भानू ने जो अब तक चुपचाप बैठे थे पूछा।

"सबसे पहले जगत अमर की लाश मैंने ही देखी थी। भय के कारण उनका मुख बहुत अधिक विकृत हो गया था। साथ ही उनके शरीर के पास एक विशालकाय कुत्ते के पाव के निशान पडे हुए थे।' डॉ० मसूर ने कहा।

"अमर महल मे आजकल कौन कौन लोग रह रहे हैं? क्या भरव घाटी के आसपास भी कुछ लोग है?" डॉ० भानू न पूछा।

"अमर महल मे केवल एक रसोइया और उसकी पत्नी रहते हैं। भरव घाटी के पास मनमोहन नाम के एक सज्जन और उनकी बहिन भी रहती हैं।

"ओह! रात के दस बज गये। मुझे अभी डॉ० विशाल अमर को लेने के लिए स्टेशन पर जाना है। आपसे मेरी प्रार्थना है कि किसी प्रकार उनको रोकने का यत्न कीजिए।" डा० मसूर ने कहा।

"मुझे कम से कम २४ घण्टे का समय सब घटनाओ पर विचार करने के लिए चाहिए। कल दस बजे आप श्री विशाल अमर को लेकर मेरे घर आइए।" हरिहर चौधरी ने बताया।

डॉ० मसूर के चले जाने के बाद हरिहर चौधरी ने अपने पाइप म तम्बाकू भरकर जलाया और मिर्जापुर जिले का नक्शा खोलकर मनन करने के लिए बैठ गया। भानू जानता था कि अब कम से कम १० १२ घण्टे तक चौधरी इसी प्रकार चुपचाप बैठा रहेगा, इसलिए वह उठकर अपने कमरे मे चला गया।

दूसरे दिन नियत समय पर डॉ० मसूर, विशाल अमर को लेकर

हरिहर चौधरी के घर आया। परस्पर परिचय व अभिवादन के बाद विशाल अमर ने अपनी जेब से एक पत्र निकालकर चौधरी के हाथ पर रख दिया। उस पत्र पर लिखा था

'यदि तुम अपने जीवन को बचाना चाहते हो तो भैरव की घाटी मे प्रवेश न करना।'

चौधरी ने पत्र को गौर से देखा। उस पर मिर्जापुर के डाकखाने की मोहर पडी थी।

"इसका अर्थ यह है कि कोई बराबर तुम्हारा पीछा करता रहा है। क्योंकि तुम्हारे कार्यक्रम के बारे मे शायद डॉ० मसूर के अलावा और दूसरे को कुछ पता नही होगा।" चौधरी ने गम्भीर होकर कहा।

"विशाल अमर अपने ऊपर एक भयानक खतरा मोल ले रहे हैं। आप उन्हें किसी प्रकार अमर महल मे जाने से रोकिये।" डॉ० मसूर ने हरिहर चौधरी से प्रार्थना की।

"कोई भी शक्ति मुझे अपने पुरखो की जायदाद तक पहुचने मे नही रोक सकती। मैं इस भैरव घाटी के आतक को नष्ट करके रहूगा।" विशाल अमर न जोश के साथ उत्तर दिया।

चौधरी ने विशाल अमर की बात को काटने का कोई प्रयत्न नही किया। थोडी देर बाद डॉ० मसूर विशाल अमर के साथ वापस चले गये। दोनो के जीने से उतरते ही चौधरी के शरीर म एकदम बिजली की-सी तेजी आ गयी। उसने डॉ० भानू का हाथ पकडकर झकझोरते हुए कहा, "भानू, उठो। हमे अभी विशाल अमर का पीछा करना है।"

चौधरी और भानू जब सडक पर आये तब डॉ० मसूर और विशाल अमर एक टमटम मे बैठकर चल चुके थे। उनके पीछे पर्दे से ढकी हुई एक टमटम और चल रही थी। चौधरी ने दोनो गाडियो का पीछा करने के लिए किसी टमटम की तलाश की। पर तु दूर तक कोई और गाडी नही दिखाई दी। चौधरी समझ गया कि पिछली गाडी पर कोई विशाल अमर का पीछा कर रहा है। उसने गाडी का न० २७०७ अपनी डायरी मे नोट कर लिया और भानू को कहा कि टमटम को रजिस्टर करने वाले दफ्तर से पता लगाकर टमटम हाकने वाले को बुला लाये।

एक घण्टे बाद टमटम चलाने वाले को लेकर भानू चौधरी के पास पहुचा। चौधरी ने गाडी वाले से कहा, "थोडी देर पहले एक काली दाढ़ी वाला आदमी तुम्हारी गाडी में बैठकर मेरे घर के पास से जाती हुई एक गाडी का पीछा कर रहा था। अगर तुम मुझे उसके बारे मे सब बातें बता दो तो तुम्हें पाच रुपये का नोट दूगा।"

गाडीवान ने कहा, "मेरी गाडी मे जो सज्जन बठे थे, उन्होंने मुझे अपना परिचय प्रसिद्ध जासूस हरिहर चौधरी कहकर दिया। वे हजरतगज चौक से मेरी गाडी पर सवार होकर अमीनाबाद में एक होटल तक गये, जहाँ से ये दोनो सज्जन आपके घर आये थे। जब दोनो सज्जन वापस गये तब मैंने भी उनके पीछे गाडी रखी। इसके बाद मैं हरिहर चौधरी को स्टेशन पर छोड आया।"

जासूस हरिहर चौधरी अपराधी की इस अनोखी सूझ और उसके मसखरे स्वभाव पर मन ही मन मुस्कराया और ५ रुपये का नोट देकर गाडी वाले को चलता किया।

दिन के दो बजे डॉ० मसूर के साथ विशाल अमर ने फिर चौधरी के मकान मे प्रवेश किया। इस समय विशाल अमर भी कुछ घबराया हुआ प्रतीत होता था। चौधरी को देखकर उसने कहा—

"आज होटल मे मेरे साथ एक अनोखी घटना घटी है। मैंने अपने शिकारी जूते घर जाने की तैयारी मे कमरे से बाहर रख दिये थे। जब मैंने पहनने के लिए उनको खोजा तो उनमे से एक जूता गायब था।'

"तुम्हें यह जानकर और भी आश्चय होगा कि होटल से चलकर मेरे घर आने और वापस जाने तक कोई तुम्हारा पीछा करता रहा। जिस आदमी ने तुम्हारा पीछा किया, उसे एक नुकीली काली दाढ़ी रखने का शौक है।' चौधरी ने कहा।

"अमर महल के खानसामा बलराज के भी नुकीली काली दाढी है।" डॉ० मसूर ने उत्तर दिया।

'क्या जगत अमर की मृत्यु से बलराज को भी कुछ लाभ हुआ है ?" डॉ० भानू ने पूछा।

'हा उसको और उसकी बीवी दोनो को लगभग १,४०० रुपये

वसीयतनामे के अनुसार प्राप्त हुए हैं। कुल जायदाद का मूल्य लगभग ६६ लाख रुपये है।" डॉ० मसूर ने कहा।

"छयानवे लाख? यह तो काफी बडी रकम है। इस रकम को पाने के लिए तो तुम भैरव घाटी मे जाने का खतरा उठा सकते हो। लेकिन मैं सलाह दूगा कि डॉ० भानू को अपनी रक्षा के लिए साथ लेते जाओ।" चौधरी ने विशाल अमर से कहा।

चौधरी की बात सुनकर भानू विशाल अमर के साथ जाने के लिए तैयार हो गया। उसने चौधरी को इस रहस्य भेद मे अपना साक्षी बनाने के लिए धन्यवाद दिया। चौधरी ने उसे समझाया कि किसी भी समय विशाल अमर को अकेले भैरव की घाटी मे न जाने दें। यदि कोई विशेष घटना घटे तो उसके बारे मे तुरन्त तार से सूचित करने के लिए कहकर दो तेज मार की पिस्तौलें उसके हाथ मे थमा दी।

कुछ ही देर बाद डॉ० भानू, डॉ० मसूर और विशाल अमर के साथ स्टेशन पहुच गया। रात्रि के आरम्भ होने के साथ-साथ रेलगाडी ने भयानक भैरव घाटी की ओर खिसकना आरम्भ किया।

दूसरे दिन सवेरे सूरज की प्रथम किरण के साथ ही गाडी ने मिर्जापुर की पर्वतीय घाटी मे प्रवेश किया। सुनसान वातावरण मे सरकता हुआ गहरे खड्डो का एक लम्बा क्रम और फिर उनके बीच से एक बृहत् आकार के टीले का सिर निकलता दिखाई दिया।

"मि० भानू, वह देखो, दूर पर भैरव घाटी के सिरे का टीला। यही वह स्थान है, जो अमर वश की जायदाद का एक भाग होते हुए भी उसके उत्तराधिकारियो के लिए बन्द हो चुका है।' डॉ० मसूर ने भरे हुए मन से कहा।

भैरव घाटी का नाम सुनते ही विशाल अमर और भानू दोनो गौर से खिडकी के बाहर देखने लगे। कुछ ही देर के बाद गाडी धीमी होती-होती मिर्जापुर के स्टेशन पर रुक गई। स्टेशन के बाहर एक तागा उनको लेने के लिए आया था। तीनो उसमे बैठकर कीकर और पलास के वृक्षो से ढकी सडक पर से गुजरते हुए अमर महल की ओर चल दिये।

मार्ग के एक ओर टीले पर एक सैनिक हाथ मे बन्दूक लिये पहरा दे

रहा था। ।।रवान ने बताया कि तीन दिन पहले एक अपराधी जिला जेल से छूटकर इधर भाग आया है। उसी की निगरानी के लिए प्रत्येक मार्ग पर पहरेदार नियुक्त किये गये हैं।

दोपहर तक तांगा अमर महल के द्वार पर पहुंच गया। द्वार के पास ही बलराज ने उनका स्वागत किया। डॉ० मसूर, भानू और विशाल अमर से विदा लेकर अपने घर चले गये।

बलराज ने अपने नये मालिक और उनके मित्र का सामान कमरों मे लगा दिया। थोडी देर बाद भोजन बन गया और विशाल अमर भानू को लेकर खाने की मेज पर पहुंच गये। खाना पूरा हो जाने के बाद बलराज ने कहा, "मैं कुछ दिनो के लिए बाहर जाना चाहता हू। मैंने नये नौकरो का प्रबंध कर लिया है। कल से वे सब काम पर आ जायेंगे। जगत अमर की मृत्यु के बाद से मेरा और मेरी पत्नी का जी यहा से ऊब गया है।'

डॉ० भानू ने बलराज की बात सुनकर उत्तर दिया, "विशाल अमर मेरे साथ कुछ दिनो के लिए बाहर जा रहे हैं। नये नौकरो पर अकेले घर का भार छोडना उचित नही है। अत हमारे लौट आने तक तुमको ही इस घर का भार सँभालना पडेगा।"

दुविधाजनक भाव से खानसामा कमरे से बाहर चला गया। भानू और विशाल अमर भी अपने-अपने कमरो मे जाकर बिस्तरो पर लेट गये। रात धीरे धीरे चारो ओर के कोलाहल को अपने आंचल मे समेटती जा रही थी।

डॉ० भानू अपनी शय्या पर पडे पडे इस विशाल महल और उसके निवासियो से सम्बन्धित बातो पर गौर करने लगा। रात के सन्नाटे में उसे किसी के सिसकने का स्वर सुनाई दिया। अचानक ही दूर भैरव घाटी की ओर से किसी शिकारी कुत्ते का भयानक चीत्कार सुनाई पडा। इसके बाद तुरन्त ही चारों ओर शान्ति छा गई। अंधकार के पर्दे मे घटने वाली घटनाओं से अनजान भानू बेचैनी से अपने पलंग पर करवटें बदलने लगा।

दूसरे दिन सवेरे वह विशाल अमर के कमरे में पहुंचा। विशाल अमर

ने भी रात की घटना की पुष्टि की। खानसामा बलराज से जब उसकी पत्नी के विषय में पूछा गया तो उसने बताया कि वह तो रात भर अपने कमरे में सोती रही। कुछ देर बाद भानू नीचे गया तो देखा कि बलराज की पत्नी कपड़े धो रही थी। रात-भर रोते रहने से उसकी आखें सूज रही थी। भानू की समझ में न आया कि बलराज ने उससे झूठ क्यों बोला।

सवेरे का नाश्ता करने के बाद डॉ० भानू भैरव घाटी की तरफ घूमने गया। मार्ग में एक आदमी जाल हाथ में लिए तितलियां पकड़ रहा था। उसने मनमोहन के नाम से अपना परिचय दिया। डॉ० भानू को आश्चर्य हुआ कि मनमोहन ने उसको पहचान कैसे लिया।

मनमोहन से मिलने के बाद अभी वह कुछ ही आगे गया था कि एक सुन्दर युवती दौड़ती हुई उसके पास आई और बोली—

"वापस चले जाइए। तुरन्त लौट जाइए और फिर कभी भैरव घाटी की ओर मत आइएगा।"

"क्यों? क्या बात है? तुम कौन हो, जो मुझे इस तरह की सलाह दे रही हो?" एक साथ डॉ० भानू ने उस युवती से इतने सारे प्रश्न कर डाले।

"मेरा नाम लतिका है। मैं सामने के मकान में अपने भाई मनमोहन के साथ रहती हू। कृपया आप लखनऊ वापस लौट जाइए।'

अभी दोनो बात कर ही रहे थे कि सामने से एक अधेड़ आयु का आदमी आता दिखाई दिया। उसने डॉ० भानू को देखते ही अपना कुत्ता उसके ऊपर छोड़ दिया। लड़की ने चिल्लाकर कहा, "मि० भाटिया, अपने कुत्ते को रोकिये।"

मि० भाटिया ने कुत्ते को वापस बुलाया और डॉ०भानू से प्रश्न किया, "तुम कौन हो? मैंने आज तक तुम्हें यहा नही देखा?"

"मेरा नाम डॉ० भानू है और मैं विशाल अमर का मेहमान हू।"

"ओह! मैं समझा था कि आप विशाल अमर ही हैं। मगर आप जितने भी दिन यहा रहें, मेरी भूमि की तरफ पाव न रखें।"

डॉ० भानू मिस लतिका के साथ वापस लौटने लगा। चलते चलते

मिस लतिका ने उसे बताया कि भैरव घाटी से दूर रहने की सूचना केवल विशाल अमर के लिए है और वह नहीं चाहती कि वह किसी दुर्घटना मे पड़े।

इतने में सामने से मि० मनमोहन के दर्शन हुए। डॉ० भानू को देखते ही उसने कहा—

"इस लड़की की बातो में न आना। यह सबको भैरव घाटी की ओर आने से मना करती रहती है। इसका विश्वास है कि इसने एक भयानक शिकारी कुत्ते को जगत अमर का पीछा करते देखा है, जिसके डर ने उनके जीवन का अन्त कर दिया।"

अचानक दूर से एक पशु की भयानक चीत्कार सुनाई दी। ऐसा मालूम पड़ा जैसे कोई विशालकाय कुत्ता अपने को बन्धनमुक्त करने के लिए चीख रहा हो।

डॉ० भानू को स्तब्ध देखकर मनमोहन ने कहा, "लोग इस चीख की आवाज का सम्बन्ध उस भयानक कल्पित कुत्ते के साथ जोड़ते हैं। परन्तु यह एक चिड़िया की आवाज है। मैंने स्वयं भैरव घाटी के पास वाले टीले पर इस चिड़िया को बोलते सुना है।"

"शायद तुम्हारी बात ठीक हो। अच्छा, अब मुझे अमर महल पहुँचना चाहिए।" यह कहकर भानू आगे चल दिया।

"ठहरो, इधर से मत जाना। इस ओर आगे भयानक दलदल है। एक भी गलत कदम का पड़ना मौत के मुंह मे जाना है।" मनमोहन ने कहा। भानू ने कुछ कदम आगे बढ़कर देखा। मार्ग अचानक एक कगार पर आकर समाप्त हो गया था। कगार के नीचे विशाल दलदल था। इस दलदल के बीच मे एक घोड़ा गिरा पड़ा था। भय के मारे वह हिनहिना भी नही सका था। धीरे धीरे दलदल ने उसे अपने उदर में समो लिया।

अमर महल लौटकर भानू ने सारी घटनाओं को विशाल अमर को सुना दिया और एक विस्तृत पत्र हरिहर चौधरी को भी लिखा।

शाम का खाना खाने के बाद दोनों एक कमरे मे बैठ गये। उन्होंने तय किया कि आज रात को सिसकियों का रहस्य अवश्य मालूम किया जाए।

रात धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी। परन्तु विशाल अमर और डॉ०

भानू की आखो मे नीद का नाम भी नही था। कुछ घण्टो बाद उनकी प्रतीक्षा सफल हुई। द्वार के बाहर किसी की पदचाप सुनाई पडी।

भानू ने सावधानी से थोडा-सा किवाड खोलकर बाहर झाका। बलराज धीरे धीरे पाव रखता हुआ मुख्य द्वार की ओर जा रहा था।

दोनो जने चुपचाप दबे पाव बलराज के पीछे चलने लगे। इसी समय घडी ने सवेरे के चार बजने की सूचना दी। घडी की आवाज से चौंककर बलराज ने पीछे मुडकर देखा। बलराज को पलटते देख विशाल अमर और भानू एक मेज के पीछे छिप गये।

हाथ की लालटेन को ऊपर उठाकर बलराज ने चारो ओर कमरे की जाच की और फिर लाल रग का एक रूमाल चिमनी के ऊपर बाध दिया। कमरे की एक खिडकी भैरव घाटी की ओर खुलती थी। बलराज ने उसी खिडकी को खोला।

विशाल अमर अब अपने को रोक न सका। मेज के पीछे से निकलकर उसने आज्ञाभरे स्वर म पूछा—

"बलराज, तुम इस समय यहा क्या कर रहे हो?"

"खिडकियो के बन्द होने की जाच कर रहा था।"—बलराज ने घबराये हुए स्वर मे उत्तर दिया

"इस समय और वह भी लालटेन पर कपडा बाधकर?" डॉ० भानू ने सशयात्मक स्वर मे कहा और बलराज के हाथ से लालटेन लेकर खिडकी मे खडा हो गया। पौ फटने मे अभी कुछ देर थी। बाहर चारो ओर अधेरा छाया हुआ था। डॉ० भानू कुछ सोचकर लालटेन को खिडकी से बाहर निकालकर हिलाने लगा

इस अनोखी कार्यवाही का परिणाम निकला। सिरे के टीले के पास एक मशाल जलती हुई दिखाई दी। इस अजीब काय से दोनो का शक और भी अधिक बढ गया। उन्होंने तुरन्त भैरव घाटी की ओर कदम बढाया। बलराज ने उनको रोकने का एक असफल प्रयास किया, फिर चुपचाप खडा रह गया।

भैरव घाटी के पास पहुचते-पहुचते पौ फट चुकी थी। अब हाथ हाथ दिखाई देने लगा। जब वे मशाल के पास पहुचे तो वहा कोई

नही दिखाई दिया। केवल मिट्टी म धसी वह मशाल जल रही थी।

इसी समय वीरान प्रदेश की शांति को भग करती हुई वही भयानक कुत्ते की चीख सामने की चट्टानो के पीछे से गूजकर थम गई। एक क्षण दोनो निस्तब्ध खडे रह गये। फिर साहस बाधकर उ होने आगे कदम बढाया। अचानक चट्टान के पीछे से निकलकर राक्षमी आकार का एक दैत्यतुल्य मानव उनकी ओर झपटते हुए चिल्लाया, "मैं तुम्हारा खून पी डालूगा।"

दैत्याकार साढे छ फीट के इस बदसूरत, बढी हुई दाढी और बडे-बडे बालो वाले मानव को देखते ही दोनो का खून सूख गया। अदभुत मानव ने दूर से ही एक बडा सा पत्थर उठाकर उनके ऊपर फेंका। यह पत्थर उनमे से जिसके लग जाता उसकी चटनी बन जाती, पर उसी समय डॉ० भानू विशाल अमर का हाथ पकडकर नीचे झुक गया।

सिर पर आये खतरे ने डॉ० भानू को अपने फौजी जीवन की याद दिला दी। उसने जेब से पिस्तौल निकालकर सिर नीचा किये ही अन्दाजा लगाकर गोली चला दी। गोली दैत्य मानव को लगी या नहीं, परन्तु उसके भय से उसने पत्थर-वर्षा बन्द कर दी और दौडकर चट्टानो म छिप गया।

आगे बढने का विचार छोडकर डॉ० भानू विशाल अमर को साथ लेकर वापस अमर महल मे लौट आया। बलराज अभी तक कमरे में ही बैठा था। उसके पास ही उसकी पत्नी बैठी सिसक रही थी।

बलराज को देखते ही क्रोध म विशाल अमर ने कहा 'बलराज, मैं तुम्हें सीधा-सादा समझता था। परन्तु रात म तुम्हारी पत्नी का रोना, खिडकी से गुप्त इशारा, टीले के पीछे भयानक आदमी, यह सब क्या रहस्य है? यदि तुम सारी बातें मुझे नही बतलाओगे तो मैं अभी तुमको पुलिस के हवाले कर दूगा।"

विशाल अमर की धमकी मे बलराज की स्त्री का रोना बन्द हो गया। वह उठकर उनके पास आई और बोली —"मैं यह समझती थी कि यह भेद, भेद ही बना रहेगा, परन्तु आज मुझे सबकुछ आपसे कहना होगा। वह आदमी जो आपको टीले पर मिला, जेल से भागा हुआ अपराधी— मेरा छोटा भाई है। भूख से बेचैन होकर एक रात वह मेरे पास आया। मैंने

आपके भय से उसे शरण तो दी नही, परन्तु भोजन का प्रबंध कर देने का आश्वासन दिया।

"तब से वह टीले के ऊपर चट्टानो मे छिपकर रहता है। हम रोशनी के द्वारा उसे भोजन भेजने की सूचना देते हैं। और कुछ दूर मार्ग मे जाकर रोटिया रख आते हैं। बस, यही सारा रहस्य है।"

"जेल से भागे अपराधी की सहायता भी अपराध है। अब तक तुमने चाहे जो कुछ किया हो, परन्तु अब आगे उससे सम्पर्क रखने की कोई आवश्यकता नही।" यह कहकर विशाल अमर भोजन के कमरे की ओर नाश्ते के लिए चल दिये।

नाश्ता खत्म करके भानू और अमर मेज पर से उठना ही चाहते थे कि मि० मनमोहन ने अपनी बहन के साथ कमरे में प्रवेश किया। विशाल अमर ने दोनो का स्वागत किया और इधर-उधर का वार्तालाप होने लगा। डॉ० भानू उन लोगो से क्षमा मागकर कमरे से निकल आया और भैरव घाटी की ओर घूमने चल दिया।

जब वह मि० भाटिया के मकान के नीचे से जा रहा था तो अचानक एक ककर उसके टोप पर लगा। भानू ने सिर उठाकर ऊपर देखा। अपनी छत पर हाथ मे दूरबीन लिये भाटिया खड़ा था और हाथ से उसे ऊपर बुला रहा था।

भानू सीढियो पर चढ़कर ऊपर पहुचा। मि० भाटिया ने उसको दूरबीन देकर भैरव घाटी की ओर देखने को कहा। भानू ने देखा—दूर पर चट्टानों के पीछे से धुआ निकल रहा था। एक लड़का हाथ मे पोटली लिये उसी ओर चला जा रहा था। किसी नये भेद को पाने के विचार से भानू बिना मि० भाटिया से बात किये नीचे उतर आया और जिस ओर वह लड़का दिखाई दिया था, उसी ओर चलने लगा।

जब वह चट्टानों के पास पहुचा तब वहा कोई नही दिखाई दिया। लेकिन चट्टानो के बीच मे बनी एक झोपड़ी पर उसकी नजर पड़ी। हाथ में पिस्तौल लेकर डॉ० भानू झोपडी के अन्दर घुसा, पर वह खाली पड़ी थी। केवल एक मेज और कुर्सी वहा रखी थी। मेज पर कलम, दवात और एक खत रखा था।

भानू ने खत उठाकर पढा। उसमे लिखा था—'आज सवेरे भानू का सामना भयानक आदमी से हो गया। लेकिन अभी वह असली रहस्य का पता नही चला सका।'

भानू ने अपने मन मे सोचा कि अपराधी बडा चतुर मालूम होता है। तभी उसे मेरा सब हाल मालूम है। इतने मे बाहर से किसी के आने की आवाज सुनाई दी। भानू हाथ मे पिस्तौल लेकर द्वार के पीछे छुप गया।

अपराधी धीरे से अन्दर आया और द्वार की ओर पीठ करके अपना पाइप सुलगाने लगा। झोपडी मे प्रकाश कम था। अत उसका चेहरा दिखाई नही दे रहा था।

भानू ने पिस्तौल का मुख उसकी ओर घुमाते हुए कहा—"जान की खैरियत चाहते हो तो अपने हाथ ऊपर उठाकर चुपचाप खडे हो जाओ।"

अपराधी भानू की ललकार से जरा भी भयभीत नही हुआ और धीरे से घूमकर उसकी ओर देखने लगा।

"अरे तुम!" आश्चय से भानू का मुख खुला रह गया और पिस्तौल उसके हाथ से नीचे गिर पडी।

आगन्तुक स्वय जासूस हरिहर चौधरी था।

भानू का आश्चय अभी दूर ही हुआ था कि भैरव घाटी से भयानक कुत्ते की चीख और किसी आदमी का आर्तनाद एक साथ सुनाई दिए। हरिहर चौधरी झपटकर झोपडी से निकल गया। भानू भी पिस्तौल उठाकर उसके पीछे चल दिया।

चारो ओर देखने पर भी कोई दिखाई न दिया। पर जब भानू और चौधरी उस खड्ड के पास पहुचे जहा जगत अमर मरे पाए गए थे तो वहा उन्हें कोई आदमी पडा दिखाई दिया।

उसे देखते ही भानू एकदम बोला—

"अरे, यह तो विशाल अमर मालूम पडते हैं! मालूम होता है जैसे मर गए। मैंने उन्हें अकेला छोडकर बडी भूल की। मुझे क्या मालूम था कि हत्यारा इतने शीघ्र वार कर देगा।'

भानू का विलाप सुनते ही हरिहर चौधरी कूदते फादते नीचे खड्ड मे उतर गया और विशाल अमर की लाश की जाच करने लगा। इतने मे

भानू भी नीचे उतर आया। दोनों ने मिलकर लाश को सीधा किया तो देखा कि विशाल अमर के कपड़े पहने बलराज की पत्नी का अपराधी भाई मरा पड़ा था। भय से उसका मुख विकृत हो गया था। लाश के पास विशालकाय कुत्ते के पाव के निशान बने थे।

"शायद ये कपड़े बलराज की पत्नी ने इसको दिये थे। बेचारे ने कपड़ो के कारण ही अपनी जान गवाई। मालूम होता है कि उस हत्यारे ने भूल से अमर के बदले दूसरे आदमी पर वार कर दिया।" चौधरी ने भानू से कहा।

लाश को उसी स्थान पर पड़ी रहने देना बेकार था। इसलिए भानू और चौधरी उसे उठाकर झोपड़ी की ओर चल दिए। अचानक भानू की नजर मि० भाटिया पर पड़ी जो मार्ग के किनारे पर एक झाड़ी के पीछे छुपा हुआ था।

"तुम यहा पर क्या कर रहे हो ?" डॉ० भानू ने भाटिया को पुकारकर पूछा।

भानू की बात को अनसुनी करते हुए भाटिया सड़क पर आया। चौधरी और भानू को लाश उठाये देख उसने चौंककर पूछा, "अरे, क्या यह विशाल अमर हैं ? यह तो मृतक से जान पड़ते हैं।"

"हा, यह शरीर अब केवल निर्जीव लाश है। परन्तु तुम यहा क्या कर रहे थे ?" चौधरी ने कठोर मुद्रा मे पूछा।

"मैं मि० भानू के पीछे उत्सुकतावश यह देखने चला आया था कि ये कहा जाते हैं।" भाटिया ने खिसियाने स्वर मे उत्तर दिया।

"फिर तुम हमसे क्यो पूछ रहे हो कि क्या हुआ ? तुम्हें सब मालूम होना चाहिए।" भानू ने कहा।

भानू और कुछ कहना ही चाहता था कि सामने से मनमोहन घूमता हुआ वहा आ पहुचा। लाश को देखकर वह भी चौंक पड़ा और अफसोस-भरे स्वर मे बोला—

"अरे, विशाल अमर मर गए। आज सबेरे ही तो मैं इनसे मिलकर आया था। चिन्ता होने लगी।"

अचानक कुहरे से ढकी सड़क पर किसी के दौड़ते हुए आने की आवाज

सुनाई दी। हरिहर चौधरी ने ध्यान से देखना आरम्भ किया। यकायक अंधकार के पर्दे में अपनी जान बचाने के लिए भागते हुए विशाल अमर और उनका पीछा करता हुआ एक भयानक कुत्ता दिखाई दिया। कुत्ते का शरीर आकार मे गधे के बराबर था। उसके मुह से आग की डरावनी लपटें निकल रही थीं।

चौधरी ने तुरन्त निशाना बांधकर गोली चलाई पर कुहरा घना होने से आगे कुछ देख न सके।

कुत्ता और विशाल अमर दोनो उनके पास ही थे। किन्तु दिखाई न पडने के कारण वे कुछ भी नहीं कर पा रहे थे। इसी समय पत्थर से पाव अटक जाने के कारण विशाल अमर भूमि पर गिर पडा। कुत्ता अपने शिकार को काबू मे आया देख जोर से हवा मे उछला। कुत्ते के उछलते ही भानू को उसकी पूछ दिखाई दे गई। भानू ने दोनो हाथो से पूछ पकडकर कुत्ते को पीछे खीच लिया।

परन्तु कुत्ते में अमानुषिक बल था। उसने तुरन्त पलटकर भानू पर आक्रमण किया और उसे भूमि पर गिरा दिया। डॉ० मसूर ने भानू की पुकार को सुनकर अधेरे मे ही अपनी छडी घुमाई। छडी का वार कुत्ते के सिर पर पडा और उसने भानू का ध्यान छोडकर डॉ० मसूर का हाथ अपने मुह मे दबा लिया। इतने में भूमि से उठकर भानू ने फिर कुत्ते की टाग पकडकर खीच ली।

इसी समय कुहरा थोडा खिचा और हरिहर चौधरी को कुत्ता अस्पष्ट दिखाई देने लगा। उसने तुरन्त पिस्तौल की सारी गोलियां चलाकर उस भयानक पशु का अन्त कर दिया।

चौधरी ने कुत्ते के मुह की जाच की। उसके अन्दर फास्फोरस का लप किया हुआ था। जब फास्फोरस और हवा का मेल होता तब लपटें निकलने लगती।

इतने मे भानू की दृष्टि एक आदमी पर पडी जो कुत्ते को मरा देख छिपकर झाडियो के पीछे से भाग रहा था। तुरन्त चारो आदमी उसके पीछे भागने लगे। अपराधी भी पकडे जाने के भय से भैरव घाटी के किनारे पहुचकर तेजी से भागने लगा। जहां वह भागा जा रहा था, उसके नीचे ही

दलदल था। अचानक अपराधी का पाव लड़खड़ा गया और वह एक दिल हिला देने वाली चीख मारकर नीचे दलदल मे गिर पड़ा।

हरिहर चौधरी तथा अन्य लोग दौड़कर घाटी के सिरे पर पहुचे। विशाल अमर ने जेब से टॉर्च निकालकर नीचे रोशनी फेंकी। अपराधी का केवल सिर और एक हाथ कीचड से बाहर दिखाई दे रहा था। उसके मुख पर रोशनी पड़ते ही अमर ने आश्चय से कहा—"मनमोहन! और मेरा जूता हाथ में लिये हुए! मि० चौधरी, यह मेरा वही जूता है, जो लखनऊ होटल से गायब हो गया था।"

सब लोग भरे हृदय से अपराधी का अन्त देखते रहे। कुछ क्षणो बाद दलदल ने मनमोहन को समूचा निगल लिया।

चौधरी ने जेब से निकालकर बुझे हुए चुरुट को जलाया और सबके साथ मनमोहन के मकान पर पहुचा।

बाहर के कमरे मे मिस लतिका बंधी पड़ी थी। उसके मुह में कपड़ा भर रहा था। विशाल अमर ने तुरन्त उसे उठाकर खड़ा किया और सारे बन्धन खोल डाले।

सब लोग उसी कमरे मे बैठ गए। हरिहर चौधरी भी अभी तक चुपचाप था। वे मिस लतिका के मुह की ओर अपने प्रश्नो का उत्तर पाने के लिए देखने लगे।

कुछ देर बाद लतिका बोला—

"आप सब लोग जानना चाहोगे कि मेरा भाई मनमोहन अमरवंश के उत्तराधिकारियो को क्यो मार डालना चाहता था? इसका रहस्य यह है कि वास्तव मे मनमोहन भी इसी वंश की एक शाखा मे से है और अन्त में वही सारी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होता। नवीन अमर की मृत्यु की मनगढन्त कहानी उसने ही फैलाई और उसी के पीछे भयानक कुत्ते को खून करने के लिए शिक्षित किया। लेकिन आज दोनो ही समाप्त हो गए।"

"अच्छा डॉ० मसूर, आपकी समस्या हल हो गई। अब भैरव घाटी का रहस्य खुल गया और यह घाटी अब निरापद हो गई है। हा, श्री अमर, आप हमे अपनी शादी की दावत कब दे रहे हैं?"

विशाल अमर, जो बड़े प्रेम से मिस लतिका की आखो मे झाक रहा

था, शरमाकर उठ खड़ा हुआ। चौधरी भानू को साथ लेकर सोने के लिए अमर महल की ओर चल दिया। दूसरे दिन वे लोग वास्तव में लखनऊ वापस लौट रहे थे।

[प्रस्तुत रूपान्तर नाम बदलकर भारतीय कृत कर दिया है। प्रसिद्ध उपन्यास 'बास्करविल के खूंख्वार कुत्ते' की कहानी संक्षिप्त करके ज्यों की-त्यों दी है। पात्रों के नाम अवश्य बदले हैं।]

एलेक्जेंडर ड्यूमा

फ्रांस के एक छोटे-से कस्बे मे १८०२ में ड्यूमा का जन्म हुआ। उसका पिता फौज मे जनरल था और प्रसिद्ध सम्राट् नेपोलियन बोनापार्ट का साथी था। ड्यूमा भी अपने पिता की भांति बड़ा आदमी बना। उसे खाने-पीने, दोस्तों के साथ खर्च करने और लिखने का शौक था।

उसने पेरिस पहुचकर अनेक नाटक लिखे। ये नाटक बड़े सफल हुए। फिर उसे उपन्यास-लेखन का शौक लगा। उपन्यास नाटको से भी ज्यादा लोकप्रिय हुए। वह अपने उपन्यासो मे यथार्थ चरित्रो का चित्रण करता था। थीम और पात्रो की रचना कल्पना से भी कर लेता था।

उसके दिमाग मे जैसे ही कोई कहानी घुमडती थी, वह किराये के लेखक बुलाकर फौरन उन्हें लिखवाना शुरू कर देता। इसीलिए तत्कालीन आलोचकों ने उसे 'उपन्यासी कारखाना' तक कहना शुरू कर दिया। उसने सैकडो पठनीय, रुचिकर आम पाठको मे लोकप्रिय होने वाली पुस्तकें लिख डाली। अधिक खर्चीला होने के कारण गरीबी हालात मे १८७० मे उसका निधन हुआ।

उसकी प्रसिद्ध पुस्तको में 'काउण्ट ऑफ माण्टे क्रिस्टो' भी एक है। इस उपन्यास का सार-सक्षेप हम इस पुस्तक मे 'प्रतिशोध' नाम से दे रहे हैं। इसमे रसायन विज्ञान की बातें रोचक हैं।

-

प्रतिशोध

२८ फरवरी, १८१५ की सुबह एक जहाज एलबा से चलकर फ्रांस के मारसेलिज बन्दरगाह पर रुका। जहाज एक घण्टे लेट था। जब मारेल ने लेट होने का कारण पूछा तो उन्नीस वर्षीय दाते ने कहा—"रास्ते मे जहाज के कप्तान की मृत्यु हो गई। उसने मुझे एक पकेट दिया जिसे एलबा मे देना था। बस, उसकी अन्तिम इच्छा को पूरा करने के लिए ही मुझे जहाज लेट करना पडा।"

"वैरी सैड"—मारेल ने कहा, "लेकिन एलबा तो विद्रोही बोनापाट का द्वीप है। वहा जाने से कही तुम्हें क्रान्तिकारी बोनापार्टिस्ट न समझ लिया गया हो!"

"कुछ भी हो, मुझे वहां जाना ही था। लेकिन वहा मुझे एक पत्र और दिया गया जो नायटियर के नाम है और उसे मुझे पेरिस पहुचाना है।" दाते ने कहा और वह जहाज को छोडकर पत्र देने तथा अपने बूढे पिता से मिलने चला गया।

मारेल जहाज का मालिक था। वह दाते को कप्तान बनाना चाहता था। बीच ही मे डगलर आ टपका जो दाते को रास्ते से हटाकर खुद कप्तान बनना चाहता था। इस समय फ्रास मे विद्रोहियो के दमन की लहर चल रही थी। नेपोलियन बोनापाट के युद्ध मे हार जाने के कारण उसे सम्राट लुई १८ ने देशनिकाला दे दिया। वह निर्वासित द्वीप एलबा भेज दिया गया। फांस मे दो दल बन गए—शाही दल और बोनापाट दल। बोनापार्टिस्ट होना भयकर अपराध था। जो भी शक मे पकडा जाता था उसे चैटीडिफ नामक कालेपानी भेज दिया जाता था।

अपने पिता को देखने के बाद दाते अपनी प्रेमिका मर्सेडिज के घर पहुंचा। फर्नेण्ड नामक युवक मर्सेडिज पर डोरे डाल रहा था। वह स्वय

"नही।" दाते ने कहा।

मजिस्ट्रेट ने कहा—"तुम्हें शाम तक रिहा कर दिया जायेगा। अब तुम जा सकते हो।" दांते को पुलिस वापस ले गई। विलफोट ने लिफाफा खोलकर पढ़ा। वह नेपोलियन का पत्र था और वह पुन पेरिस लौट आने की योजना बना रहा था और नायटियर की मदद चाहता था। विलफोर्ट ने परिस्थिति का फायदा उठाया। इस पत्र को जला दिया और दाते को, जो इस राज को जानता था, १४ वष की कालेपानी की सजा का हुक्म द दिया। उसने सोचा, १४ वर्ष मे दाते सड-सडकर मर जाएगा और मेरा तथा मेरे पिता का जीवन बच जाएगा।

अब दाते चेटीडिफ की काल कोठरी मे कैद था। चेटीडिफ राजनीतिक क्रान्तिकारियों का कालापानी था। विलफोट का जेलर को आदेश था कि यह भयकर बोनापार्टिस्ट है। इसकी पूरी निगरानी रखी जाय। सब कुछ उलटा हो गया। दाते यातना से पीडित था। वह समझ नही पा रहा था कि उसने ऐसा कौन-सा भयकर अपराध किया है जिसके बदले मे उसे कालकोठरी की सजा सुनाई गई है। विलफोट ने उसके साथ ऐसा धोखा क्यो किया? उसे ससार से इतनी घृणा हुई कि उसने भूखा मरकर जान देने की ठान ली। बूढा पिता, मर्सेडिज—इन सबका अब क्या होगा, यही सोचकर वह रात-दिन तडपता रहता। कई वष बीत गए। वह एक दिन खाता—दस दिन भूखा रहता। उसके बाल और दाढ़ी बढ़ गए। वह वहशी जैसा जीवन बिताने लगा। एक रात वह कालकोठरी के पत्थर पर लेटा हुआ मर्सेडिज के बारे में सोच ही रहा था कि उसे दीवार मे किसी की खट-खट सुनाई दी। उसने उठकर जग का हत्था तोड डाला और उसी से दीवार को ठीक उसी जगह से खोदना शुरू कर दिया जहा से खट खट की आवाज आ रही थी। दीवार मे छेद हो गया और दो पत्थर हटाने के बाद एक बूढ़ा कैदी उसके कमरे मे घुस आया।

"धत्तेरे की! मैं तो समझ रहा था कि मैं जेल की बाहरी दीवार में छेद कर रहा हू, लेकिन यहा तो तुम निकले।"

"हा, मैं तो सचमुच आत्महत्या करने जा रहा था। तडप-तडपकर भूखा मर रहा था। लेकिन तुम्हारी खट-खट की आवाज ने मुझे एक नयी

शक्ति और आत्मप्रेरणा दी। कौन हो तुम ?" दाते ने पूछा।

"मैं इटली का एक पादरी हू। मेरा नाम है अबे फेरिया।"

"मैं दाते हू। पता नही मुझे षड्यन्त्र करके यहा क्यो भेजा गया। मैं एकदम बेगुनाह हू।"—दाते ने शुरू से आखिर तक अपनी सारी कहानी सुना दी।

"तुम्हें यहा इसलिए भेजा गया है कि डगलर स्वय जहाज का कप्तान बनना चाहता था। फर्नेण्ड मर्सेडिज से विवाह करना चाहता था। विलफोर्ट का पिता स्वय नायटियर है। समझे ? यही तुम्हारे आजीवन कारावास का कारण है।"—अबे फेरिया ने कहा।

"मैं अब समझा—डगलर, फर्नेण्ड और विलफोर्ट ने ही मिलकर मुझे जिन्दा दफनाया है। मैं इनसे जरूर बदला लूगा।" दाते ने दात पीसकर कहा।

☐

आठ वर्ष बीत गए। अबे और दाते रोजाना मिलते। पादरी दाते को बहुत कुछ पढाता, सिखाता। एक दिन पादरी अबे सख्त बीमार पड गया। दाते ने उसकी खूब सेवा की। लेकिन उसके जीवन का अन्त होने लगा। पादरी ने कहा—"दाते, यहा तुम्हारे सिवा मेरा अब कोई नही है। मैं इस दुनिया से जा रहा हू। माण्टे क्रिस्टो द्वीप मे मेरा गडा हुआ जवाहरात का खजाना है। मैं तुम्हें उसका पता देता हू। तुम यह खजाना, अगर कभी मुक्त हो सको तो, ले लेना। यह सब तुम्हारा ही होगा।"—यह कहकर अबे ने दम तोड दिया।

कई दिन बाद जेलर को पता चला कि अबे फेरिया मर गया। उन्होंने उसे कफन मे लपेटकर समुद्र मे फेंकने की योजना बनाई। जैसे ही जेलर व सिपाही बाहर गए, दाते ने पादरी की लाश को अपनी जगह कम्बल से ढककर रख दिया और वह स्वय काच का एक टुकडा हाथ मे लेकर फेरिया की जगह कफन मे घुस गया। थोडी देर बाद दो सिपाहियो ने दाते को लाश समझकर उठाया और जेल की दीवार पर चढ़कर उसे पत्थर बाधकर समुद्र मे फेंक दिया। दाते डूबने लगा। उसने काच के टुकडे से [illegible] को चीर दिया और तैरता हुआ वह किसी द्वीप के किनारे पर

सहसा उसके मुह से निकला—"हे ईश्वर, तेरा धन्यवाद है। तूने मेरी जान बचा दी।"

जहां दाते समुद्र के किनारे निकला वही तस्करों की नौका ने उसे उठा लिया। दाते ने कहा—"मेरा जहाज डूब गया है। मैं किसी तरह बच गया।"

"लेकिन तुम्हारे बाल और ये दाढी ।" तस्करो के सरदार ने कहा।

"मैं वचनबद्ध था। अब मैं इन्हें जल्दी ही कटा लूगा।" दाते उनकी नौका मे बैठ गया।

तस्करों के सरदार ने कहा, "वह सामने चट्टान देखते हो?"

"हा।"

"यह एक द्वीप है जिसका नाम माण्टे क्रिस्टो है।"

"क्या तुम मुझे वहा छोड सकते हो?"

'क्यो नही।'-तस्करो ने उसे चट्टान के पास उतार दिया। वह उस पादरी के बताये हुए निशानो के अनुसार उसी चट्टान के पास पहुचा जहा से खजाने की गुफा के लिए रास्ता जाता था। गुफा का द्वार चट्टान से बन्द था। दाते ने बारूद को लगाकर धमाका किया और थोडी देर के धुए के बाद नीचे की ओर जाने वाली सीढिया दिखाई दी। काफी देर तक खुदाई करने के बाद दाते को लोहे का एक बक्सा जवाहरातो से खचाखच भरा हुआ मिल गया। अब उसे नई जिन्दगी मिल गई। उसने सोचा, अब मैं पेरिस जाकर अपने आपको माण्टे क्रिस्टो द्वीप का सरदार घोषित करूगा। अपने पिता को आराम दूगा। मर्सेडिज से विवाह करूगा और डगलर, फर्नेण्ड तथा विलफोर्ट को अन्याय का मजा चखाऊगा। उसके मन मे प्रतिशोध की ज्वाला धधक रही थी।

चौदह वर्ष बीत गये। १८ फरवरी, १८२६। इस बीच क्या से क्या हो गया। दाते का पिता चल बसा। फर्नेण्ड ने यह कहकर मर्सेडिज से विवाह कर लिया कि दाते अब जीवित नहीं है। वह कभी का मर चुका। मर्सेडिज के एक पुत्र भी हो गया—इसका नाम था अलबर्ट। फर्नेण्ड सेना का अधिकारी था। विलफोर्ट पेरिस का प्रधान मजिस्ट्रेट था और डगलर एक धनी बैंकर बन चुका था। सभी समृद्ध और सुखी थे।

फर्नेण्ड फास की ससद के बडे सदन 'हॉउस ऑफ [illegible]' का सदस्य भी था। पेरिस मे आने से पूर्व दाते ने, जो पेरिस मे आकर 'काउण्ट ऑफ मांटे क्रिस्टो' बन चुका था, फर्नेण्ड के लडके अलबर्ट की जान बचा दी। वह जैसे ही पेरिस मे आया, अलबट उसे कृतज्ञता ज्ञापन के नाते अपने घर ले आया। अलबर्ट ने अपने पिता फर्नेण्ड से कहा—"इन्ही महाशय ने मेरी जान बचाई है।" फर्नेण्ड ने उसे बहुत धन्यवाद दिया। थोडी ही देर मे अलबट की माता मर्सेडिज आ गयी। वह एक बार तो दाते को देखकर सहम गयी। ऐसा लगा जैसे उसने दाते को पहचान लिया हो। लेकिन वह चुप रही और अपने बेटे के बचाने पर उसे धन्यवाद देते हुए बोली—"मिस्टर, यदि आपको समय हो तो आप कुछ समय पेरिस में हमारे घर अतिथि रहें। आपने हमारे साथ बहुत उपकार किया है।" काउण्ट (दाते) ने कहा—"क्षमा कीजिए, अब तो मेरे पास समय नही है। फिर कभी देखेंगे।"

अगले दिन काउण्ट (दाते) पेरिस के प्रसिद्ध बैंकर डगलर से मिला। डगलर ने कहा—"काउण्ट, मुझे रोम से तुम्हारे बैंकरो ने पत्र लिखा है कि मैं अपने यहा से तुम्हें चाहे जितना धन उधार दे दू।"

"तो इसमें अचरज की क्या बात है ? यह तो आपको देना ही होगा।" काउण्ट ने कहा।

"नहीं, अचरज तो कोई नही। मैं धन दूगा ही। लेकिन पत्र मे 'अन-लिमिटेड यानी चाहे जितना' शब्द जो लिखा है वह जरा मेरी समझ मे नही आता।"—डगलर ने बात बदलते हुए कहा।

'क्या आपका ख्याल है कि मैं आपके जमा धन से भी अधिक धन माग लूगा।"

"नही, मैं समझता हू कि तुम ज्यादा से ज्यादा दस लाख मांगोगे।"

"बस, सिर्फ दस लाख! जनाब, मैं पहले साल मे कम से कम ६० लाख रुपया लूगा। मैं ९-१० लाख के लिए हिसाब नहीं खोलता।" काउण्ट ने कहा।

"साठ लाख!"—डगलर के मुह से निकला और वह माथा पकडकर वहीं बैठ गया। दांते यह कहकर चला आया।

अगले दिन विलफोट की बारी थी। दाते के नौकर ने विलफोट की दूसरी पत्नी तथा उसके पुत्र को किसी स्थान पर बचा दिया और विलफोर्ट धन्यवाद देने के लिए उसी दिन शाम को दाते (काउण्ट) के घर आ गया। बात करते-करते दोनो मे न्याय के ऊपर बहस छिड गयी। दाते ने कहा—"मनुष्य द्वारा किया गया न्याय सही नही है। सच्चा न्याय तो भगवान् ही करता है। भगवान् ने अबकी बार न्याय करने की शक्ति मुझे दे दी है।"

विलफोट कुछ देर बाद चला गया।

पुराने जहाज के मालिक मारेल का लडका मैक्समिलन भी पेरिस मे काउण्ट को मिल गया। वह यहाँ की सेना मे कप्तान था। काउण्ट (दाते) अपने मालिक के अहसान को भूला नही था। इसलिए उसने मैक्समिलन का साथ देना निश्चित किया। मैक्समिलन विलफोट की पहली पत्नी की लडकी वेलेण्टाइन से प्रेम करता था और उसी से शादी करना चाहता था। वेलेण्टाइन की मा के मर जाने के बाद पिता के सिवा घर मे कोई भी उसे प्यार नही करता था।

जब वेलेण्टाइन एकान्त मे अपने प्रेमी मैक्समिलन से मिली तो उसने बताया कि मेरा पिता मेरी शादी तुमसे हरगिज नही करेगा। मेरी सौतेली मा—जो अपने लडके एडोड से बहुत प्यार करती है, मेरे बाप को और बहका देगी। वह मुझसे हमेशा नाखुश रहती है। वह मेरे बाबा और दादी की सम्पत्ति के कारण मुझसे जलती है। वह जानती है कि उस सम्पत्ति पर एकमात्र मेरा ही अधिकार होगा और वह उस सम्पत्ति का वारिस अपने इकलौते बेटे एडोर्ड को बनाना चाहती है। यह सुनकर मैक्समिलन को बडा दुःख हुआ, फिर भी दोनों का प्रेम कम नही हुआ। मैक्समिलन ने कहा—"घबराओ मत वेलेण्टाइन, हम कोई न कोई रास्ता खोज ही लेंगे।"

एक दिन अचानक काउण्ट मैडम विलफोट के पास जा पहुचा। वहां वह अपने बेटे एडोड के साथ बैठी कॉफी पी रही थी। काउण्ट के पहुचते ही उसने एडोड से जाने को कहा और वह काउण्ट से काफी देर तक बातें करती रही—जहर पर बातचीत छिड गई। मैडम ने कहा—"आरसनिक या संखिया बडा खतरनाक जहर है। यह आदमी के शरीर में फौरन

दिखाई देने लगता है।"

"लेकिन बहुत-से ऐसे जहर भी हैं जो मृतक के शरीर मे कोई निशान नहीं छोडते और यह पता लग ही नही सकता कि इसकी मृत्यु जहर से हुई या नही।"—काउण्ट ने मैंडम विलफोर्ट को कई जहरो के बारे मे बताया।

"लेकिन जहर देना तो भयानक अपराध है। आप जानते हैं कि रसायनो मे मेरी बडी दिलचस्पी है।"—मैंडम ने कहा।

"मैंडम, मा का प्यार बडा महान् है। वह अपने बेटे की खातिर कुछ भी कर सकती है। वह सब क्षम्य है। अच्छा, अब मैं चलता हू। चूकि आपकी रसायनशास्त्र मे बडी रुचि है और आप विषो की प्रतिक्रिया पर रिसर्च कर रही हैं, इसलिए मैं आपको कल सुबह कुछ ऐसे जहरो के नमूने भेजूगा जो मृत के शरीर पर कोई भी निशान नही छोडते।"—यह कहकर काउण्ट चल दिया। वह मन ही मन सोच रहा था कि अब मैंने इस घर मे विष-बीज बो दिया है। यह जरूर कोई न कोई कुफल उपजाएगा।

एक दिन काउण्ट ने सवाददाता को घूस देकर अखबार मे स्पेन की एक खबर छपवा दी। डगलर ने अखबार पढा कि स्पेन मे भारी उथल-पुथल मचने वाली है। यह पढ़ते ही उसने अपने सारे शेयर तार देकर फौरन बेच डाले। वह खबर तो गलत ही थी। दूसरे दिन उसी पत्र मे बावस मे उस का प्रतिवाद छपा कि यह खबर एकदम निराधार है। स्पेन मे स्थिति सामान्य है। लेकिन अब क्या हो सकता था! डगलर को १० लाख का घाटा हो गया और वह माथा पकड वही बैठ गया।

अब फर्नेण्ड की बारी थी। फर्नेण्ड ग्रीक सरदार टेबेलिन के नेतृत्व मे तुर्कों से लडा। उसने सेना मे अच्छा नाम पैदा कर लिया। अकस्मात तुर्कों ने एक दिन टेबेलिन को मार दिया। इस खबर को रगवाकर काउण्ट ने अखबार मे छपवा दिया कि 'फर्नेण्ड ने स्वय सेनापति बनने के लिए तुर्कों से २० लाख क्राउन (सिक्का) की घूस लेकर अपने सेनापति को विश्वास-घात करके जानबूझकर मरवाया है।'

इस खबर के छपते ही हाउस ऑफ पीयस ने उसे ... दिया। उधर (मृत) टेबेलिन (ग्रीक) की लडकी ने भी

खूब कोसा—"फर्नेण्ड, तुम्हारी आखो मे मेरे पिता का खून दिखाई दे रहा है। तुम हत्यारे हो। तुम्हें जरूर सजा मिलनी चाहिए।"

फर्नेण्ड भाग निकला और कथित जुर्म से बचने के लिए छिप गया।

फर्नेण्ड के पुत्र एलबट को किसी तरह पता चल गया कि इस खबर के छपवाने मे काउण्ट का हाथ है। वह फौरन काउण्ट से उलझ गया और मरने-मारने को तैयार हो गया। अलबट के देखते हुए काउण्ट शक्तिशाली और धनी व्यक्ति था। उसने उसक आते ही मैकमिलन से कहा—"मैक्समिलन, कल दस बजे से पहले-पहले मैं अलवर्ट को दुनिया से दफा कर दूगा।"

"नही काउण्ट, ऐसा मत करो। वह अपने मा-बाप का प्यारा और इकलौता बेटा है।" मैकमिलन ने उसे समझाया। काउण्ट उसे मारने की यातनाए बना रहा था।

उसी दिन रात को मुह पर नकाब चढाये एक औरत काउण्ट के कमरे मे आ गयी।

'कौन हो तुम ?"—काउण्ट ने पूछा।

'एडमोड दाते, तुम मेरे बेटे को हरगिज नही मारोगे।"—उस नकाबपोश औरत ने कहा।

"क्या कहा ! एडमोड दाते ! तुम यह नाम कैसे जानती हो ?"

मैं मर्सेडिज हू। केवल मैं ही तुम्हें पहचानती हू। काउण्ट ऑफ माटे क्रिस्टो के वेष मे तुम एडमोड दाते हो।'—मर्सेडिज ने कहा, 'तुम मेरे पति फर्नेण्ड की जान ले सकते हो, लेकिन बेटे की नही। बोलो दाते, बोलते क्यों नही ?" मर्सेडिज दाते से लिपटकर रोने लगी।

"मर्सेडिज, तुम नही जानती, तुमसे शादी करने के लिए फर्नेण्ड ने सारा जाल रचा। मुझे डगलर से मिलकर कालकोठरी मे डलवाया और तुम से यह कहकर कि दाते मर चुका है, शादी रचा ली। क्या यह अन्याय नही था ? तुम तो मुझसे प्रेम करती थी न।'—दाते ने कहा।

"मुझे यह सब पता नही था। उसने सचमुच बुरा किया। दाते, मैं तुमसे आज भी प्रेम करती हू। इसीलिए पहले ही दिन मैंने तुमसे कहा था तुम मेरे ही घर मे मेहमान बनकर रहो। लेकिन तुमने मेरी बात ठुकर

दी। अब वचन दो कि तुम मेरे बेटे का खून नहीं करोगे। तुम्हीं तो वह आदमी हो जिसने मेरे बेटे अलबर्ट को एक बार मरने से बचाया था।"— मर्सेडिज रो-रोकर अपने बेटे की जान की बख्शीश मांग रही थी। दांते का दिल पिघल गया और उसने कहा—"जाओ मर्सेडिज, अब मैं तुम्हारे बेटे को नहीं मारूंगा। मैं अपने-आप से बदला लूंगा।" यह कहकर दांते भयंकर अट्टहास करने लगा।

मर्सेडिज ने जाकर सारी कहानी और अपने पति फर्नेण्ड के फरेब की दास्तान अपने बेटे को सुना दी। वह मान गया कि दोषी दांते नहीं, उसका बाप ही है। उसी वक्त वह काउण्ट के पास आकर क्षमा मांगने लगा। दोनों ने एक-दूसरे को जीवन-दान दे दिया और क्षमा-याचना कर ली। फर्नेण्ड यह सुनकर आगबबूला हो गया कि उसके बेटे ने काउण्ट से माफी मांग ली है। वह तलवार लेकर काउण्ट को मारने उसके घर पहुंचा।

"मैं मारने से पहले यह जानना चाहता हूं कि आखिर तुम हो कौन ?" फर्नेण्ड ने काउण्ट से कहा।

"एक मिनट ठहरो"—काउण्ट ने कहा और वह सेलर के कपड़े बदलकर फर्नेण्ड के सामने खड़ा हो गया।

"एडमोंड दांते !" फर्नेण्ड उसे देखकर चीख पड़ा और डर के मारे अपनी बग्घी में बैठकर सीधा घर लौट आया। वह जैसे ही घर पहुंचा, उसकी बीवी मर्सेडिज और पुत्र अलबर्ट घर छोड़कर जा रहे थे। वे विश्वासघाती हत्यारे फर्नेण्ड के साथ नहीं रहना चाहते थे। अलबर्ट ने कहा—"मां, तुम घबराओ मत। मैं सेना में भर्ती होकर तुम्हारा नाम ऊंचा करूंगा और बाप के पापों को धोऊंगा।"

"और मैं मार्सेलिज में जाकर ईश्वर का चिन्तन करूंगी। मेरा शेष जीवन इसी पुण्य-कार्य में बीतेगा"—मर्सेडिज ने कहा और घोड़ागाड़ी चल दी। अब फर्नेण्ड अकेला रह गया। अब जीवन में बचा ही क्या था। जैसे ही घोड़ागाड़ी चली, एक धमाके की आवाज हुई और फर्नेण्ड ने आत्महत्या कर ली। इस तरह एक विश्वासघाती का अन्त हो गया।

□

विसफोर्ट के घर में एक के बाद एक तीन हत्याएं हो गयीं। ९

हत्याएं—विलफोट के मामा की हत्या, एक नौकर की हत्या और फिर विलफोर्ट की मामी की हत्या। डॉक्टर ने तीनों लाशों को देखा। उसकी समझ में यह नयी बीमारी नहीं आयी कि तीन दिन में एक के बाद एक तीन व्यक्ति सहसा कैसे मर गये। विलफोट भी घबरा गया। उसने कहा—"डॉक्टर, भगवान् मुझसे रूठ गया है। सारी विपदा मेरे घर पर आ पड़ी है।"

"यह बीमारी नहीं है, विलफोट। यह हत्या है, सरासर हत्या है। इन तीनों व्यक्तियों को आपके घर में से किसी ने जहर देकर मारा है। आप स्वयं मजिस्ट्रेट हैं, अपराधी का पता लगायें और उसे सजा दें।"—डॉक्टर ने कहा।

"मेरी समझ में नहीं आता, ये हत्याएं किसने की।"

"मुझे लगता है, इनमें वेलेण्टाइन, आपकी बेटी का हाथ है, क्योंकि इन बूढ़ों के मरने के बाद सारी सम्पत्ति की वारिस वही है।'—डॉक्टर ने कहा, "क्या आप अपनी लड़की को अदालत के कटघरे में लायेंगे?"

"ऐसा हरगिज नहीं हो सकता। वेलेण्टाइन ऐसा कभी नहीं कर सकती।"

"ठीक है—लेकिन जब तुम्हारे घर में कोई बीमार पड़े तो मुझे मत बुलाना।" यह कहकर डॉक्टर विलफोट के घर से चला गया।

दूसरे दिन वेलेण्टाइन स्वयं बीमार पड़ गयी। डॉक्टर ने कहा—"मुझे धोखा दिया गया। वेलेण्टाइन निर्दोष है। इन हत्याओं में किसी और का हाथ है, जो स्वयं वेलेण्टाइन को भी मारना चाहता है।"

"लेकिन वह व्यक्ति कौन हो सकता है?' विलफोर्ट सोच में पड़ गया।

इधर मैक्समिलन वेलेण्टाइन की बीमारी की खबर सुनकर सकपका गया। वह सीधा काउण्ट के पास पहुंचा। "काउण्ट, वेलेण्टाइन मरने वाली है उसे बचाओ। तुम नहीं जानते, मैं उसे कितना प्यार करता हूं।"

"मक्समिलन, ये सब एक-एक करके मरेंगे। तुम दुर्भागी हो, तुम अभिशापित परिवार की लड़की से प्यार करते हो। मैं क्या कर सकता हूं?" काउण्ट ने कहा। "तुम जाओ, मैं सोचूंगा।" काउण्ट ने कहा।

मक्समिलन चला गया।

काउण्ट चुपके से बेलेण्टाइन के कमरे मे आकर छिप गया। चार घण्टे की बीमारी के बाद जब वह जागी तो कमरे मे काउण्ठ को देखकर चीख मारने लगी। काउण्ट ने उसे इशारे से चुप किया। उसने कहा—"मैं तुम्हारी जान बचाने आया हू। तुम जानती हो, तुम्हारी सौतेली मां अभी थोडी देर पहले इस दवा के गिलास मे जहर की कुछ बूदें डालकर गयी है।"

"लेकिन मैंने मा का क्या बिगाडा है? वह मुझे क्यो मारना चाहती है? क्या मैं यहा से भाग नही सकती?" बेलेण्टाइन ने एक साथ कई सवाल काउण्ट से पूछे।

"बेटी, तुम बडी भोली हो। वह नायटियर की सम्पत्ति के कारण तुम्हें अपने बेटे के रास्ते से हटाना चाहती है। अगर तुम भाग भी जाओ तो वह आखिर तक तुम्हारा पीछा करेगी।"—काउण्ट ने कहा।

"क्या तुम मुझे बचा सकोगे?"—बेलेण्टाइन ने आखें फाडकर काउण्ट की ओर देखा।

"जरूर। जैसा मैं कहू तुम वैसा ही करना। मैं तुम्हे एक गोली देता हू। इसे खा लो। तुम्हें तीन दिन तक बराबर गहरी नीद आयेगी। ये लोग समझेंगे कि तुम मर चुकी हो और तुम्हें कब्र मे दफना देंगे। तुम्हारी नीद खुलेगी तो तुम ताबूत मे अन्दर होगी। सफेद कफन के अन्दर। तुम जरा भी न डरना और मेरे आने का इन्तजार करना। मैं मक्समिलन को लेकर आऊगा और तुम दोनो को मिला दूगा। समझी?" यह कहकर काउण्ट ने गोली बेलेण्टाइन को खिला दी और वह चुपके से वहां से खिसक गया।

दूसरे दिन सुबह होते ही उसकी मत्यु की घोषणा हो गयी। उसे कब्र मे पहुचा दिया गया। विलफोट को बेटी की मत्यु से बडा सदमा पहुंचा। उसका पिता नायटियर भी आ गया। दोनो रोने लगे। नायटियर से न रहा गया। उसने आखिर कह ही दिया कि "मेरी पोती की हत्यारी उसकी सौतेली मा है। उसे जरूर दण्ड मिलना चाहिए। वह अपने बेटे को सब जायदाद दिलवाने के लिए मुझ तक को मार देना चाहती है।" नायटियर चला गया और विलफोट मैडम के कमरे में पहुचकर चीख उठा—"कहा रखा है तुमने वह जहर? अच्छा हो तुम थोडा-सा अपने लिए भी रख लो, वरना मैं तुम्हें इन हत्याओ की सजा दिलवाकर ही छोडूगा।"

"यह आप क्या कह रहे हैं ? मैंने किसी की हत्या नहीं की।" मैडम विलफोर्ट ने कहा।

"थोड़ी देर ठहरो। तुम्हें अभी सब कुछ पता चल जाएगा।" यह कहकर विलफोर्ट चला गया। उधर डर के मारे मैडम विलफोट ने जहर पी लिया और साथ में अपने बेटे को भी जहर पिला दिया। जब विलफोर्ट लौटकर मैडम के कमरे में आया तो वह और उसके बेटे एडोर्ड की लाश कमरे में पड़ी थी। विलफोट यह देखकर पागल हो गया।

मैक्समिलन को वेलेण्टाइन की मृत्यु का समाचार मिला तो वह अपने कमरे में बैठकर पत्र लिखने लगा और आत्महत्या की तैयारी करने लगा। वह पत्र लिख ही रहा था कि किसी ने पीछे से पुकारा—"ठहरो, तुम नहीं मर सकते।"

"मुझे रोकने वाला है कौन?"—मैक्समिलन ने पीछे मुड़कर देखा तो काउण्ट खड़ा था।

"मैं तुम्हारे बाप का दोस्त एडमोण्ड दाते हूं। मेरा तुम पर उतना ही अधिकार है जितना मारेल का था। बोलो, मेरा कहना नहीं मानोगे?" काउण्ट ने मैक्समिलन को रहस्य बता दिया।

"तुम मुझे मरने से क्यों रोकना चाहते हो ? मेरे जीवन में अब बचा ही क्या है ?"—मैक्समिलन ने कहा।

"तुम्हारे जीवन में जल्दी ही खुशी की लहर आयेगी। तुम मेरे कहने से सिर्फ एक महीने इन्तजार करो।"

"अच्छा, मैं इन्तजार करूंगा।"

फर्नेण्ड मर गया। अनेक हत्याओं के बाद विलफोट अकेला रह गया। दाते एक दिन उसके घर गया—"विलफोट, तुम्हें अपने कर्मों की पूरी सजा मिल गयी।'

"लेकिन तुम कौन हो ? क्या मैंने तुम्हें कोई तकलीफ पहुंचायी है ?"

'मैं एडमोण्ड दाते हूं। आज से १५ वर्ष पहले तुमने ही मुझे काठ-कोठरी में सड़-सड़कर मरने के लिए भेजा था।' —काउण्ट ने कहा।

"एडमोण्ड दाते ! लेकिन अब तो तुम्हारी आत्मा को शान्ति मिल गयी न।"—यह कहकर विलफोर्ट पागलों की तरह हंसने लगा। उसने

अपने बाल और कपड़े नोच डाले। काउण्ट वहां से चल दिया। वह समझ गया कि पत्नी और बच्चों की मौत से वह पागल हो गया है।

अब डगलर की बारी थी। जब काउण्ट डगलर के दफ्तर मे पहुचा तो वह अपनी सम्पन्नता की बढ़-चढ़कर डींगें मारने लगा। काउण्ट ने धीरे से कहा—'मिस्टर डगलर, तुम्हारे बंक में मेरे खाते मे ६० लाख रुपया है न ?"

"हा, है।'

"दस लाख तो मैं ले चुका हू। अब मुझे ५० लाख रु० फौरन चाहिए। मैं इसीलिए आया हू।'

"लेकिन " डगलर ठिठका ठिठका रह गया।

"लेकिन क्या ? तुम मेरा पैसा नहीं देना चाहते ?"

"नही, मैं पैसा जरूर दूगा।"

काउण्ट के रुपया निकलवाने के बाद डगलर पूरी तरह दिवालिया और कर्जदार हो गया और वह अन्य लोगों के कर्ज से बचने के लिए एक रात इटली भाग गया। जब वह इटली भाग रहा था तो काउण्ट ने कुछ बदमाश भेजकर उसे रास्ते में ही उड़वा लिया। उसे कैद मे डाल दिया गया।

"क्या तुम्हें अपनी करनी पर पछतावा नही हो रहा ? '—काउण्ट ने कहा।

"मैं बहुत पछता रहा हू। मुझे माफ कर दो।" यह कहकर बन्दी डगलर काउण्ट के पैरों मे गिरकर रोने लगा।

"जाओ, मैं तुम्हें क्षमा करता हू। तुम जल्दी ही छोड़ दिये जाओगे।"

"क्या मैं जान सकता हू कि तुम कौन हो ?" डगलर ने गिड़गिड़ाते हुए पूछा।

"मैं वही आदमी हू जिसके पिता को तुमने भूखों मार डाला, जिसे तुमने बोनापार्टिस्ट बनाकर कैद में डलवा दिया—मेरा नाम एडमोण्ड दांते है।" काउण्ट ने गरजकर कहा। डगलर कांपकर वहीं भूमि पर लेट गया।

'लेकिन मैं तुम्हारी जान नहीं लूगा। सभी को अपने-अपने किये की सजा मिल गयी।" यह कहकर दांते वहा से चला गया।

एडमोण्ड ने सोचा, "अब मैं बहुत तमाशा कर चुका हू। मैंने जो कुछ

किया है, उसको चुकाने का एक ही रास्ता है कि मैं अब वेलेण्टाइन और मैक्समिलन को मिला दूं। तभी मेरे मन को पूरी शान्ति मिलेगी। उसने कब्र से वेलेण्टाइन को निकाल लिया। जैसे ही वह पूरी तरह जागी और स्वस्थ हुई, उसने मैक्समिलन को बुलवा भेजा।

उसने दोनों का विवाह करवा दिया और स्वयं वापस अपने द्वीप माण्टे क्रिस्टो की ओर चल दिया। जब वह अपने जहाज को लेकर चला तो जाते-जाते मैक्समिलन को एक पत्र दे गया। मैक्समिलन और वेलेण्टाइन समुद्र के किनारे दांते के जहाज को लहरों के बीच ओझल होते देख रहे थे। वे मन ही मन आज प्रसन्न थे। सचमुच भगवान के वेश में दांते ने उन्हें मिला दिया। दोनों का जीवन बचा लिया। मैक्समिलन ने पत्र पढ़ा—

"मेरे बच्चो, तुम अब लौट जाना। तुम समझना कि तुम्हें भगवान ही मिला था। भगवान की शक्ति ही मुझमें काम कर रही थी जिसके कारण मैंने यह सब किया। पेरिस में महाशय नामटियर, जो अब मरणासन्न हैं, तुम्हारा इन्तजार कर रहे होंगे। तुम लौटकर उनका आशीष लेना और सुख से जीवन बिताना। मेरे दो शब्द हमेशा याद रखना—जीवन का दर्शन है—'इन्तजार करो और उम्मीद रखो'—तुम्हारा—एडमोण्ड दांते—काउण्ट ऑफ माण्टे क्रिस्टो।'

मुद्रक
मधु प्रिंटिंग सर्विस क०
भोलानाथ नगर, दिल्ली ११००३२